٣٥- بَابُ مَنْ لَمْ يَرَ الْوُضُوءَ إِلاَّ مِنَ الْمَخْرَجَيْنِ الْقُبُلِ وَالدُّبُرِ

لِقَوْلِهِ تَعَالَى: ﴿أَوْ جَاءَ أَحَدٌ مِنْكُمْ مِنَ الْغَائِطِ﴾ وَقَالَ عَطَاءٌ فِيمَنْ يَخْرُجُ مِنْ دُبُرِهِ الدُّودُ أَوْ مِنْ ذَكَرِهِ نَحْوُ الْقَمْلَةِ: يُعِيدُ

बाब 35 : इस बारे में कि कुछ लोगों के नज़दीक सिर्फ़ पेशाब और पाख़ाने की राह से कुछ निकलने से वुज़ू टूटता है

क्योंकि अल्लाह तआला ने फ़र्माया है कि जब तुममें से कोई क़ज़ा-ए-हाज़त से फ़ारिग़ होकर आए तो तुम पानी न पाओ तो तयम्मुम कर लो। अ़ता कहते हैं कि जिस शख़्स के पिछले हिस्से

الْوُضُوءَ. وَقَالَ جَابِرُ بْنُ عَبْدِ اللهِ: إِذَا ضَحِكَ فِي الصَّلاَةِ أَعَادَ الصَّلاَةَ وَلَمْ يُعِدِ الْوُضوءَ. وَقَالَ الْحَسَنُ: إِنْ أَخَذَ مِنْ شَعَرِهِ أَوْ أَظْفَارِهِ أَوْ خَلَعَ خُفَّيهِ فَلاَ وُضُوءَ عَلَيْهِ. وَقَالَ أَبُوهُرَيْرَةَ : لاَ وُضُوءَ إِلاَّ مِنْ حَدَثٍ. وَيُذْكَرُ عَنْ جَابِرٍ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ فِي غَزْوَةِ ذَاتِ الرِّقَاعِ فَرُمِيَ رَجُلٌ بِسَهْمٍ فَنَزَفَهُ الدَّمُ فَرَكَعَ وَسَجَدَ وَمَضَى فِي صَلاَتِهِ. وَقَالَ الْحَسَنُ: مَا زَالَ الْمُسْلِمُونَ يُصَلُّونَ فِي جِرَاحَاتِهِمْ. وَقَالَ طَاوُسٌ وَمُحَمَّدُ بْنُ عَلِيٍّ وَعَطَاءٌ وَأَهْلُ الْحِجَازِ : لَيْسَ فِي الدَّمِ وُضُوءٌ. وَعَصَرَ ابْنُ عُمَرَ بَثْرَةً فَخَرَجَ مِنْهَا الدَّمُ وَلَمْ يَتَوَضَّأْ. وَبَزَقَ ابْنُ أَبِي أَوْفَى دَمًا فَمَضَى فِي صَلاَتِهِ. وَقَالَ ابْنُ عُمَرَ وَالْحَسَنُ فِيمَنْ يَحْتَجِمُ : لَيْسَ عَلَيْهِ إِلاَّ غَسْلُ

से (यानी दुबुर से) या अगले हिस्से से (यानी ज़कर या फ़रज से) कोई कीड़ा या जूँ की क़िस्म का कोई जानवर निकले उसे चाहिये कि वुज़ू लौटाए और जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह कहते हैं कि जब (आदमी) नमाज़ में हंस पड़े तो नमाज़ लौटाए और वुज़ू न लौटाए और हसन (बस़री) ने कहा कि जिस शख़्स ने (वुज़ू के बाद) अपने बाल उतरवाए या नाख़ून कटवाए या मोज़े उतार डाले उस पर वुज़ू नहीं है। ह़ज़रते अबू हुरैरह (रज़ि.) कहते हैं कि वुज़ू ह़दष़ के सिवा किसी और चीज़ से फ़र्ज़ नहीं है और ह़ज़रत जाबिर से नक़ल किया गया है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ज़ातुर्रिक़ाअ की लड़ाई में (तशरीफ़ फ़र्मा) थे। एक शख़्स के तीर मारा गया और उस (के जिस्म) से बहुत ख़ून बहा मगर फिर भी उसने रुकूअ और सज्दा किया और नमाज़ पूरी कर ली और ह़सन बस़री ने कहा कि मुसलमान हमेशा अपने ज़ख़्मों के बावजूद नमाज़ पढ़ा करते थे और त़ाऊस, मुहम्मद बिन अ़ली और अहले हिजाज़ के नज़दीक ख़ून (निकलने) से वुज़ू (वाजिब) नहीं होता। अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने (अपनी) एक फुंसी को दबा दिया तो उसमें से ख़ून निकला। मगर आपने (दोबारा) वुज़ू नहीं किया और इब्ने अबी औफ़ा ने ख़ून थूका। मगर वो अपनी नमाज़ पढ़ते रहे और इब्ने उ़मर और ह़सन (रज़ि.) पछने लगवाने वाले के बारे में ये कहते हैं कि जिस जगह पछने लगे हों उसको धो ले, दोबारा वुज़ू करने की ज़रूरत नहीं।

बाब 39 : इस बारे में कि पूरे सर का मसह करना ज़रूरी है क्योंकि अल्लाह तआला का इर्शाद है कि अपने सरों का मसह करो

٣٩- بَابُ مَسْحِ الرَّأْسِ كُلِّهِ، لِقَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿وَامْسَحُوا بِرُؤُوسِكُمْ﴾

और इब्ने मुसय्यब ने कहा है कि सर का मसह करने में औरत मर्द की तरह है। वो (भी) अपने सर का मसह करे। इमाम मालिक (रह.) से पूछा गया कि क्या कुछ हिस्सा सर का मसह करना काफ़ी है? तो उन्होंने दलील में अब्दुल्लाह बिन ज़ैद की (ये) हदीष पेश की, या'नी पूरे सर का मसह करना चाहिये

وَقَالَ ابْنُ الْمُسَيَّبِ: الْمَرْأَةُ بِمَنْزِلَةِ الرَّجُلِ تَمْسَحُ عَلَى رَأْسِهَا. وَسُئِلَ مَالِكٌ: أَيُجْزِىءُ أَنْ يَمْسَحَ بَعْضَ الرَّأْسِ؟ فَاحْتَجَّ بِحَدِيْثِ عَبْدِ اللهِ بْنِ زَيْدٍ.

(185) हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको इमाम मालिक ने अम्र बिन यह्या अल माज़िनी से ख़बर दी, वो अपने बाप से नक़ल करते हैं कि एक आदमी ने अब्दुल्लाह बिन ज़ैद (रज़ि.) जो अम्र बिन यह्या के दादा हैं, से पूछा कि क्या आप मुझे दिखा सकते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने किस तरह वुज़ू किया है? अब्दुल्लाह बिन ज़ैद (रज़ि.) ने कहा कि हाँ! फिर उन्होंने पानी का बर्तन मंगवाया पहले पानी अपने हाथों पर डाला और दो बार धोए। फिर तीन बार कुल्ली की, तीन बार नाक साफ़ की, फिर तीन बार अपना चेहरा धोया। फिर कुहनियों तक अपने दोनों हाथ दो–दो बार धोये। फिर अपने दोनों हाथों से अपने सर का मसह किया। इस तौर पर अपने हाथ (पहले) आगे लाए फिर पीछे ले गए। (मसह) सर के इब्तिदाई हिस्से से शुरू किया। फिर दोनों हाथ गुद्दी तक ले जाकर वहीं वापस लाए जहाँ से (मसह) शुरू किया था, फिर अपने पैर धोए।

(दीगर मक़ाम : 186, 191, 196, 197, 199)

١٨٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ: أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ عَمْرِو بْنِ يَحْيَى الْمَازِنِيِّ عَنْ أَبِيهِ أَنَّ رَجُلاً قَالَ لِعَبْدِ اللهِ بْنِ زَيْدٍ - وَهُوَ جَدُّ عَمْرِو بْنِ يَحْيَى - أَتَسْتَطِيعُ أَنْ تُرِيَنِي كَيْفَ كَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ يَتَوَضَّأُ؟ فَقَالَ عَبْدُ اللهِ بْنُ زَيْدٍ: نَعَمْ. فَدَعَا بِمَاءٍ فَأَفْرَغَ عَلَى يَدَيْهِ فَغَسَلَ مَرَّتَيْنِ، ثُمَّ مَضْمَضَ وَاسْتَنْثَرَ ثَلاَثًا، ثُمَّ غَسَلَ وَجْهَهُ ثَلاَثًا ثُمَّ غَسَلَ يَدَيْهِ مَرَّتَيْنِ مَرَّتَيْنِ إِلَى الْمِرْفَقَيْنِ، ثُمَّ مَسَحَ رَأْسَهُ بِيَدَيْهِ فَأَقْبَلَ بِهِمَا وَأَدْبَرَ: بَدَأَ بِمُقَدَّمِ رَأْسِهِ حَتَّى ذَهَبَ بِهِمَا إِلَى قَفَاهُ، ثُمَّ رَدَّهُمَا إِلَى الْمَكَانِ الَّذِي بَدَأَ مِنْهُ، ثُمَّ غَسَلَ رِجْلَيْهِ.

[أطرافه في: ١٨٦، ١٩١، ١٩٢، ١٩٧، ١٩٩].

तश्रीह : इमाम बुख़ारी (रह) और इमाम मालिक (रह) का मसलक ये है कि पूरे सर का मसह करना ज़रूरी है क्योंकि अल्लाह पाक ने अपने इर्शाद **वम्सहू बिरुऊसिकुम** (अल माइदा : 6) में कोई हद मुक़र्रर नहीं की कि आधे या चौथाई सर का मसह करो। जैसे हाथों में कोहनियों तक और पैरों में टख़नों तक की क़ैद मौजूद है तो मा'लूम हुआ कि सारे सर का मसह फ़र्ज़ है जब सर पर अमामा न हो और अगर अमामा हो तो पेशानी से सर का मसह शुरू करके अमामा पर हाथ फेर लेना काफ़ी है। अमामा उतारना ज़रूरी नहीं । हदीष की रू से यही मसलक सहीह है।

बाब 40 : इस बारे में कि टख़नों तक पांव धोना ज़रूरी है

٤٠- بَابُ غَسْلِ الرِّجْلَيْنِ إِلَى الْكَعْبَيْنِ

(186) हमसे मूसा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे वहब

١٨٦- حَدَّثَنَا مُوسَى قَالَ: حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ

रखी गई और हालते इक़ामत की नमाज़ों में ज़्यादती कर दी गई।

(दीगर मक़ाम : 1090, 3935)

فَأُقِرَّتْ صَلاَةُ السَّفَرِ، وَزِيْدَ فِي صَلاَةِ الْحَضَرِ.

[طرفاه في : ١٠٩٠، ٣٩٣٥].

बाब 2 : इस बयान में कि कपड़े पहनकर नमाज़ पढ़ना वाजिब है

٢- بَابُ وُجُوْبِ الصَّلاَةِ فِي الثِّيَابِ، وَقَولِ اللهِ عَزَّوَجَلَّ:

(सूरह अअ़राफ़ में) अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल का हुक्म है कि तुम कपड़े पहना करो हर नमाज़ के समय और जो एक ही कपड़ा बदन पर लपेटकर नमाज़ पढ़े (उसने भी फ़र्ज़ अदा कर लिया) और सलमा बिन अक्वा से मन्क़ूल है कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि (अगर एक ही कपड़े में नमाज़ पढ़े तो) अपने कपड़े को टाँक ले अगरचे कांटे ही से टाँकना पड़े, इसकी सनद में गुफ़्तगू है और वो शख़्स जो उसी कपड़े में नमाज़ पढ़ता है जिसे पहनकर वो जिमाअ़ करता है (तो नमाज़ दुरुस्त है) जब तक वो उसमें कोई गंदगी न देखे और नबी करीम (ﷺ) ने हुक्म दिया था कि कोई नंगा बैतुल्लाह का तवाफ़ न करे।

﴿ خُذُوا زِيْنَتَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ ﴾ وَمَنْ صَلَّى مُلْتَحِفًا فِي ثَوبٍ وَاحِدٍ وَيُذْكَرُ عَنْ سَلَمَةَ بْنِ الأَكْوَعِ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: ((تَزُرُّهُ وَلَوْ بِشَوْكَةٍ)) . فِي إِسْنَادِهِ نَظَرٌ. وَمَنْ صَلَّى فِي الثَّوْبِ الَّذِي يُجَامِعُ فِيْهِ مَا لَمْ يَرَ فِيْهِ أَذًى، وَأَمَرَ النَّبِيُّ ﷺ أَنْ لاَ يَطُوفَ بِالْبَيْتِ عُرْيَانٌ.

तश्रीह : आयते शरीफा **'ख़ुज़ू ज़ीनतकुम'** अलअख़ में मस्जिद से मुराद नमाज़ है। बकौल ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास एक औरत खान–ए–का'बा का तवाफ नंगी होकर कर रही थी कि ये आयते शरीफा नाजिल हुईं मुश्रिकीने–मक्का भी उमूमन तवाफे का'बा नंगे होकर किया करते थे। इस्लाम ने इस हरकत से सख्ती के साथ रोका और नमाज़ के लिये मस्जिद में आते वक़्त कपड़े पहनने का हुक्म फर्माया **'ख़ुज़ू ज़ीनतकुम'** में ज़ीनत से सतरपोशी ही मुराद है जैसा कि मशहूर मुफ़स्सिरे क़ुर्आन ह़ज़रत मुजाहिद ने इस बारे में उम्मत का इजमाअ़ व इत्तिफाक़ नक़ल किया है। लफ़्ज़े ज़ीनत में बड़ी वुसअत है जिसका मफ्हूम (भावार्थ) ये कि मस्जिद अल्लाह का दरबार है, इसमें हर मुम्किन व जाइज़ जैबो–ज़ीनत के साथ इस निय्यत से दाख़िल होना कि मैं अल्लाह अहकमुल हाकिमीन बादशाहों के बादशाह रब्बुल आलमीन के दरबार में दाख़िल हो रहा हूं, ऐन आदाब दरबारे खुदावन्दी में दाख़िल है। ये बात अलग है कि अगर सिर्फ़ एक ही कपड़े में नमाज़ अदा कर ली जाए बशर्ते उससे सतरपोशी कामिल तौर पर ह़ासिल हो तो ये भी जाइज़ व दुरुस्त है।

ऐसे एक कपड़े को पहन लेने का मतलब ये है कि उसके दोनों किनारे मिलाकर उसे अटकाए। अगर घुण्डी या तुमका (बटन, हुक वग़ैरह) न हो तो काँटे या पिन से अटका ले ताकि कपड़ा सामने से खुलने न पाए और शर्मगाह छुपी रहे। सलमा बिन अक्वा की रिवायत अबू दाऊद और इब्ने खुज़ैमा और इब्ने हिब्बान में हैं उसको सनद में इज़तिराब है। इसीलिये ह़ज़रत इमाम उसे अपनी सह़ीह़ में नहीं लाए **'व मन सल्ला फ़िष्षौबिल्लज़ी'** एक तवील ह़दीष़ में वारिद है जिसे अबू दाऊद और निसाई ने निकाला है कि आँह़ज़रत (ﷺ) जिस कपड़े को पहनकर सोहबत करते अगर उसमें कुछ पलीदी न पाते तो उसी में नमाज़ पढ़ लेते थे और ह़दीष़ **'अल्ला यत्तव्वफ़ फिल बैति उर्यान'** को इमाम अहमद ने रिवायत किया है। इससे मक़सद ये ष़ाबित करना कि जब नंगे होकर तवाफ करना मना हुआ तो नमाज़ ब-तरीक़े औला के मुताबिक़ मना है।

(351) हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे यज़ीद बिन इब्राहीम ने बयान किया, वो मुहम्मद से, वो उम्मे अ़तिया से, उन्होंने फ़र्माया कि हमें हुक्म हुआ कि हम ईदैन के दिन हाइज़ा और पर्दानशीन अ़ौरतों को भी बाहर ले जाएँ ताकि वो

٣٥١- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيْلَ قَالَ: حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ إِبْرَاهِيْمَ عَنْ مُحَمَّدٍ عَنْ أُمِّ عَطِيَّةَ قَالَتْ: أُمِرْنَا أَنْ نُخْرِجَ الْحُيَّضَ يَوْمَ

(351) हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे यज़ीद बिन इब्राहीम ने बयान किया, वो मुहम्मद से, वो उम्मे अ़तिया से, उन्होंने फ़र्माया कि हमें हुक्म हुआ कि हम ईदैन के दिन हाइज़ा और पर्दानशीन औरतों को भी बाहर ले जाएँ ताकि वो

٣٥١- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنِ إِسْمَاعِيلَ قَالَ: حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ عَنْ مُحَمَّدٍ عَنْ أُمِّ عَطِيَّةَ قَالَتْ: أُمِرْنَا أَنْ نُخْرِجَ الْحُيَّضَ يَوْمَ

मुसलमानों के इज्तिमाअ़ और उनकी दुआओं में शरीक हो सकें अल्बत्ता हाइज़ा औरतों को नमाज़ पढ़ने की वजह से दूर रखें। एक औरत ने कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! हममें कुछ औरतें ऐसी भी होती हैं जिनके पास (पर्दा करने के लिये) चादर नहीं होती। आपने फ़र्माया कि उसकी साथी औरत अपनी चादर का एक हिस्सा उसे ओढ़ा दे और अ़ब्दुल्लाह बिन रजाअ ने कहा हमसे इमरान क़त्तान ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन सीरीन ने, कहा हमसे उम्मे अ़तिया ने, मैंने आँहज़रम (ﷺ) से सुना और यही हदीष़ बयान की। (राजेअ़ : 324)

الْعِيدَيْنِ وَذَوَاتِ الْخُدُورِ، فَيَشْهَدْنَ جَمَاعَةَ الْمُسْلِمِينَ وَدَعْوَتَهُمْ، وَتَعْتَزِلُ الْحُيَّضُ عَنْ مُصَلاَّهُنَّ. قَالَتِ امْرَأَةٌ : يَا رَسُولَ اللهِ إِحْدَانَا لَيْسَ لَهَا جِلْبَابٌ. قَالَ: ((لِتُلْبِسْهَا صَاحِبَتُهَا مِنْ جِلْبَابِهَا)).
وَقَالَ عَبْدُ اللهِ بْنُ رَجَاءٍ حَدَّثَنَا عِمْرَانُ قَالَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سِيرِينَ قَالَ حَدَّثَتْنَا أُمُّ عَطِيَّةَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ بِهَذَا.

[راجع: ٣٢٤]

तश्रीह : हदीष़ के बाब का तर्जुमा अल्फ़ाज़ **लि तुलबिसहा साहिबतहा मिन जल्बाबिहा** (जिस औरत के पास कपड़ा न हो उसके साथ वाली औरत को चाहिए कि अपनी चादर ही का कोई हिस्सा उसे भी ओढ़ा दे) से निकलता है। मक़सद ये कि मस्जिद में जाते वक़्त, ईदगाह में हाज़री के वक़्त, नमाज़ पढ़ते वक़्त इतना कपड़ा ज़रूर होना चाहिए जिससे मर्द व औरत अपनी—अपनी हैषियत में सतरपोशी कर सके। इस हदीष़ से भी औरतों का ईदगाह जाना षाबित हुआ।

इमाम बुख़ारी (रह.) ने सनद में अ़ब्दुल्लाह बिन रजा को लाकर उस शख़्स का रद्द किया जिसने कहा कि मुहम्मद बिन सीरीन ने ये हदीष़ उम्मे अतिय्या से नहीं सुनी बल्कि अपनी बहन हफ्सा से, उन्होंने उम्मे अतिय्या से, उसे तबरानी ने मुअजम कबीर में वस्ल किया है।

[راجع: ٢٨٠]

तश्रीह : हज़रत अली (रज़ि.) उम्मे हानी के सगे भाई थे। एक बाप, एक माँ। उनको माँ का बेटा इसलिये कहा कि मादरी भाई-बहन एक-दूसरे पर बहुत मेहरबान होते हैं। गोया उम्मे हानी ये जाहिर कर रही है कि हज़रत अली (रज़ि.) मेरे सगे भाई होने के बावजूद मुझ पर मेहरबानी नहीं करते। हुबैरा का बेटा जअ़दा नाम था जो अभी बहुत छोटा था। उसे हज़रत अली (रज़ि.) मारने का इरादा क्यों करते? इब्ने हिशाम ने कहा उम्मे हानी ने हारिष बिन हिशाम और जुहैर बिन अबी उमय्या या अ़ब्दुल्लाह बिन रबीआ को पनाह दी थी। ये लोग हुबैरा के चचाजाद भाई थे। शायद फलां बिन हुबैरा में रावी की भूल से उम्म का लफ़्ज़ छूट गया है यानी दरअसल फलां बिन उम्मे हुबैरा है।

हुबैरा बिन अबी वहब बिन अम्र मखजूमी उम्मे हानी बिन्ते अबी तालिब के खाविन्द थे, जिनकी औलाद में एक बच्चे का नाम हानी भी है जिनकी कुन्नियत से उस खातून को उम्मे हानी से पुकारा गया। हुबैरा हालते शिर्क ही में मर गए उनका बच्चा जअ़दा नामी था जो उम्मे हानी ही के बतन से है जिनका ऊपर ज़िक्र हुआ, फ़तहे मक्का के दिन उम्मे हानी ने इन्हीं को पनाह दी थी। इनके लिये आँहज़रत (ﷺ) ने इनकी पनाह को कुबूल फ़र्माया। आप उस वक़्त चाश्त की नमाज़ पढ़ रहे थे। बाज़ के नज़दीक ये फ़तहे मक्का पर शुक्रिया की नमाज़ थी।

(358) हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमें इमाम मालिक ने इब्ने शिहाब के वास्ते से ख़बर दी, वो सईद बिन मुसय्यिब से नक़ल करते हैं, वो हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से कि एक पूछने वाले ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से एक कपड़े में नमाज़ पढ़ने के बारे में पूछा तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया (कुछ बुरा नहीं) भला क्या तुम सबमें हर शख़्स के पास दो कपड़े हैं?

(दीगर मक़ाम : 365)

٣٥٨- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ: أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ سَعِيْدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ سَائِلاً سَأَلَ رَسُولَ اللهِ ﷺ عَنِ الصَّلاَةِ فِي ثَوْبٍ وَاحِدٍ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((أَوَ لِكُلِّكُمْ ثَوْبَانِ؟)). [طرفه في : ٣٦٥].

एक ही कपड़ा जिससे सतरपोशी हो सके उसमें नमाज़ जायज दुरूस्त है। जुम्हूरे उम्मत का यही फत्वा है।

जब 5 : एक कपड़े में नमाज़ पढ़े तो उसको मूँढों पर डाले

٥- بَابُ إِذَا صَلَّى فِي الثَّوبِ الْوَاحِدِ فَلْيَجْعَلْ عَلَى عَاتِقَيْهِ

(359) हमसे अबू आ़सिम ज़िहाक बिन मुख़लद ने इमाम मालिक (रह.) के हवाले से बयान किया, उन्होंने अबुज़्ज़िनाद से, उन्होंने अ़ब्दुर्रहमान अअ़रज से, उन्होंने हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि किसी शख़्स को भी एक कपड़े में नमाज़ इस तरह न पढ़नी चाहिए कि उसके कँधों पर कुछ न हो। (दीगर मक़ाम : 360)

٣٥٩- حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ عَنْ مَالِكٍ عَنْ أَبِي الزِّنَادِ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: ((لاَ يُصَلِّي أَحَدُكُمْ فِي الثَّوْبِ الْوَاحِدِ لَيْسَ عَلَى عَاتِقَيْهِ شَيْءٌ)). [طرفه في : ٣٦٠].

(360) हमसे अबू नुऐम फ़ज़ल बिन दुकैन ने बयान किया, कहा हमसे शैबान बिन अ़ब्दुर्रहमान ने यह्या बिन अबी कषीर के वास्ते से, उन्होंने इकरमा से यह्या ने कहा मैंने इकरमा से सुना या मैंने उनसे पूछा था। तो इकरमा ने कहा कि मैंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना,

٣٦٠- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ قَالَ : حَدَّثَنَا شَيْبَانُ عَنْ يَحْيَى بْنِ أَبِي كَثِيْرٍ عَنْ عِكْرِمَةَ قَالَ: سَمِعْتُهُ - أَوْ كُنْتُ سَأَلْتُهُ - قَالَ:

वो फ़र्माते थे। मैं इसकी गवाही देता हूँ कि रसूलुल्लाह (ﷺ) को मैंने ये इर्शाद फ़र्माते हुए सुना है कि जो शख़्स एक कपड़े में नमाज़ पढ़ता है उसे कपड़े के दोनों किनारों को मुख़ालिफ़ सिम्त के काँधों पर डाल लेना चाहिए।

(राजेअ़ : 359)

سَمِعْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ يَقُولُ: أَشْهَدُ أَنِّي سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((مَنْ صَلَّى فِي ثَوْبٍ وَاحِدٍ فَلْيُخَالِفْ بَيْنَ طَرَفَيْهِ)).

[راجع: ٣٥٩]

इल्तिहाफ और तौशीह और इश्तिमाल सबका एक ही मतलब है यानी कपड़े का वो किनारा जो दाएँ काँधे पर हो उसको बाएँ हाथ की बगल से और जो बाएँ काँधे पर डाला हो उसको दाहिने हाथ की बगल के नीचे से निकालकर दोनों किनारों को मिलाकर सीने पर बाँध लेना। यहां भी मुखालिफ सिम्त (विपरीत दिशाओं से) से यही मुराद है।

बाब 6 : जब कपड़ा तंग हो तो क्या क्या जाए?

٦- بَابُ إِذَا كَانَ الثَّوْبُ ضَيِّقًا

(361) हमसे यह्या बिन स़ालेह़ ने बयान किया, कहा हमसे फ़ुलैह़ बिन सुलैमान ने, वो सईद बिन ह़ारिष़ से, कहा हमने जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह से एक कपड़े में नमाज़ पढ़ने के बारे में पूछा तो आपने फ़र्माया कि मैं नबी करीम (ﷺ) के साथ एक सफ़र (ग़ज़्व–ए–बवात़) में गया। एक रात में किसी ज़रूरत की वजह से आपके पास आया। मैंने देखा कि आप (ﷺ) नमाज़ में मशग़ूल हैं, उस समय मेरे बदन पर सिर्फ़ एक ही कपड़ा था। इसलिये मैंने उसे लपेट लिया और आपके बाज़ू में खड़े होकर मैं भी नमाज़ में शामिल हो गया। जब आप (ﷺ) नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो पूछा कि जाबिर इस रात के समय कैसे आए? मैंने आप (ﷺ) से अपनी ज़रूरत के बारे में बताया। मैं जब फ़ारिग़ हो गया तो आप (ﷺ) ने पूछा ये तुमने क्या लपेट रखा था जिसे मैंने देखा। मैंने कहा कि (एक ही) कपड़ा था (इस तरह न लपेटता तो क्या करता) आपने फ़र्माया कि अगर वो कुशादा हो तो अच्छी तरह लपेट लिया कर और अगर तंग हो तो उसको तहबंद के त़ौर पर बाँध लिया कर।

(राजेअ़ : 361)

٣٦١- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ صَالِحٍ قَالَ: حَدَّثَنَا فُلَيْحُ بْنُ سُلَيْمَانَ عَنْ سَعِيْدِ بْنِ الْحَارِثِ قَالَ: سَأَلْنَا جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ عَنِ الصَّلاَةِ فِي الثَّوْبِ الْوَاحِدِ فَقَالَ: خَرَجْتُ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ فِي بَعْضِ أَسْفَارِهِ، فَجِئْتُ لَيْلَةً لِبَعْضِ أَمْرِي، فَوَجَدْتُهُ يُصَلِّي، وَعَلَيَّ ثَوْبٌ وَاحِدٌ فَاشْتَمَلْتُ بِهِ وَصَلَّيْتُ إِلَى جَانِبِهِ. فَلَمَّا انْصَرَفَ قَالَ: ((مَا السُّرَى يَا جَابِرُ؟)) فَأَخْبَرْتُهُ بِحَاجَتِي. فَلَمَّا فَرَغْتُ قَالَ: ((مَا هَذَا الاِشْتِمَالُ الَّذِي رَأَيْتُ؟)) قُلْتُ: كَانَ ثَوْبًا قَالَ: ((فَإِنْ كَانَ وَاسِعًا فَالْتَحِفْ بِهِ، وَإِنْ كَانَ ضَيِّقًا فَاتَّزِرْ بِهِ)).

[راجع: ٣٦١]

तश्रीह : आँह़ज़रत (ﷺ) जाबिर पर इस वजह से इन्कार फ़र्माया कि उन्होंने कपड़े को सारे बदन पर इस तरह से लपेट रखा होगा कि हाथ वग़ैरह सब अन्दर बन्द हो गए होंगे इसी को आप (ﷺ) ने मना फ़र्माया। इसी को इश्तिमाले स़माअ कहते हैं, मुस्लिम की रिवायत से मा'लूम होता है कि वो कपड़ा तंग था और जाबिर ने उसके दोनों किनारों में मुखालिफत की थी और नमाज़ में झुके हुए थे ताकि सतर न खुले। आँह़ज़रत (ﷺ) ने उनको बतलाया कि ये सूरत जब है जब कपड़ा फराख (कुशादा) हो, अगर तंग हो तो स़िर्फ़ तहबन्द कर लेना चाहिए।

(362) हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन सईद क़त़्त़ान ने, उन्होंने सुफ़यान स़ौरी से, उन्होंने कहा मुझसे अबू

٣٦٢- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ : حَدَّثَنَا يَحْيَى

पर पानी डाला। आप (ﷺ) नमाज़ के वुज़ू की तरह वुज़ू किया और अपने ख़ुफ़्फ़ैन (मौजों) पर मसह किया, फिर नमाज़ पढ़ी। (राजेअ़ : 182)

فَصَبَبْتُ عَلَيْهِ فَتَوَضَّأَ وُضُوءَهُ لِلصَّلاَةِ، وَمَسَحَ عَلَى خُفَّيْهِ، ثُمَّ صَلَّى.
[راجع: ١٨٢]

बाब 8 : (बेज़रूरत) नंगा होने की कराहियत नमाज़ में हो (या किसी और हाल में)

٨- بَابُ كِرَاهِيَةِ التَّعَرِّي فِي الصَّلاَةِ

(364) हमसे मत़र बिन फ़ज़्ल ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे रौह बिन उ़बादा ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे ज़करिया बिन इस्हाक़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अ़म्र बिन दीनार ने, उन्होंने कहा कि मैंने जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अंसारी (रज़ि.) से सुना, वो बयान करते थे कि रसूलुल्लाह (ﷺ) (नुबुव्वत से पहले) का'बा के लिये कुरैश के साथ पत्थर ढो रहे थे। उस समय आप तहबंद बाँधे हुए थे। आप (ﷺ) के चचा अ़ब्बास ने कहा कि भतीजे क्यों नहीं तुम तहबंद खोल लेते और उसे पत्थर के नीचे अपने काँधे पर रख लेते (ताकि तुम पर आसानी हो जाए) हज़रत जाबिर ने कहा कि आप (ﷺ) ने तहबंद खोल लिया और काँधे पर रख लिया। उसी समय ग़श खाकर गिर पड़े। उसके बाद आप (ﷺ) कभी नंगे नहीं देखे गये।

(दीगर मक़ाम : 1582, 3829)

٣٦٤- حَدَّثَنَا مَطَرُ بْنُ الْفَضْلِ قَالَ: حَدَّثَنَا رَوْحٌ قَالَ: حَدَّثَنَا زَكَرِيَّاءُ بْنُ إِسْحَاقَ قَالَ حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ دِينَارٍ قَالَ: سَمِعْتُ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ يُحَدِّثُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ كَانَ يَنْقُلُ مَعَهُمُ الْحِجَارَةَ لِلْكَعْبَةِ وَعَلَيْهِ إِزَارُهُ، فَقَالَ لَهُ الْعَبَّاسُ عَمُّهُ: يَا ابْنَ أَخِي لَوْ حَلَلْتَ إِزَارَكَ فَجَعَلْتَ عَلَى مَنْكِبَيْكَ دُونَ الْحِجَارَةِ. قَالَ: فَحَلَّهُ فَجَعَلَهُ عَلَى مَنْكِبَيْهِ، فَسَقَطَ مَغْشِيًّا عَلَيْهِ، فَمَا رُئِيَ بَعْدَ ذَلِكَ عُرْيَانًا ﷺ.[طرفاه في : ١٥٨٢، ٣٨٢٩].

तश्रीह : अल्लाह तआला ने आपको बचपन ही से बेशर्मी और तमाम क़िस्म की बुराइयों से बचाया था। आप (ﷺ) के गिजाजे अकदस में कुंआरी औरतों से भी ज़्यादा शर्म थी। ह़ज़रत जाबिर (रह.) ने हुजूर (ﷺ) से ये वाकिआ सुना और नकल किया। एक रिवायत में ये भी है कि एक फरिश्ता उतरा और उसने फौरन आपका तहबन्द बान्ध दिया। (इर्शादुस्सारी)

ईमान के बाद सबसे बड़ा फरीजा सतरपोशी का है जो नमाज़ के लिये एक ज़रूरी शर्त है। मियां-बीवी का एक दूसरे के सामने बेपर्दा हो जाना अमरे दीगर (अलग काम) है।

बाब 9 : क़मीस़ और पाजामा और जांघिया और क़बा (चोग़ा) पहनकर नमाज़ पढ़ने के बयान में

٩- بابُ الصَّلاةِ فِي القميصِ والسَّراويلِ والتُّبَانِ والقَبَاءِ

(365) हमसे सुलैमान बिन ह़र्ब ने बयान किया, कहा हमसे ह़म्माद बिन ज़ैद ने अय्यूब के वास्ते से, उन्होंने मुह़म्मद से, उन्होंने ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से, आपने फ़र्माया कि एक शख़्स नबी (ﷺ) के सामने खड़ा हुआ और उसने एक कपड़ा पहनकर नमाज़

٣٦٥- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ قَالَ: حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ مُحَمَّدٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَامَ رَجُلٌ إِلَى

النَّبِيَّ ﷺ فَسَأَلَهُ عَنِ الصَّلاَةِ فِي الثَّوْبِ الْوَاحِدِ، فَقَالَ: ((أَوَ كُلُّكُمْ يَجِدُ ثَوْبَيْنِ)). ثُمَّ سَأَلَ رَجُلٌ عُمَرَ، فَقَالَ: إِذَا وَسَّعَ اللهُ فَأَوْسِعُوا: جَمَعَ رَجُلٌ عَلَيْهِ ثِيَابَهُ، صَلَّى رَجُلٌ فِي إِزَارٍ وَرِدَاءٍ، فِي إِزَارٍ وَقَمِيصٍ، فِي إِزَارٍ وَقَبَاءٍ، فِي سَرَاوِيلَ وَرِدَاءٍ، فِي سَرَاوِيلَ وَقَمِيصٍ، فِي سَرَاوِيلَ وَقَبَاءٍ، فِي تُبَّانٍ وَقَمِيصٍ، - قَالَ: وَأَحْسَبُهُ قَالَ - فِي تُبَّانٍ وَرِدَاءٍ.

[راجع: ٣٥٨]

पढ़ने के बारे में सवाल किया। आपने फ़र्माया कि क्या तुम सब ही लोगों के पास दो कपड़े हो सकते हैं? फिर (यही मसला) हज़रत उमर (रज़ि.) से एक शख़्स ने पूछा तो उन्होंने कहा कि जब अल्लाह तआला ने तुम्हें फ़राग़त दी है तो तुम भी फ़राग़त के साथ रहो। आदमी को चाहिए कि नमाज़ में अपने कपड़े को इकट्ठा कर ले, कोई आदमी तहबंद और चादर में नमाज़ पढ़े, कोई तहबंद और क़मीस़, कोई तहबंद और क़बा में, कोई पाजामा और चादर में, कोई पाजामा और क़मीस़ में, कोई पाजामा और क़बा में, कोई जांघिया और क़बा में, कोई जांघिया और क़मीस़ में नमाज़ पढ़े। अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा कि मुझे याद आता है कि आपने ये भी कहा कि कोई जांघिया और चादर में नमाज़ पढ़े।

(राजेअ : 358)

तश्रीह : इसमें हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) को शक था कि हज़रत उमर (रज़ि.) ने ये आखिर का लफ़्ज़ कहा था या नहीं, क्योंकि महज़ जांघिया से सतरपोशी नहीं होती है। उस पर ऐसा कपड़ा हो जिससे सतरपोशी कामिल तौर पर ह़ासिल हो जाए तो जायज है और यहां यही मुराद है, **फ़स्सतरू बिही हासिलुन मअल क़बा व मअल क़मीस़** (क़स्तलानी) चोग़ा या लम्बी कमीस पहन कर उसके साथ सतरपोशी हो जाती है।

٣٦٦- حَدَّثَنَا عَاصِمُ بْنُ عَلِيٍّ قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ ذِئْبٍ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ سَالِمٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: سَأَلَ رَجُلٌ رَسُولَ اللهِ ﷺ فَقَالَ: مَا يَلْبَسُ الْمُحْرِمُ؟ فَقَالَ: ((لاَ يَلْبَسُ الْقَمِيصَ وَلاَ السَّرَاوِيلَ وَلاَ الْبُرْنُسَ وَلاَ ثَوْبًا مَسَّهُ الزَّعْفَرَانُ وَلاَ وَرْسٌ. فَمَنْ لَمْ يَجِدِ النَّعْلَيْنِ فَلْيَلْبَسِ الْخُفَّيْنِ وَلْيَقْطَعْهُمَا حَتَّى يَكُونَا أَسْفَلَ مِنَ الْكَعْبَيْنِ)). وَعَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ مِثْلَهُ. [راجع: ١٣٤]

(366) हमसे आसिम बिन अली ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इब्ने अबी ज़िब ने ज़ुहरी के ह़वाले से बयान किया, उन्होंने सालिम से, उन्होंने इब्ने उमर (रज़ि.) से, उन्होंने फ़र्माया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) से एक आदमी ने पूछा कि एहराम बाँधने वाले को क्या पहनना चाहिए। तो आपने फ़र्माया कि न क़मीस़ पहने न पाजामा, न बारान कोट और न ऐसा कपड़ा जिसमें जा'फ़रान लगा हुआ हो और न वर्स लगा हुआ कपड़ा, फिर अगर किसी शख़्स को जूतियाँ न मिलें (जिनमें पांव खुला रहता हो) वो मोज़े काटकर पहन ले ताकि वो टख़नों से नीचे हो जाएँ और इब्ने अबी ज़िब ने इस ह़दीष़ को नाफ़ेअ से भी रिवायत किया, उन्होंने ऐसा ही आँहज़रत (ﷺ) से भी रिवायत किया है।

(राजेअ : 134)

वर्स नामी एक पीले रंग वाली खुश्बूदार घास यमन में होती थी जिससे कपड़े रंगे जाते थे। मुनासबत इस ह़दीष़ के बाब से ये है कि मुहरिम को एहराम की हालत में इन चीजों के पहनने से मना फर्माया मा'लूम हुआ कि एहराम के अलावा दीगर हालतों में इन सबको पहना जा सकता है। यहाँ तक कि नमाज़ में भी, यही बाब का तर्जुमा है। ह़ाफ़िज़ इब्ने हजर फर्माते हैं कि इस ह़दीष़ को यहां बयान करने से मक़्सद ये है कि कमीस और पाजामे के बगैर भी (बशर्ते की सतरपोशी ह़ासिल हो) नमाज़ दुरूस्त है क्योंकि मुहरिम इनको नहीं पहन सकता और आखिर वो नमाज़ जरूर पढ़ेगा।

समझा। इस पर आपने उनको वाज़ेह फर्माया और बतलाया कि दस्तूरे अरब के तहत मुझको अली (रज़ि.) का भेजना ज़रूरी हुआ वरना आप मेरे यारे गार हैं बल्कि हौजे कौषर पर भी आप ही की दोस्ती रहेगी। रज़ियल्लाहु अन्हुम अज्मईन।

बाब 11 : इस बारे में कि बग़ैर चादर ओढ़े सिर्फ़ एक कपड़े मे लिपटकर नमाज़ पढ़ना भी जाइज़ है

١١- بَابُ الصَّلَاةِ بِغَيْرِ رِدَاءٍ

(370) हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ उवैसी ने बयान किया, कहा मुझसे अ़ब्दुर्रहमान बिन अबिल मवाली ने मुहम्मद बिन मुंकदिर से, कहा मैं जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अंसारी की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। वो एक कपड़ा अपने बदन पर लपेटे हुए नमाज़ पढ़ रहे थे, हालाँकि उनकी चादर अलग रखी हुई थी। जब आप नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो हमने कहा ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह! आपकी चादर रखी हुई है और आप (उसे ओढ़े बग़ैर) नमाज़ पढ़ रहे हैं। उन्होंने फ़र्माया, मैंने चाहा कि तुम जैसे जाहिल लोग मुझे इस तरह नमाज़ पढ़ते देख लें, मैंने भी नबी करीम (ﷺ) को एक कपड़े में नमाज़ पढ़ते देखा था।

(राजेअ़ : 352)

٣٧٠- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيْزِ بْنُ عَبْدِ اللهِ قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي الْمَوَالِي عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ الْمُنْكَدِرِ قَالَ: دَخَلْتُ عَلَى جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ وَهُوَ يُصَلِّي فِي ثَوبٍ وَاحِدٍ مُلْتَحِفًا بِهِ وَرِدَاءُهُ مَوْضُوعٌ. فَلَمَّا انْصَرَفَ قُلْنَا: يَا أَبَا عَبْدِ اللهِ تُصَلِّي وَرِدَاؤُكَ مَوضُوعٌ قَالَ نَعَمْ أَحْبَبْتُ أَنْ يَرَانِيَ الْجُهَّالُ مِثْلُكُمْ. رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ يُصَلِّي كَذَا.

[راجع: ٣٥٢]

बाब 12 : रान के बारे में जो रिवायतें आई हैं

١٢- بَابُ مَا يُذْكَرُ فِي الْفَخِذِ

हज़रत इमाम अबू अ़ब्दुल्लाह (बुख़ारी) ने कहा कि इब्ने अ़ब्बास, जरहद और मुहम्मद बिन जहश ने नबी करीम (ﷺ) से ये नक़ल किया कि रान शर्मगाह है। अनस (रज़ि.) ने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने (जंगे ख़ैबर में) अपनी रान खोली। अबू अ़ब्दुल्लाह (इमाम बुख़ारी) कहते हैं कि अनस (रज़ि.) की हदीष सनद के ए'तिबार से ज़्यादा सहीह है और जर्हद की हदीष में बहुत एहतियात मल्हूज़ है। इस तरह हम इस बारे में उलमा के बाहमी इख़्तिलाफ़ से बच जाते हैं।

قَالَ أَبُو عَبْدِ اللهِ وَيُرْوَى عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ وَجَرْهَدٍ وَمُحَمَّدُ بْنُ جَحْشٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ ((الْفَخِذُ عَوْرَةٌ)) وَقَالَ أَنَسٌ: حَسَرَ النَّبِيُّ ﷺ عَنْ فَخِذِهِ قَالَ أَبُو عَبْدِ اللهِ، وَحَدِيْثُ أَنَسٍ أَسْنَدُ، وَحَدِيْثُ جَرْهَدٍ أَحْوَطُ، حَتَّى يُخْرَجَ مِنِ اخْتِلاَفِهِمْ.

क्योंकि अगर रान बिल फ़र्ज़ सतर नहीं तब भी उसके छुपाने में कोई बुराई नहीं।

और अबू मूसा अशअ़री (रज़ि.) ने कहा कि उ़ष्मान (रज़ि.) आए तो नबी करीम (ﷺ) ने अपने घुटने ढांक लिये और ज़ैद बिन षाबित ने कहा कि अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल (ﷺ) पर एक बार वह्य नाज़िल फ़र्माई। उस समय आप (ﷺ) की राने मुबारक मेरी रान पर थी, आपकी रान इतनी भारी हो गई थी कि मुझे अपनी रान की हड्डी टूटने का डर पैदा हो गया।

وَقَالَ أَبُو مُوسَى: غَطَّى النَّبِيُّ ﷺ رُكْبَتَيْهِ حِيْنَ دَخَلَ عُثْمَانُ. وَقَالَ زَيْدُ بْنُ ثَابِتٍ: أَنْزَلَ اللهُ عَلَى رَسُولِهِ ﷺ وَفَخِذُهُ عَلَى فَخِذِي، فَثَقُلَتْ عَلَيَّ حَتَّى خِفْتُ أَنْ تَرُضَّ فَخِذِي.

गर्मी की वजह से कोई कोई हममें से अपने कपड़े का किनारा सज्दे की जगह रख लेता।

(दीगर मक़ाम : 542, 1208)

مَعَ النَّبِيِّ ﷺ فَيَضَعُ أَحَدُنَا طَرَفَ الثَّوْبِ مِنْ شِدَّةِ الْحَرِّ فِي مَكَانِ السُّجُودِ.

[طرفاه في : ٥٤٢، ١٢٠٨].

बाब 24 : जूतियों समेत नमाज़ पढ़ना (जाइज़ है)

٢٤- بَابُ الصَّلاَةِ فِي النِّعالِ

(386) हमसे आदम बिन अबी इयास ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अबू मुस्लिमा सईद बिन यज़ीद अज़्दी ने बयान किया, कहा मैंने अनस बिन मालिक (रज़ि.) से पूछा कि क्या नबी करीम (ﷺ) अपनी जूतियाँ पहनकर नमाज़ पढ़ते थे? तो उन्होंने फ़र्माया, कि हाँ!

(दीगर मक़ाम : 5850)

٣٨٦- حَدَّثَنَا آدَمُ بْنُ أَبِي إِيَاسٍ قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ : حَدَّثَنَا أَبُو مَسْلَمَةَ سَعِيدُ بْنُ يَزِيْدَ الأَزْدِيُّ قَالَ: سَأَلْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ: أَكَانَ النَّبِيُّ ﷺ يُصَلِّي فِي نَعْلَيْهِ؟ قَالَ : نَعَمْ.[طرفه في : ٥٨٥٠].

तश्रीह : अब दाऊद और हाकिम की ह़दीष़ में यूं है कि यहूदियों के ख़िलाफ़ करो, वो जूतियों में नमाज़ नहीं पढ़ते। ह़ज़रत उमर (रज़ि.) नमाज़ में जूते उतारना मकरूह जानते थे और अबू अ़म्र शैबानी कोई नमाज़ में जूता उतारे तो उसे मारा करते थे मगर ये शर्त ज़रूरी है कि जूता पाक साफ हो। बाज़ लोग कहते हैं कि नअ़ल अ़रबों का एक ख़ास़ जूता था और इन आम जूतों में नमाज़ जाइज़ नहीं। ख़्वाह वो पाक-साफ़ भी हो। दलाइल की रु से ऐसा कहना सही नहीं है। जूतों में नमाज़ बिला कराहत जाइज़ दुरुस्त है। बशर्ते कि वो पाक व साफ़ सुथरे हो, गन्दगी का ज़रा भी शुबहा हो तो उनको उतार देना चाहिए।

बाब 25 : मौज़े पहने हुए नमाज़ पढ़ना (जाइज़ है)

٢٥- بَابُ الصَّلاَةِ فِي الْخِفَافِ

(387) हमसे आदम बिन अबी इयास ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने अअ़मश के वास्ते से, उसने कहा मैंने इब्राहीम नख़ई से सुना। वो हम्माम बिन ह़ारिष़ से रिवायत करते थे, उन्होंने कहा कि मैंने जरीर बिन अ़ब्दुल्लाह को देखा, उन्होंने पेशाब किया फिर वुज़ू किया और अपने मौज़ों पर मसह किया। फिर खड़े हुए और (मौज़ों समेत) नमाज़ पढ़ी। आपसे जब इसके बारे में पूछा गया तो फ़र्माया कि, मैंने नबी करीम (ﷺ) को ऐसा करते हुए देखा है। इब्राहीम नख़ई ने कहा कि ये ह़दीष़ लोगों की नज़र में बहुत पसंदीदा थी, क्योंकि जरीर (रज़ि.) आख़िर में इस्लाम लाए थे।

٣٨٧- حَدَّثَنَا آدَمُ قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنِ الأَعْمَشِ قَالَ: سَمِعْتُ إِبْرَاهِيْمَ يُحَدِّثُ عَنْ هَمَّامِ بْنِ الْحَارِثِ قَالَ: رَأَيْتُ جَرِيْرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ بَالَ، ثُمَّ تَوَضَّأَ وَمَسَحَ عَلَى خُفَّيْهِ ثُمَّ قَامَ فَصَلَّى، فَسُئِلَ فَقَالَ: رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ صَنَعَ مِثْلَ هَذَا. قَالَ إِبْرَاهِيْمُ فَكَانَ يُعْجِبُهُم، لأَنَّ جَرِيْرًا كَانَ مِنْ آخِرِ مَنْ أَسْلَمَ.

(388) हमसे इस्ह़ाक़ बिन नस्र ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया अअ़मश के वास्ते से, उन्होंने मुस्लिम बिन स़बीह़ से, उन्होंने मसरूक़ बिन अज्दअ़ से, उन्होंने मुग़ीरह बिन शुअ़बा से, उन्होंने कहा कि मैंने नबी करीम (ﷺ) को वुज़ू कराया। आपने अपने

٣٨٨- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ نَصْرٍ قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ عَنِ الأَعْمَشِ عَنْ مُسْلِمٍ عَنْ مَسْرُوقٍ عَنِ الْمُغِيْرَةِ بْنِ شُعْبَةَ قَالَ: وَضَّأْتُ النَّبِيَّ ﷺ فَمَسَحَ عَلَى خُفَّيْهِ

तश्रीह़ : इमाम क़स्तलानी शारेह बुख़ारी लिखते हैं कि इन मक़ामात में ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) की नमाज़ पढ़ना तबर्रुक ह़ासिल करने के लिये था और ये उसके ख़िलाफ़ नहीं जो ह़ज़रत उमर (रज़ि.) से मरवी है क्योंकि ह़ज़रत उमर (रज़ि.) ने इस हाल में उसको मकरूह रखा जब कोई वाजिब और ज़रूरी समझकर ऐसा करें। यहाँ जिन-जिन मक़ामात की मसाजिद का ज़िक्र है उनमें से अकषर अब नापैद हो चुकी है, चन्द बाकी है। ज़ुलहुलैफ़ा एक मशहूर मक़ाम है जहाँ से अहले मदीना एह़राम बाँधा करते थे। बतहा वो जगह है जहाँ पानी का बहाव है और वहाँ बारीक-बारीक कंकरिया है। रुवैषा मदीना से सत्रह फ़र्स के फ़ासले पर एक गाँव का नाम है। यहां से अर्ज नामी गाँव तेरह चौदह मील पड़ता है। हज़्बह भी मदीना के रास्ते में एक पहाड़ है जो ज़मीन पर फैला हुआ है। हरशी जोह़फ़ह के क़रीब मदीना और शाम के रास्तों में एक पहाड़ का नाम है। मर्रुज्ज़हरान एक मशहूर मक़ाम है, स़फ़रावात वो नदी नाले और पहाड़ जो मर्रुज्ज़हरान के बाद आते हैं।

इस बाब में नौ ह़दीषें मज़कूर है। इनको ह़सन बिन सुफ़यान ने मुतफ़र्रिक तौर पर अपनी मुसनद में निकाला है मगर तीसरी को नहीं निकाला और मुस्लिम ने आख़री ह़दीष़ को किताबुल ह़ज्ज में निकाला है।

अब उन मसाजिद का पता नहीं चलता, न वो दरख़्त और निशानात बाकी है। ख़ुद मदीना मुनव्वरा में आँह़ज़रत (ﷺ) ने जिन-जिन मसाजिद में नमाज़ पढ़ी है उनको अमर बिन शैबा ने अख़बारे मदीना में ज़िक्र किया है। ह़ज़रत उमर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ (रह.) ने अपने अहदे ख़िलाफ़त में उनको मा'लूम करके नक़्शी पत्थरों से ता'मीर करा दिया था उनमें से मस्जिदे क़ुबा, मस्जिदे फ़ज़ीख़, मस्जिदे बनी क़ुरैज़ा, मस्जिद बग़ला, मस्जिद बनी मुआविया, मस्जिदे फ़तह, मस्जिद क़िब्लतैन वग़ैरह अभी तक बाकी है। मौजूदा ह़ुकूमते सऊदिया ने अकषर मसाजिद को उम्दा त़ौर पर मुस्तह़कम (मज़बूत, सुदृढ़) कर दिया है।

इस ह़दीष़ में जिस सफ़र की नमाज़ों का ज़िक्र है वो सात दिन तक जारी रहा था और आपने उसमें 35 नमाज़ें अदा की थी। राविया‌ने ह़दीष़ ने अकषर का ज़िक्र नहीं किया। वादी-ए-रौहा की तफ़्सील पहले गुज़र चुकी है।

'क़ालश्शैख़ुब्नु हजर हाज़िहिल मसाजिदु ला युअरफ़ुल यौम हाहुना ग़ैर मस्जिदि ज़िल्हुलीफ़ति वल मसाजिदिल्लती बिरौंहा अहलु तिल्कन्नाहियति इन्तहा व इन्नमा कानब्नु उ़मर युस़ल्ली फ़ी तिल्कल मवाज़िइ तबर्रूकन बिहा व लम यजलिन्नासु यतबर्रकून बिमवाजिअस्सुलहाइ व अम्मा मा रूविय अन उमर अन्नहू करिह ज़ालिक फ़लिअन्नहू ख़शिय अंय्यल्तज़िमन्नासुस्सलात फ़ी तिल्कल मवाज़िअ व यम्बग़ी लिल आलिमि इज़ा राअन्नास यल्तजिमून बिन्नवाफ़िली इल्तिज़ामन शदीदन अंय्यन्हाहुम अन्हु'

अ़ल्लामा इब्ने ह़जर की इस तक़रीर का ख़ुलासा वही है जो ऊपर ज़िक्र हुआ है यानी उन मक़ामात पर नमाज़ महज़ तबर्रुकन पढ़ते थे मगर अवाम इसका इन्तिज़ाम करने लगी तो उलमा के लिये ज़रूरी है कि उनको रोके।

बाब 90 : इमाम का सुतरा मुक़्तदियों को भी किफ़ायत करता है

٩٠- باب سُتْرَةُ الإِمَامِ سُتْرَةُ مَنْ خَلْفَهُ

(493) हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इमाम मालिक ने इब्ने शिहाब के वास्ते से बयान किया, उन्होंने उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़त्बा से कि अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने फ़र्माया कि मैं एक गधी पर सवार होकर आया। उस ज़माने में बालिग़ होने वाला ही था। रसूलुल्लाह (ﷺ) मिना में लोगों को नमाज़ पढ़ा रहे थे। लेकिन दीवार आप (ﷺ) के सामने न थी। मैं स़फ़ के कुछ ह़िस़्से से गुज़र कर सवारी से उतरा। और मैंने गधी को चरने के लिये छोड़ दिया

٤٩٣- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ: أَنَا مَالِكٌ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُتْبَةَ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: أَقْبَلْتُ رَاكِبًا عَلَى حِمَارٍ أَتَانٍ وَأَنَا يَوْمَئِذٍ قَدْ نَاهَزْتُ الاِحْتِلاَمَ وَرَسُولُ اللهِ ﷺ يُصَلِّي بِالنَّاسِ بِمِنًى إِلَى غَيْرِ جِدَارٍ، فَمَرَرْتُ بَيْنَ يَدَيْ بَعْضِ الصَّفِّ

और स़फ़ में दाख़िल हो गया। पस किसी ने मुझपर ए'तिराज़ नहीं किया। (राजेअ : 476)

فَنَزَلْتُ وَأَرْسَلْتُ الأَتَانَ تَرْتَعُ وَدَخَلْتُ فِي الصَّفِّ، وَ لَمْ يُنْكِرْ ذَلِكَ عَلَيَّ أَحَدٌ.

[راجع: ٤٧٦]

तश्रीह़ : बज़ाहिर इस ह़दीष़ से बाब का मत़लब नहीं निकलता। चूंकि आँह़ज़रत (ﷺ) की आदते मुबारका यही थी कि मैदान में बग़ैर सुतरा के नमाज़ न पढ़ते इसलिये आप (ﷺ) के आगे बर्छी गाड़ी जाती तो यक़ीनन उस वक़्त भी आप (ﷺ) के सामने सुतरा ज़रूर होगा। बाब का मत़लब षाबित हो गया कि इमाम का सुतरा मुक़्तदियों के लिये काफी है।

अल्लामा क़स्त़लानी फ़र्माते हैं, **'इला ग़ैरि जिदारिन क़ालश्शाफ़िइय्यु इला ग़ैरि सुतरतिन व हीनइज़िन फ़ला मुताबक़त बैनल हदीषि वत्तर्जुमति व क़द बव्वब अलैहिल बयहक़ी बाबुन मन स़ल्ला इला ग़ैरि सुतरतिन लाकिन इस्तम्बत बअ़जुहुम अल मुताबक़त मिन क़ौलिही इला ग़ैरि जिदारिन लिअन्न लफ़्ज़ ग़ैर यश्उर बिअन्न षम्महू सुतरतुन लिअन्नहा तक़उ दाइमन स़िफ़तुन व तक़्दीरूहू इला शैइन ग़ैर जिदारिन व हुव अअ़म्मु मिन अंय्यकून अ़सन औ ग़ैर ज़ालिक'** यानी इमाम शाफ़िई (रह.) ने कहा कि आप (ﷺ) बग़ैर सुतरा के नमाज़ पढ़ रहे थे। इस सूरत में ह़दीष और बाब में कोई मुताबक़त नहीं इसीलिये इस ह़दीष़ पर इमाम बैहक़ी (रह.) ने यूँ बाब बाँधा कि ये बाब उसके बारे में हैं जो बग़ैर सुतरा के नमाज़ पढ़े लेकिन इसी ह़दीष़ से बाज़ उलमा ने लफ़्ज़ इला ग़ैरे जिदार से मुताबक़त पर इस्तिम्बात किया है। लफ़्ज़ ग़ैर बतलाता है कि वहाँ दीवार के अ़लावा किसी और चीज़ से सुतरा किया गया था। वो चीज़ अ़सा (लाठी) थी या कुछ और हर हाल में आपके सामने सुतरा मौजूद था जो दीवार के अ़लावा था।

शैख़ुल ह़दीष़ ह़ज़रत मौलाना उबैदुल्लाह साहब मुबारकपुरी (रह.) फ़र्माते हैं, **'कुल्तु ह़म्मलल बुख़ारी लफ़्ज़ल ग़ैरि अलन्नअ़ति वल बैहक़ी अलन्नफ़ियिल महज़ि व मख़्तारहुल बुख़ारी हुना औला फ़इन्नत्तअर्रूज़ लिनफ़ियिल जिदारि ख़ास़्स़तन यदुल्लु अ़ला अन्नहू कान हुनाक शैउन मुग़ायिरूल लिल जिदारि'** (मिर्आत जि. 1/स. 515) खुलासा ये है कि ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) का मक़्स़द यहाँ ये है कि आपके सामने दीवार के अ़लावा कोई चीज़ बत़ौरे सुतरा थी। ह़ज़रतुल इमाम ने लफ़्ज़ ग़ैर को यहाँ बत़ौरे नअ़त समझा और इमाम बैहक़ी (रह.) ने इससे नफ़ी-ए-महज़ मुराद ली और जो कुछ यहाँ ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने इख़्तियार किया है वही मुनासिब और बेहतर है। ह़ज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) का ये वाक़िआ ह़ज्जतुल विदाअ़ में पेश आया। उस वक़्त में जवानी के क़रीब थे। वफ़ाते नबवी (ﷺ) के वक़्त इनकी उम्र पन्द्रह साल के लगभग बतलाई गई है।

(494) हमसे इस्ह़ाक़ बिन मंसूर ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन नुमैर ने कहा कि हमसे उ़बैदुल्लाह ने नाफ़ेअ़ के वास्ते से बयान किया। उन्होंने अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) से कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जब ईद के दिन (मदीना से) बाहर तशरीफ़ ले जाते तो छोटा नेज़ा (बर्छा) को गाड़ने का हुक्म देते वो जब आपके आगे गाड़ दिया जाता तो आप (ﷺ) उसकी तरफ़ रुख़ करके नमाज़ पढ़ते। और लोग आप (ﷺ) के पीछे खड़े होते। यही आप (ﷺ) सफ़र में भी किया करते थे। (मुसलमानों के) ख़ुलफ़ा ने इसी वजह से बर्छा साथ रखने की आदत बना ली है। (दीगर मक़ाम : 497, 972, 973)

٤٩٤- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ نُمَيْرٍ قَالَ: حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ كَانَ إِذَا خَرَجَ يَوْمَ الْعِيْدِ أَمَرَ بِالْحَرْبَةِ فَتُوضَعُ بَيْنَ يَدَيْهِ فَيُصَلِّي إِلَيْهَا وَالنَّاسُ وَرَاءَهُ، وَكَانَ يَفْعَلُ ذَلِكَ فِي السَّفَرِ، فَمِنْ ثَمَّ اتَّخَذَهَا الأُمَرَاءُ.

[أطرافه في : ٤٩٧، ٩٧٢، ٩٧٣].

(495) हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया औन बिन अबी जुहैफ़ा से, कहा मैंने अपने बाप (वहब बिन अ़ब्दुल्लाह) से सुना कि नबी (ﷺ) ने लोगों को बत़्हा

٤٩٥- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيْدِ قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عَوْنِ بْنِ أَبِي جُحَيْفَةَ قَالَ:

نمازِ ابنِ شِهَابٍ أَنَّهُ سَأَلَ عَمَّهُ عَنِ الصَّلَاةِ يَقْطَعُهَا شَيْءٌ؟ فَقَالَ: لَا يَقْطَعُهَا شَيْءٌ. أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ أَنَّ عَائِشَةَ زَوْجَ النَّبِيِّ ﷺ قَالَتْ: لَقَدْ كَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ يَقُومُ فَيُصَلِّي مِنَ اللَّيْلِ وَإِنِّي لَمُعْتَرِضَةٌ بَيْنَهُ وَبَيْنَ الْقِبْلَةِ عَلَى فِرَاشِ أَهْلِهِ.

[راجع: ٣٨٢]

नमाज़ को कोई चीज़ तोड़ देती है? तो उन्होंने फ़र्माया कि नहीं! उसे कोई चीज़ नहीं तोड़ती। क्योंकि मुझे उ़र्वा बिन ज़ुबैर (रज़ि.) ने ख़बर दी कि नबी (ﷺ) की बीवी मुतह्हरह ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने फ़र्माया कि नबी करीम (ﷺ) खड़े होकर रात को नमाज़ पढ़ते और मैं आपके सामने आपके क़िब्ले के बीच अ़र्ज़ में बिस्तर पर लेटी रहती थी।

(राजेअ : 382)

तफ़्सील तोहफ़तुल अह्वज़ी के हवाले से गुज़र चुका है।

१٠٦ - بَابُ إِذَا حَمَلَ جَارِيَةً صَغِيرَةً عَلَى عُنُقِهِ فِي الصَّلَاةِ

बाब 106 : इस बारे में कि नमाज़ में अगर कोई अपनी गर्दन पर किसी बच्ची को उठा ले तो क्या हुक्म है?

٥١٦ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ: أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ عَامِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ الزُّبَيْرِ عَنْ عَمْرِو بْنِ سُلَيْمٍ الزُّرَقِيِّ عَنْ أَبِي قَتَادَةَ الأَنْصَارِيِّ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ كَانَ يُصَلِّي وَهُوَ حَامِلٌ أُمَامَةَ بِنْتَ زَيْنَبَ بِنْتِ رَسُولِ اللهِ ﷺ وَلِأَبِي الْعَاصِ بْنِ رَبِيعَةَ بْنِ عَبْدِ شَمْسٍ، فَإِذَا سَجَدَ وَضَعَهَا وَإِذَا قَامَ حَمَلَهَا. [طرفه في: ٥٩٩٦]

(516) हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें इमाम मालिक ने आ़मिर बिन अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) से ख़बर दी, उन्होंने अ़म्र बिन सुलैम ज़र्क़ी से, उन्होंने अबू क़तादा अंसारी (रज़ि.) से कि रसूलुल्लाह (ﷺ) उमामा बिन्ते ज़ैनब बिन्ते रसूलुल्लाह (ﷺ) (कुछ औक़ात) को नमाज़ पढ़ते वक़्त उठाए होते थे। अबुल आ़स़ बिन रबीआ़ बिन अ़ब्दे शम्स की ह़दीष़ में है कि जब सज्दे में जाते तो उतार देते और जब क़याम करते तो उठा लेते।

(दीगर मक़ाम : 5996)

तशरीह : ह़ज़रत उमामा बिन्ते अबुल आ़स़ (रज़ि.) आँह़ज़रत (ﷺ) की बड़ी मह़बूब (लाडली) नवासी थी। बाज़ औक़ात इस फ़ितरी मुह़ब्बत की वजह से आँह़ज़रत (ﷺ) उनको, जबकि ये बहुत छोटी थी, नमाज़ में कंधे पर बिठा लिया करते थे। ह़ज़रत उमामा का निकाह़ ह़ज़रत अ़ली कर्रमहुल्लाहु वज्हु से हुआ जबकि ह़ज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) का इन्तिक़ाल हो चुका था और वो उनसे निकाह़ करने की वस़िय्यत भी फ़र्मा गई थी। ये 11 हिजरी का वाक़िआ है। 40 हिजरी में ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) शहीद कर दिये गये तो आपकी वसिय्यत के मुताबिक़ ह़ज़रत उमामा (रज़ि.) का अ़क़्दे षानी मुग़ीरा बिन नौफ़ल से हुआ जो ह़ज़रत अ़ब्दुल मुत्तलिब के पोते होते थे। इन्हीं के पास आपने वफ़ात पाई।

ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) अह़कामे इस्लाम में वुसअ़त के पेशेनज़र बतलाना चाहते हैं कि ऐसे किसी ख़ास़ मौके पर अगर किसी शख़्स़ ने नमाज़ में अपने किसी प्यारे मासूम बच्चे को कंधे पर बिठा लिया तो इससे नमाज़ फ़ासिद न होगी।

١٠٧ - بَابُ إِذَا صَلَّى إِلَى فِرَاشٍ فِيهِ حَائِضٌ

बाब 107 : ऐसे बिस्तर की तरफ़ मुँह करके नमाज़ पढ़ना जिस पर हाइज़ा औरत हो

(636) हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा कि हमसे मुहम्मद बिन अब्दुर्रहमान बिन अबी ज़िब ने बयान किया, कहा कि हमसे इमाम ज़ुहरी ने सईद बिन मुसय्यिब से बयान किया, उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से, उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से (दूसरी सनद) और ज़ुहरी ने अबू सलमा से, उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि .) से, उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से, आपने फ़र्माया कि तुम लोग तक्बीर की आवाज़ सुन लो तो नमाज़ के लिए (मा'मूली चाल से) चल पड़ो। सुकून और वक़ार को (बहरहाल) लाज़िम पकड़े रहो और दौड़कर मत आओ। फिर नमाज़ का जो हिस्सा मिले उसे पढ़ लो, और जो न मिल सके उसे बाद में पूरा कर लो। (दीगर मक़ाम : 908)

٦٣٦- حَدَّثَنَا آدَمُ قَالَ : حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي ذِئْبٍ قَالَ: حَدَّثَنَا الزُّهْرِيُّ عَنْ سَعِيْدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ. ح وَعَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((إِذَا سَمِعْتُمُ الإِقَامَةَ فَامْشُوا إِلَى الصَّلاَةِ وَعَلَيْكُمْ بِالسَّكِيْنَةِ وَالْوَقَارِ، وَلاَ تُسرِعُوا، فَمَا أَدْرَكْتُمْ فَصَلُّوا، وَمَا فَاتَكُمْ فَأَتِمُّوا)).

[طرفه في : ٩٠٨].

बाब 22 : नमाज़ की तक्बीर के वक़्त जब लोग इमाम को देखे तो किस वक़्त खड़े हों

٢٢- بَابُ مَتَى يَقُومُ النَّاسُ إِذَا رَأَوُا الإِمَامَ عِنْدَ الإِقَامَةِ؟

(637) हमसे मुस्लिम बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा कि हमसे हिशाम दस्तवाई ने बयान किया, कहा मुझे यह्या ने अ़ब्दुल वह्हाब बिन अबी क़तादा से ये ह़दीष़ लिखकर भेजी कि वो अपने बाप से बयान करते थे कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि जब नमाज़ के लिए तक्बीर कही जाए तो उस वक़्त तक न खड़े हो जब तक मुझे निकलते हुए न देख लो। (दीगर मक़ाम : 638, 909)

٦٣٧- حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ إِبْرَاهِيْمَ قَالَ: حَدَّثَنَا هِشَامٌ قَالَ: كَتَبَ إِلَيَّ يَحْيَى عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي قَتَادَةَ عَنْ أَبِيْهِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِذَا أُقِيْمَتِ الصَّلاَةُ فَلاَ تَقُومُوا حَتَّى تَرَوْنِي)).

[طرفاه في : ٦٣٨، ٩٠٩].

तश्रीह़ : इस मसले में कई क़ौल है, इमाम शाफ़िई (रह.) के नज़दीक तकबीर ख़त्म होने के बाद मुक़्तदियों को उठना चाहिये, इमाम मालिक (रह.) कहते हैं तकबीर शुरू होते ही— इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह.) कहते हैं कि जब मुअज़्ज़िन **ह़य्य अलस्सलाह** कहे और जब मुअज़्ज़िन **क़द क़ामतिस्सलाह** कहे तो इमाम नमाज़ शुरू कर दे। इमाम अह़मद बिन ह़ंबल (रह.) फ़र्माते हैं कि **ह़य्य अलस्सलाह** पर उठें। इमाम बुख़ारी (रह.) ने बाब की ह़दीष़ लाकर ये इशारा किया कि जब इमाम मस्जिद में न हो तो मुक़्तदियों को चाहिए कि बैठे रहे और जब इमाम को देख ले तब नमाज़ के लिये खड़े हो।

बाब 23 : नमाज़ के लिए जल्दी न उठे बल्कि इत्मीनान और सुकून व सहूलत के साथ उठे

٢٣- بَابُ لاَ يَسْعَى إِلَى الصَّلاَةِ مُسْتَعْجِلاً، وَلْيَقُمْ إِلَيْهَا بِالسَّكِيْنَةِ وَالْوَقَارِ

(638) हमसे अबू नुऐ़म फ़ज़ल बिन दुकैन ने बयान किया, कहाकि हमसे शैबान ने यह्या बिन अबी कष़ीर से बयान किया, उन्होंने अ़ब्दुल्लाह बिन अबी क़तादा से, उन्होंने अपने बाप अबू

٦٣٨- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ قَالَ: حَدَّثَنَا شَيْبَانُ عَنْ يَحْيَى عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي

क़तादा हारिष़ बिन रुबई (रज़ि.) से कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि नमाज़ की तक्बीर हो तो जब तक मुझे देख न लो खड़े न हो और आहिस्तगी को लाज़िम रखो। शैबान के साथ इस हदीष़ को यह्या से अ़ली बिन मुबारक ने भी रिवायत किया है। (राजेअ़ : 637)

قَتَادَةَ عَنْ أَبِيهِ قَالَ : قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِذَا أُقِيمَتِ الصَّلاَةُ فَلاَ تَقُومُوا حَتَّى تَرَوْنِي، وَعَلَيْكُمْ بِالسَّكِينَةِ)) تَابَعَهُ عَلِيُّ بْنُ الْمُبَارَكِ. [راجع: ٦٣٧]

जिसे ख़ुद इमाम बुख़ारी (रह.) ने किताबुल जुमुआ में निकाला है। मा'लूम हुआ कि शिरकते जमाअ़त के लिये भागदौड़ मुनासिब नहीं बल्कि सुकून और वक़ार के साथ चलकर शरीके जमाअ़त होना चाहिए। फिर जो नमाज़ छूट जाए वो बाद में पढ़ ले। जमाअ़त का ष़वाब बहरहाल हासिल होगा, इन्शाअल्लाह।

बाब 24 : क्या मस्जिद से किसी ज़रूरत की वजह से अज़ान या इक़ामत के बाद भी कोई शख़्स निकल सकता है?

٢٤- بَابُ هَلْ يَخْرُجُ مِنَ الْمَسْجِدِ لِعِلَّةٍ؟

(639) हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा कि हमसे इब्राहीम बिन सअ़द ने बयान किया, वो स़ालेह बिन कैसान से, वो इब्ने शिहाब से, वो अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रहमान से, वो अबू हुरैरह (रज़ि.) से कि रसूलुल्लाह (ﷺ) (एक दिन हुज्रे से) बाहर तशरीफ़ लाए, इक़ामत कही जा चुकी थी और सफ़ें बराबर की जा चुकी थीं। आप जब मुसल्ले पर खड़े हुए तो हम इंतिज़ार कर रहे थे कि अब आप तक्बीर कहें। लेकिन आप वापस तशरीफ़ ले गए और फ़र्माया कि अपनी अपनी जगह पर ठहरे रहो। हम उसी हालत में ठहरे रहे यहाँ तक कि आप दोबारा तशरीफ़ लाए, तो सरे मुबारक से पानी टपक रहा था, आपने ग़ुस्ल किया था। (राजेअ़ : 275)

٦٣٩- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللهِ قَالَ: حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ عَنْ صَالِحِ بْنِ كَيْسَانَ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ: أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ خَرَجَ وَقَدْ أُقِيمَتِ الصَّلاَةُ وَعُدِّلَتِ الصُّفُوفُ، حَتَّى إِذَا قَامَ فِي مُصَلاَّهُ انْتَظَرْنَا أَنْ يُكَبِّرَ، انْصَرَفَ قَالَ: ((عَلَى مَكَانِكُمْ)). فَمَكَثْنَا عَلَى هَيْئَتِنَا، حَتَّى خَرَجَ إِلَيْنَا يَنْطِفُ رَأْسُهُ مَاءً وَقَدِ اغْتَسَلَ. [راجع: ٢٧٥]

तश्रीह : आप हालते ज़नाबत में थे मगर याद न रहने की वजह से (नमाज़ के लिये) तशरीफ़ ले आए। बाद में मा'लूम हुआ तो वापस तशरीफ़ ले गये। इस हदीष़ से हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने ये मसला ष़ाबित किया कि कोई ऐसी ही सख़्त ज़रूरत दरपेश आ जाए तो अज़ान व तकबीर के बाद भी आदमी मस्जिद के बाहर निकल सकता है। जिस हदीष़ में मुमानअ़त आई है वहां बिला ज़रूरत महज़ बिला वजहे नफ़्सानी ख़्वाहिश के बाहर निकलना मुराद है।

मुमानअ़त वाली हदीष़ स़ही मुस्लिम शरीफ़ में हज़रत अबू हुरैराह (रज़ि.) से मरवी है और मुसनद अहमद में भी है। इन अहादीष़ को नक़ल करने के बाद हज़रत अल्लामा शौकानी (रह.) फ़र्माते हैं–

'वल हदीष़ानि यदुल्लानि अला तहरीमिल ख़ुरूजि मिनल मस्जिदि बअ़द सिमाइल अज़ानि लिग़ैरिल वुज़ूइ व क़ज़ाइल हाज़ति व मा तदउ़ज़्ज़रूरतु इलैहि हत्ता युस़ल्लिय फ़ीहि तिल्कस़्स़लात लिअन्न ज़ालिकल मस्जिद क़द तअय्युनुन लितिल्कस़्स़लाति' (नैलुल औतार)

यानी मस्जिद से अज़ान सुनने के बाद निकलना हराम है मगर वुज़ू या क़ज़ा–ए–हाज़त या और कोई ज़रूरी काम हो तो इजाज़त है वर्ना जिस मस्जिद में रहते हुए अज़ान सुन ली अब उसी मस्जिद में नमाज़ की अदायगी लाज़िम है क्योंकि उस नमाज़ के लिये वही मस्जिद मुतअ़य्यिन (निर्धारित) हो चुकी है। इस हदीष़ से ये भी ष़ाबित हुआ कि अहकामे शरीअ़त व तरीक़–ए–इबादत में भूल हो सकती है ताकि वो वह्य–आसमानी के मुताबिक़ उस भूल का सुधार कर सकें।

बाब 25 : अगर इमाम मुक़्तदियों से कहे कि तुम लोग इसी हालत में ठहरे रहो तो जब तक वो लौटकर आए उसका इंतिज़ार करें (और अपनी हालत पर ठहरे रहें)

٢٥- بَابُ إِذَا قَالَ الإِمَامُ ((مَكَانَكُمْ)) حَتَّى يَرْجِعَ انْتَظَرُوهُ

(640) हमसे इस्हाक़ बिन मंसूर ने बयान किया, कहा कि हमें मुहम्मद बिन यूसुफ़ फ़रयाबी ने ख़बर दी कि कहा हमसे औज़ाई ने इब्ने शिहाब ज़ुह्री से बयान किया, उन्होंने अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान से उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से कि उन्होंने फ़र्माया कि नमाज़ के लिए इक़ामत कही जा चुकी थी और लोगों ने सफ़ें सीधी कर ली थीं। फिर रसूले करीम (ﷺ) तशरीफ़ लाए और आगे बढ़े। लेकिन हालते जनाबत में थे (मगर पहले ख़्याल न रहा) इसलिए आपने फ़र्माया कि तुम लोग अपनी-अपनी जगहों पर ठहरे रहो। फिर आप (ﷺ) वापस तशरीफ़ लाए तो आप ग़ुस्ल किये हुए थे और सर से पानी टपक रहा था। फिर आप (ﷺ) ने लोगों को नमाज़ पढ़ाई। (राजेअ़ : 275)

٦٤٠- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ قَالَ: حَدَّثَنَا الأَوْزَاعِيُّ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: أُقِيْمَتِ الصَّلاَةُ، فَسَوَّى النَّاسُ صُفُوفَهُمْ، فَخَرَجَ رَسُولُ اللهِ ﷺ فَتَقَدَّمَ وَهُوَ جُنُبٌ. ثُمَّ قَالَ: ((عَلَى مَكَانِكُمْ)). فَرَجَعَ فَاغْتَسَلَ، ثُمَّ خَرَجَ وَرَأْسُهُ يَقْطُرُ مَاءً، فَصَلَّى بِهِمْ.
[راجع: ٢٧٥]

तश्रीह : हज़रत मौलाना वहीदुज़्ज़मां साहब फ़र्माते हैं कि बाज़ नुस्ख़ों में यहाँ इतनी इबारत ज़ायद (अधिक) है– 'क़ील लिअबी अ़ब्दिल्लाहि अय अल बुख़ारी अन्न बदअ लिअहदिना मिष्ल हाज़ा यफ़अलु कमा यफ़अलुन्नबिय्यु ﷺ फ़अय्यु शैइन यस्नउ फ़ क़ील यन्तजिरूनहू क़ियामन औ कुऊदन क़ाल इन कान क़ब्लत्तक्बीरि लिल इहरामि फ़ला बास अंय्यक्ऊदू व इन कान बअ़दत्तक्बीरि इन्तज़िरूहु हाल कौनिहिम क़ियामन'

यानी लोगों ने इमाम बुखारी (रह.) से कहा अगर हममें किसी को ऐसा इत्तिफ़ाक़ हो तो वो क्या करें? उन्होंने कहा कि जैसा आँहज़रत (ﷺ) ने किया वैसा करें। लोगों ने कहा तो मुक़्तदी इमाम का इन्तिज़ार खड़े रहकर करते रहे या बैठ जाये। उन्होंने कहा अगर तकबीर तहरीमा हो चुकी है तो खड़े खड़े इन्तिज़ार करें वर्ना बैठ जाने में कोई क़बाहत नहीं है।

बाब 26 : आदमी यूँ कहे कि हमने नमाज़ नहीं पढ़ी तो इस तरह कहने में कोई क़बाहत नहीं है

٢٦- بَابُ قَوْلِ الرَّجُلِ: مَا صَلَّيْنَا

(641) हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे शैबान ने यह्या के वास्ते से बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने अबू सलमा से सुना, वो कहते थे कि हमें जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अंसारी (रज़ि.) ने ख़बर दी कि नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ग़ज़्व-ए-ख़ंदक़ के दिन हाज़िर हुए और कहा कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! क़सम अल्लाह की सूरज ग़ुरूब होने को ही था कि मैं अब अ़स्र की नमाज़ पढ़ सका हूँ। आप जब हाज़िरे

٦٤١- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيمٍ قَالَ: حَدَّثَنَا شَيْبَانُ عَنْ يَحْيَى قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا سَلَمَةَ يَقُولُ: أَخْبَرَنَا جَابِرُ بْنُ عَبْدِ اللهِ: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ جَاءَهُ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ يَوْمَ الْخَنْدَقِ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ ﷺ، وَاللهِ مَا كِدْتُ أَنْ أُصَلِّيَ حَتَّى كَادَتِ الشَّمْسُ تَغْرُبُ،

सुबह शाम बार-बार हाज़िरी देता है। अल्लाह तआला जन्नत में उसकी मेहमानी का सामान करेगा। वो सुबह शाम जब भी मस्जिद में जाएगा।

قَالَ: ((مَنْ غَدَا إِلَى الْمَسْجِدِ وَرَاحَ أَعَدَّ اللهُ لَهُ نُزُلَهُ مِنَ الْجَنَّةِ كُلَّمَا غَدَا أَوْ رَاحَ)).

बाब 38 : जब नमाज़ की तक्बीर होने लगे तो फ़र्ज़ नमाज़ के सिवा और कोई नमाज़ नहीं पढ़ सकता

٣٨- بَابُ إِذَا أُقِيْمَتِ الصَّلاَةُ فَلاَ صَلاَةَ إِلاَّ الْمَكْتُوبَةَ

(663) हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा कि हमसे इब्राहीम बिन सअ़द ने अपने बाप सअ़द बिन इब्राहीम से बयान किया, उन्होंने ह़फ़्स़ बिन आ़सिम से, उन्होंने अ़ब्दुल्लाह बिन मालिक बिन बुहैना से, कहा कि नबी करीम (ﷺ) का गुज़र एक शख़्स़ पर हुआ (दूसरी सनद) इमाम बुख़ारी (रह.) ने कहा कि मुझसे अ़ब्दुर्रहमान बिन बिश्र ने बयान किया, कहा कि हमसे बह्ज़ बिन असद ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअ़बा ने बयान किया, कहा कि मुझे सअ़द बिन इब्राहीम ने ख़बर दी, कहा कि मैंने ह़फ़्स़ बिन आ़सिम से सुना, कहा कि मैंने क़बीला अज़्द के एक स़ाहब से जिनका नाम मालिक बिन बुहैना (रज़ि.) था, सुना कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की नज़र एक ऐसे नमाज़ी पर पड़ी जो तक्बीर के बाद दो रकअ़त नमाज़ पढ़ रहा था। आँहुज़ूर (ﷺ) जब नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो लोग उस शख़्स़ के इर्द-गिर्द जमा हो गए और आँहुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया क्या सुबह की चार रकअ़तें पढ़ता है? क्या सुबह की चार रकअ़तें हो गईं? इस ह़दीष़ की मुताबअ़त ग़ुंदर और मुआ़ज़ ने शुअ़बा से की है जो मालिक से रिवायत करते हैं।

इब्ने इस्हाक़ ने सअ़द से, उन्होंने ह़फ़्स़ से, वो अ़ब्दुल्लाह बिन बुहैना से और ह़म्माद ने कहा कि हमें सअ़द ने ह़फ़्स़ के वास्ते से ख़बर दी और वो मालिक के वास्ते से।

٦٦٣- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيْزِ بْنُ عَبْدِ اللهِ قَالَ: حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيْمُ بْنُ سَعْدٍ عَنْ أَبِيْهِ عَنْ حَفْصِ بْنِ عَاصِمٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَالِكٍ ابْنِ بُحَيْنَةَ قَالَ: ((مَرَّ النَّبِيُّ ﷺ بِرَجُلٍ.)) ح قَالَ : وَحَدَّثَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ قَالَ: حَدَّثَنَا بَهْزُ بْنُ أَسَدٍ قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ: أَخْبَرَنِي سَعْدُ بْنُ إِبْرَاهِيْمَ قَالَ: سَمِعْتُ حَفْصَ بْنَ عَاصِمٍ قَالَ: سَمِعْتُ رَجُلاً مِنَ الأَزْدِ يُقَالُ لَهُ مَالِكُ ابْنُ بُحَيْنَةَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ رَأَى رَجُلاً وَقَدْ أُقِيْمَتِ الصَّلاَةُ يُصَلِّي رَكْعَتَيْنِ، فَلَمَّا انْصَرَفَ رَسُولُ اللهِ ﷺ لاَثَ بِهِ النَّاسُ، وَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((الصُّبْحَ أَرْبَعًا، الصُّبْحَ أَرْبَعًا)) تَابَعَهُ غُنْدَرٌ وَمُعَاذٌ عَنْ شُعْبَةَ عَنْ مَالِكٍ.
وَقَالَ ابْنُ إِسْحَاقَ: عَنْ سَعْدٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ ابْنِ بُحَيْنَةَ. وَقَالَ حَمَّادٌ: أَخْبَرَنَا سَعْدٌ عَنْ حَفْصٍ عَنْ مَالِكٍ.

तश्रीह : ह़ज़रत सय्यिदुना इमाम बुख़ारी (रह.) ने यहाँ जिन लफ़्ज़ों में बाब मुनअ़क़िद किया है ये लफ़्ज़ ही ख़ुद इस ह़दीष़ में वारिद हुआ है, जिसे इमाम मुस्लिम और सुनन वालों ने निकाला है। मुस्लिम बिन ख़ालिद की रिवायत में इतना ज़्यादा और है कि फ़ज्र की सुन्नतें भी न पढ़ें।

ह़ज़रत मौलाना वह़ीदुज्जमा स़ाहब मुह़द्दिष हैदराबादी (रह.) फ़र्माते हैं– हमारे इमाम अह़मद बिन ह़ंबल और अहले ह़दीष का यही क़ौल है कि जब फ़र्ज़ की तकबीर शुरू हो जाये तो फिर कोई नमाज़ न पढ़े न फ़ज्र की सुन्नतें न और कोई सुन्नत या फ़र्ज़, बस उसी फ़र्ज़ में शरीक हो जाये जिसकी तकबीर हो रही है।

और उसके हाथ में खाने की चीज़ हो तो वो क्या करे?

الصَّلَاةِ وَبِيَدِهِ مَا يَأْكُلُ

(675) हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा कि हमसे इब्राहीम बिन सअ़्द ने सालेह बिन कैसान से बयान किया, उन्होंने इब्ने शिहाब से, उन्होंने कहा कि मुझको जा'फ़र बिन अ़म्र बिन उमय्या ने ख़बर दी कि उनके बाप अ़म्र बिन उमय्या ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को देखा कि आप बकरी की रान का गोश्त काट—काटकर खा रहे थे। इतने में आप नमाज़ के लिए बुलाए गए। आप खड़े हो गए और छुरी डाल दी, फिर आपने नमाज़ पढ़ाई और वुज़ू नहीं किया। (राजेअ : 208)

٦٧٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللهِ قَالَ: حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ عَنْ صَالِحٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي جَعْفَرُ بْنُ عَمْرِو بْنِ أُمَيَّةَ أَنَّ أَبَاهُ قَالَ: رَأَيْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَأْكُلُ ذِرَاعًا يَحْتَزُّ مِنْهَا، فَدُعِيَ إِلَى الصَّلَاةِ فَقَامَ فَطَرَحَ السِّكِّينَ فَصَلَّى وَلَمْ يَتَوَضَّأْ. [راجع: ٢٠٨]

तश्रीह : इस बाब और इसके तहत इस ह़दीष के लाने से ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रज़ि.) को ये षाबित करना मन्ज़ूर है कि पिछली ह़दीष का हुक्म इस्तिहबाबन था वुजूबन न था वर्ना आँह़ज़रत (ﷺ) खाना छोड़कर नमाज़ के लिए क्यों जाते। बाज़ कहते हैं इमाम का हुक्म अलग है उसे खाना छोड़कर नमाज़ के लिये जाना चाहिए। हदीष से ये भी षाबित हुआ कि गोश्त खाने से वुज़ू नहीं टूटता।

बाब 44 : उस आदमी के बारे में जो अपने घर के कामकाज में मस्रूफ़ था कि तक्बीर हुई और वो नमाज़ के लिए निकल खड़ा हुआ

٤٤- بَابُ مَنْ كَانَ فِي حَاجَةِ أَهْلِهِ فَأُقِيمَتِ الصَّلَاةُ فَخَرَجَ

(676) हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअ़बा ने बयान किया, कहा हमसे ह़कम बिन उ़त्बा ने इब्राहीम नख़ई से बयान किया, उन्होंने अस्वद बिन ज़ैद से, उन्होंने कहा कि मैंने ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) से पूछा कि रसूलल्लाह (ﷺ) अपने घर में क्या—क्या करते रहे थे। आपने बताया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) अपने घर के काम—काज यानी अपने घरवालियों की मदद किया करते थे और जब नमाज़ का वक़्त होता तो फ़ौरन (काम—काज छोड़कर) नमाज़ के लिए चले जाते थे। (दीगर मक़ाम : 5363, 6039)

٦٧٦- حَدَّثَنَا آدَمُ قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ: حَدَّثَنَا الْحَكَمُ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنِ الأَسْوَدِ قَالَ : سَأَلْتُ عَائِشَةَ مَا كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَصْنَعُ فِي بَيْتِهِ؟ قَالَتْ: كَانَ يَكُونُ فِي مِهْنَةِ أَهْلِهِ - تَعْنِي فِي خِدْمَةِ أَهْلِهِ - فَإِذَا حَضَرَتِ الصَّلَاةُ خَرَجَ إِلَى الصَّلَاةِ. [طرفاه في : ٥٣٦٣، ٦٠٣٩].

बाब 45 : कोई शख़्स सिर्फ़ ये बतलाने के लिए कि आँह़ज़रत (ﷺ) नमाज़ क्यूँकर पढ़ा करते थे और आपका त़रीक़ा क्या था नमाज़ पढ़ाए तो कैसा है?

٤٥- بَابُ مَنْ صَلَّى بِالنَّاسِ وَهُوَ لَا يُرِيدُ إِلَّا أَنْ يُعَلِّمَهُمْ صَلَاةَ النَّبِيِّ ﷺ وَسُنَّتَهُ

(677) हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा कि हमसे वुहैब बिन ख़ालिद ने बयान किया, कहा कि हमसे अय्यूब सुख़्तियानी ने अबू क़िलाबा अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ैद से बयान किया, उन्होंने कहा कि मालिक बिन हुवैरिष़ (सह़ाबी) एक बार हमारी

٦٧٧- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ: حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ قَالَ: حَدَّثَنَا أَيُّوبُ عَنْ أَبِي قِلَابَةَ قَالَ: جَاءَنَا مَالِكُ بْنُ الْحُوَيْرِثِ فِي

مَسْجِدِنَا هَذَا فَقَالَ: إِنِّي لأُصَلِّي بِكُمْ وَمَا أُرِيدُ الصَّلاَةَ، أُصَلِّي كَيْفَ رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ يُصَلِّي. فَقُلْتُ لأَبِي قِلاَبَةَ: كَيْفَ كَانَ يُصَلِّي؟ قَالَ: مِثْلَ شَيْخِنَا هَذَا، قَالَ: وَكَانَ شَيْخُنَا يَجْلِسُ إِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ السُّجُودِ قَبْلَ أَنْ يَنْهَضَ فِي الرَّكْعَةِ الأُولَى.

[أطرافه في : ٨٠٢، ٨١٨، ٨٢٤].

इस मस्जिद में आए और फ़र्माया कि मैं तुम लोगों को नमाज़ पढ़ाऊँगा और मेरी निय्यत नमाज़ की नहीं है। मेरा मक़सद ये है कि तुम्हें नमाज़ का वो तरीक़ा सीखा दूँ जिस तरीक़े से नबी (ﷺ) नमाज़ पढ़ा करते थे। मैंने अबू क़िलाबा से पूछा कि उन्होंने किस तरह नमाज़ पढ़ी थी? उन्होंने बताया कि हमारे शैख़ (उ़मर बिन सलमा) की तरह। शैख़ जब सज्दे से सर उठाते तो ज़रा बैठ जाते फिर खड़े होते।

(दीगर मक़ाम : 802, 818, 824)

तश्रीह : दूसरी या चौथी रकअ़त के लिए थोड़ी देर बैठकर उठना ये जल्स-ए-इस्तिराह़त कहलाता है। इसी का ज़िक्र इस ह़दीष में आया है। **'क़ालल हाफ़िज़ु फिल फ़तहि व फ़ीहि मश्रूइय्यतुन जल्सतुल इस्तिराहति व अख़ज़ बिहिश्शाफ़िइ व ताइफ़तुम्मिन अहलिल हदीषि'** यानी फ़तहुल बारी में ह़ाफ़िज़ इब्ने हजर ने फ़र्मायाा कि इस ह़दीष से जल्स-ए-इस्तिराह़त की मशरुइय्यत षाबित हुई और इमाम शाफ़िई (रह.) और अहले ह़दीष की एक जमाअ़त का इसी पर अ़मल है।

मगर अह़नाफ़ ने जल्स–ए–इस्तिराहत का इन्कार किया है। चुनान्चे एक जगह लिखा हुआ है– 'ये जल्स–ए–इस्तिराहत है और ह़नफ़िया के यहाँ बेहतर है कि ऐसा न किया जाए।' (तफ़्हीमुल बुख़ारी, सः81)

आगे यही ह़ज़रत अपने इस ख़्याल की खुद ही तर्दीद फ़र्मा रहे हैं चुनान्चे इर्शाद होता है, 'यहाँ ये भी मलहूज़ रहे कि इसमें इख़्तिलाफ़ सिर्फ़ अफ़्ज़लियत की ह़द तक है।'

जिससे साफ जाहिर है कि आप इसे जवाज़ के दर्जे में मानते हैं। फिर ये कहना कहाँ तक दुरुस्त है कि बाद में इस पर अमल तर्क हो गया था। हम इस बह़ष को तूल देना नहीं चाहते सिर्फ मौलाना अब्दुल हई स़ाह़ब ह़नफ़ी लखनवी का तबस़रा नक़ल कर देते हैं आप लिखतेहैं– **'इअ़लम अन्न अक्षर अस़्हाबिनल हनफ़िय्यति व कषीरम्मिनल मशाइख़िस्सूफिय्यती क़द ज़करू फ़ी कैफ़िय्यति स़लातित्तस्बीहि अल कैफ़िय्यतल्लती हक़ाहत्तिर्मिज़ी वल हाकिम अन अ़ब्दिल्लाहिब्निल मुबारकि अल्ख़ालियतु अ़न जल्सतिल इस्तिराहति वश्शफ़िइय्यतु वल मुहद्दिषून अक्षरहुमुख़्तारुल कैफ़िय्यतल मुश्तमिलत अ़ला जल्सतिल इस्तिराहति व क़द उ़लिम हुमा अस्लफ्ना अन्नल असह्हु षु बूतन हुव हाज़िहिल कैफ़िय्यतु फ़ल्याख़ुज़ बिहा मंय्युस़ल्लीहा हनफ़िय्यन औ शाफ़िइय्यन'** (तुहफ़तुल अहवुज़ी) यानी जान लो कि हमारे अकषर अह़नाफ़ और मशाइख़े–सूफ़िया ने सलातुत्तस्बीह़ का ज़िक्र किया है जिसे तिर्मिज़ी और ह़ाकिम ने ह़ज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक से नक़ल किया है मगर उसमें जल्स–ए–इस्तिराह़त का ज़िक्र नहीं है। जबकि शाफ़िइय्यह और अकषर मुह़द्दिषीन ने जल्स–ए–इस्तिराह़त को मुख़्तार क़रार दिया है और हमारे बयाने गुज़िश्ता से ज़ाहिर है कि षुबूत के लिह़ाज़ से स़ह़ी यही है कि जल्स–ए–इस्तिराहत करना बेहतर है। पस कोई ह़नफ़ी हो या शाफ़िई उसे चाहिए कि जब भी वो सलाते तस्बीह पढ़े ज़रूर जल्स–ए–इस्तिराहत करे।

मुहद्दिषे कबीर अल्लामा अब्दुर्रह़मान स़ाह़ब मुबारकपूरी (रह.) फ़र्माते हैं– **'क़दिअतरज़ल हनफ़िय्यतु व ग़ैरहुम मल्लम यक़ुल बिजल्सतिल इस्तिराहति अ़निल अ़मलि बिहदीषि मालिकिब्नि लहुवैरिषिल मज़्कूरत फिल बाबि बिआज़ारिन कुल्लिहा बारिदतुन'** (तोहफतुल अहवुज़ी) यानी जो हजरात जल्स–ए–इस्तिराहत के काइल नहीं अहनाफ वग़ैरह उन्होंने मालिक बिन हुवैरिष (रज़ि.) की हदीष़, जो यहाँ तिर्मिज़ी में मज़कूर हुई है (और बुख़ारी शरीफ़ में भी क़ारेईन के सामने है) पर अ़मल करने से अनेक उ़ज़र पेश किए हैं जिनमें कोई जान नहीं है और जिनको उ़ज़्रे–बेजा ही कहना चाहिए। (मजीद तफ़सील के लिये तुहफतुल अहवजी का मुत़ालआ करना चाहिए)

बाब 55 : अगर इमाम अपनी नमाज़ को पूरा न करे और मुक़्तदी पूरा करें

٥٥- بَابُ إِذَا لَمْ يُتِمَّ الإِمَامُ وَأَتَمَّ مَنْ خَلْفَهُ

(694) हमसे फ़ज़ल बिन सहल ने बयान किया, कहा कि हमसे हसन बिन मूसा अश्यब ने बयान किया, कहा कि हमसे अ़ब्दुर्रहमान बिन अ़ब्दुल्लाह बिन दीनार ने बयान किया ज़ैद बिन असलम से, उन्होंने अ़ता बिन यसार से, उन्होंने हज़रत अबू हुरैरह

٦٩٤- حَدَّثَنَا الْفَضْلُ بْنُ سَهْلٍ قَالَ: حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ مُوسَى الأَشْيَبُ قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ دِينَارٍ

(रज़ि.) से कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि इमाम लोगों को नमाज़ पढ़ाते हैं। पस अगर इमाम ने ठीक नमाज़ पढ़ाई तो उसका ष़वाब तुम्हें मिलेगा और अगर ग़लती की तो भी (तुम्हारी नमाज़ का) ष़वाब तुमको मिलेगा और ग़लती का वबाल उन पर रहेगा।

عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((يُصَلُّونَ لَكُمْ، فَإِنْ أَصَابُوا فَلَكُمْ، وَإِنْ أَخْطَأُوا فَلَكُمْ وَعَلَيْهِمْ)).

M-09825696131

यानी इमाम की नमाज़ में नुक्स रह जाने से मुक़्तदियों की नमाज़ में कोई ख़लल न होगा जब उन्होंने तमाम शरायत और अरकान को पूरा किया हो।

बाब 56 : बाग़ी और बिदअ़ती की इमामत का बयान

٥٦- بَابُ إِمَامَةِ الْمَفْتُونِ وَالْمُبْتَدِعِ

और बिदअ़ती के ब रे में इमाम हसन बस़री (रह.) ने कहा कि तू उसके पीछे नमाज़ पढ़ ले उसकी बिदअ़त उसके सर रहेगी।

وَقَالَ الْحَسَنُ : صَلِّ وَعَلَيْهِ بِدْعَتُهُ.

(695) इमाम बुख़ारी (रह.) ने कहा कि हमसे मुहम्मद बिन यूसुफ़ फ़र्याबी ने कहा कि हमसे इमाम औज़ाई ने बयान किया, कहा हमसे इमाम ज़ुहरी ने हुमैद बिन अ़ब्दुर्रहमान से नक़ल किया। उन्होंने उ़बैदुल्लाह बिन अ़दी बिन ख़ियार से कि वो ख़ुद हज़रत उ़ष्मान ग़नी (रज़ि.) के पास गए। जबकि बाग़ियों ने उनको घेर रखा था। उन्होंने कहा कि आप ही आ़म मुसलमानों के इमाम हैं मगर आप पर जो मुसीबत है वो आपको मा'लूम है। इन हालात में बाग़ियों का मुक़र्रर किया हुआ इमाम नमाज़ पढ़ा रहा है। हम डरते हैं कि उसके पीछे नमाज़ पढ़कर गुनहगार न हो जाएँ। हज़रत उ़ष्मान (रज़ि.) ने जवाब दिया नमाज़ तो जो लोग काम करते हैं उन कामों में सबसे ज़्यादा बेहतरीन काम है। तो वो जब अच्छा काम करें तुम भी उनके साथ मिलकर अच्छा काम करो और जब वो बुरा काम करें तो तुम उनकी बुराई से अलग रहो और मुहम्मद बिन यज़ीद ज़ुबैदी ने कहा कि इमाम ज़ुहरी ने फ़र्माया हम तो ये समझते हैं कि हिजड़े के पीछे नमाज़ न पढ़ें। मगर ऐसी ही लाचारी हो तो और बात है जिसके बग़ैर कोई चारा न हो।

٦٩٥- قَالَ أَبُو عَبْدِ اللهِ: وَقَالَ لَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا الأَوْزَاعِيُّ قَالَ حَدَّثَنَا الزُّهْرِيُّ عَنْ حُمَيْدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ عَدِيِّ بْنِ خِيَارٍ أَنَّهُ دَخَلَ عَلَى عُثْمَانَ بْنِ عَفَّانَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ وَهُوَ مَحْصُورٌ فَقَالَ : إِنَّكَ إِمَامُ عَامَّةٍ، وَنَزَلَ بِكَ مَا تَرَى، وَيُصَلِّي لَنَا إِمَامُ فِتْنَةٍ وَنَتَحَرَّجُ. فَقَالَ: الصَّلاَةُ أَحْسَنُ مَا يَعْمَلُ النَّاسُ، فَإِذَا أَحْسَنَ النَّاسُ فَأَحْسِنْ مَعَهُمْ، وَإِذَا أَسَاؤُوا فَاجْتَنِبْ إِسَاءَتَهُمْ. وَقَالَ الزُّبَيْدِيُّ: قَالَ الزُّهْرِيُّ: لاَ نَرَى أَنْ يُصَلَّى خَلْفَ الْمُخَنَّثِ إِلاَّ مِنْ ضَرُورَةٍ لاَ بُدَّ مِنْهَا.

तश्रीह : मफ़्तून का तर्जुमा बाग़ी किया है जो सच्चे बरहक़ इमाम से फिर जाये और बिदअ़ती से आम बिदअ़ती मुराद है ख्वाह उसकी बिदअ़त ए'तिक़ादी हो जैसे शीआ़, ख्वारिज, मुर्जिया, मुअतज़ला वग़ैरह की, ख्वाह अ़मली हो जैसे सेहरा बान्धने वाले, तीजा, दसवां करने वाले, ता'ज़िया या अ़लम उठाने वाले, क़ब्रों पर चराग़ां करने वाले, मीलाद या ग़िना या मरषिया की मजलिस करने वाले की, बशर्ते कि उनकी बिदआ़त कुफ़्र और शिर्क की हद तक न पहुँचे। अगर कुफ़्र या शिर्क के दर्जे पर पहुंच जाए तो उनके पीछे नमाज़ दुरुस्त नहीं। तसहील में हैं कि सुन्नत कहते हैं हदीष़ को और जमाअ़त से मुराद सहाबा और ताबेईन है जो लोग हदीष शरीफ़ पर चलते हैं और ए'तिक़ाद और अ़मल में सहाबा और ताबेईन के तरीक पर है वह अहले सुन्नत वल जमाअ़त है बाक़ी सब बिदअ़ती हैं। (मौलाना वहीदुज़्ज़मा)

बाब 75 : इस बारे में कि सफ़ें पूरी न करने वालों पर (कितना गुनाह है)

٧٥- بَابُ إِثْمِ مَنْ لَمْ يُتِمَّ الصُّفُوفَ

(724) हमसे मुआज़ बिन असद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे फ़ज़ल बिन मूसा ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सईद बिन उबैद ताई ने बयान किया बिश्र बिन यसार अंसारी से, उन्होंने हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) से कि जब वो (बसरा से) मदीना आए, तो आपसे पूछा गया कि नबी करीम (ﷺ) के अहदे मुबारक और हमारे इस दौर में आपने क्या फ़र्क़ पाया। फ़र्माया कि और तो कोई बात नहीं सिर्फ़ लोग सफ़ें बराबर नहीं करते।

٧٢٤- حَدَّثَنَا مُعَاذُ بْنُ أَسَدٍ قَالَ: أَخْبَرَنَا الْفَضْلُ بْنُ مُوسَى قَالَ: أَخْبَرَنَا سَعِيْدُ بْنُ عُبَيْدٍ الطَّائِيُّ عَنْ بُشَيْرِ بْنِ يَسَارٍ الأَنْصَارِيِّ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ: أَنَّهُ قَدِمَ الْمَدِيْنَةَ، فَقِيْلَ لَهُ، مَا أَنْكَرْتَ مِنَّا مُنْذُ يَوْمَ عَهِدْتَ رَسُولَ اللهِ ﷺ؟ قَالَ: مَا أَنْكَرْتُ شَيْئًا إِلاَّ أَنَّكُمْ لاَ تُقِيْمُونَ الصُّفُوفَ.

और उक़्बा बिन उबैद ने बशीर बिन यसार से यूँ रिवायत किया कि अनस (रज़ि.) हमारे पास मदीना आए। फिर यही हदीष़ बयान की।

وَقَالَ عُقْبَةُ بْنُ عُبَيْدٍ عَنْ بُشَيْرِ بْنِ يَسَارٍ: قَدِمَ عَلَيْنَا أَنَسُ الْمَدِيْنَةِ.. بِهَذَا.

तश्रीह : इमाम बुख़ारी (रह.) ने ये हदीष लाकर सफ़ बराबर करने का वुजूब षाबित किया क्योंकि सुन्नत के तर्क को हज़रत रसूले करीम (ﷺ) के ख़िलाफ़ करना नहीं कह सकते और हज़रत रसूले करीम (ﷺ) के ख़िलाफ़ करना क़ुर्आन की रोशनी में सज़ा का मुस्तहिक़ होगा। **'फ़ल्यहज़रिल्लज़ीन युख़ालिफ़ून अन अम्रिही अन तुसीबहुम फ़ित्नतुन औ युसीबुहुम अज़ाबन अलीमुन'** (सूरह नूर : 63) तसहीलुल क़ारी में ह कि हमारे ज़माने में लोगों ने सुन्नत के मुवाफ़िक़ सफ़ें बराबर करना छोड़ दी है। कहीं तो ऐसा होता है कि आगे पीछे बेतरतीब खड़े होते हैं, कहीं बराबर भी करते हैं तो मोंढे से मोंढा और टखने से टखना नहीं मिलाते बल्कि ऐसा करने को नाज़ैबा जानते हैं। ख़ुदा की मार उनकी शक्लऔर तहज़ीब पर। नमाज़ी लोग परवरदिगार की फ़ौज हैं। फ़ौज में जो कोई क़ायदे की पाबन्दी न करे वो सख़्त सज़ा के क़ाबिल होता है। (मौलाना वहीदुज़्ज़मा मरहूम)

बाब 76 : सफ़ में मोंढा और क़दम से क़दम मिलाकर खड़े होने का बयान

٧٦- بَابُ إِلْزَاقِ الْمُنْكِبِ بِالْمُنْكِبِ وَالْقَدَمِ بِالْقَدَمِ فِي الصَّفِّ

और नोअमान बिन बशीर सहाबी ने कहा कि मैंने देखा (सफ़ में) एक आदमी हममें से अपना टख़ना अपने पास वाले दूसरे आदमी के टख़ने से मिलाकर खड़ा होता।

وَقَالَ النُّعْمَانُ بْنُ بَشِيْرٍ : رَأَيْتُ الرَّجُلَ مِنَّا يُلْزِقُ كَعْبَهُ بِكَعْبِ صَاحِبِهِ.

(725) हमसे अम्र बिन ख़ालिद ने बयान किया, कहा कि हमसे ज़ुहैर बिन मुआविया ने हमीद से बयान किया, उन्होंने हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) से, उन्होंने नबी अकरम (ﷺ) से कि आपने फ़र्माया, सफ़ें बराबर कर लो। मैं तुम्हें अपने पीछे से भी देखता रहता हूँ और हममें से हर शख़्स ये करता कि (सफ़ में)

٧٢٥- حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ خَالِدٍ قَالَ: حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ عَنْ حُمَيْدٍ عَنْ أَنَسٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ : ((أَقِيْمُوا صُفُوفَكُمْ، فَإِنِّي أَرَاكُمْ مِنْ وَرَاءِ ظَهْرِيْ. وَكَانَ أَحَدُنَا يُلْزِقُ

अपना मोंढा अपने साथी के मोंढे से और अपना क़दम उसके क़दम से मिलाता था। (राजेअ : 718)

مَنْكِبَهُ بِمَنْكِبِ صَاحِبِهِ وَقَدَمَهُ بِقَدَمِهِ)).

[راجع: ٧١٨]

तश्रीह : हज़रत इमामुद्दुन्या फ़िल हदीष इमाम बुख़ारी (रह.) ने यहाँ मुतफ़र्रिक़ अबवाब मुनअक़िद फ़र्माकर और उनके तहत अनेक अहादीष लाकर सफ़ों को सीधा करने की अहमियत पर रोशनी डाली है। इस सिलसिले का ये आख़री बाब है जिसमें आपने बतलाया है कि सफ़ों की सीधी करने का मतलब ये है कि सफ़ में हर नमाज़ी अपने करीब वाले नमाज़ी के मोंढे से मोंढा और क़दम से क़दम और टख़ने से टख़ना मिलाकर खड़ा हो जैसा कि हज़रत नोअमान बिन बशीर (रज़ि.) का बयान नक़ल हुआ कि हम अपने साथी के टख़ने से टख़ना मिलाकर खड़े हुआ करते थे। हज़रत अनस (रज़ि.) का बयान भी मौजूद है।

नीज़ फ़तहुलबारी, जिल्द 2/सः 176 पर हज़रत अनस (रज़ि.) ही के ये अल्फ़ाज़ भी मन्क़ूल है कि **'लौ फ़अलतु ज़ालिक बिअहदिहिमिल यौम लि नफ़र कअन्नहू बग़लुन शमूसुन'** अगर मैं आज के नमाज़ियों के साथ क़दम से क़दम और टखने से टख़ना मिलाने की कोशिश करता हूँ तो वो इससे सरकश खच्चर की तरह दूर भागते हैं। इससे मा'लूम होता है कि अहदे सहाबा के खत्म होते होते मुसलमान इस दर्जा ग़ाफ़िल होने लगे थे कि हिदायते नबवी के मुताबिक़ सफ़ों को सीधा करने और क़दमों से क़दम मिलाने का अमल एक अजनबी अमल बनने लग गया था। जिस पर हज़रत अनस (रज़ि.) को ऐसा कहना पड़ा। इस बारे में और भी कई अहादीष वारिद हुई हैं,

'रवा अबू दाऊद वल इमामु अहमद अनिब्नि उमर अन्नहू अलैहिस्सलातु वस्सलाम क़ाल अक़ीमू सुफ़ूफ़कुम व हाज़ू बैनल मनाकिबि व सद्दुलख़िलल व लय्यिनू बिअयदी इख़्वानिकुम ला तज़िरु फ़ुरूजातिश्शैतानि मन वसल सफ़्फ़न व वसलहुल्लाहु व मन क़तअ सफ़्फ़न क़तअहुल्लाहु व रवल्बज़्ज़ारु बिइस्नादिन हसनिन अन्हु अलैहिस्सलातु वस्सलाम मन सद्द फ़ुर्जतम्मिनस्सफ़्फ़ि ग़फ़रल्लाहु लहू व फ़ी अबी दाऊद अन्हु अलैहिस्सलातु वस्सलाम क़ाल खियारुकुम अल्यनुकुम मनाकिब फ़िस्सलाति' यानी अबू दाऊद और मुसनद अहमद में अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) से मरवी है कि आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि सफ़ें सीधी करो और कन्धों को बराबर करो। यानी कन्धे से कन्धा मिलाकर खड़े हो जाओ और जो सुराख़ दो नमाज़ियों के दर्मियान नज़र आये उसे बन्द कर दो और अपने भाईयों के साथ नर्मी इख़्तियार करो और शैतान के घुसने के लिये सुराख़ की जगह न छोड़ो। याद रखो जिसने सफ़ को मिलाया अल्लाह उसको भी मिला देगा और जिसने सफ़ को क़तअ किया ख़ुदा उसको भी काट देगा। बज़्ज़ार में सनद हसन से है कि जिसने सफ़ की दरार को बन्द किया अल्लाह उसको बख़्शे। अबू दाऊद में ह कि तुममें वही बेहतर है जो नमाज़ में कन्धों को नरमी के साथ मिलाये रखे।

'व अनिन्नुअमानिब्नि बशीरिन क़ाल कान रसूल ﷺ युसव्वी सुफ़ूफ़ना कअन्नमा युसव्वी बिहिलक़दाहु हत्ता राअ इन्न क़द अक़ल्ना अन्हु षुम्म ख़रज यौमन फ़क़ाम हत्ता क़ाद अंय्युकब्बिर फ़राअ रजुलन बादियन सदरहू मिनस्सफ़्फ़ि फ़क़ाल इबादल्लाहि लतुसव्वुन सुफ़ूफ़कुम औ लियुख़ालिफ़न्नल्लाहु बैन वुजूहिकुम रवाहुल जमाअतु इल्लल बुख़ारी फ़इन्न लहू मिन्हु लतुसव्वुन सुफ़ूफ़कुम औ लयुख़ालिफ़न्नल्लाहु बैन वुजूहिकुम व लि अहमद व अबी दाऊद फ़ी रिवायतिन क़ाल फ़राइतुर्रजुल युल्ज़िक़ु कअबहू बिकअबि साहिबिही व रुक्बतहू बिरुक्बतिही व मन्कबहू बिमन्किबिही' (नैलुल औतार जिल्द 3 स. 199)

यानी नोअमान बिन बशीर से रिवायत है कि रसूले करीम (ﷺ) हमारी सफ़ों को इस तरह सीधा कराते, गोया उसके साथ तीर को सीधा किया जायेगा। यहाँ तक कि आपको इत्मीनान हो गया कि हमने इस मसले को आपसे खूब समझ लिया है। एक दिन आप मुसल्ला पर तशरीफ़ लाये और एक आदमी को देखा कि उसका सीना सफ़ से बाहर निकला हुआ है। आपने फ़र्माया, अल्लाह के बन्दों! अपनी सफ़ों को बराबर कर लो वर्ना अल्लाह तआला तुम्हारे बाहमी तौर पर इख़्तिलाफ़ डाल देगा। बुख़ारी शरीफ़ में यूँ कि अपनी सफ़ों को बिल्कुल बराबर कर लिया करो। वर्ना तुम्हारे चेहरों में आपस में अल्लाह मुख़ालफ़त डाल देगा और अहमद और अबू दाऊद की रिवायत में है मैंने देखा कि हर नमाज़ी अपने साथी के कन्धे से कन्धा और क़दम से क़दम और टख़ने से टख़ना मिलाया करता था।

(734) हमसे अबुल यमान ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें शुऐब ने ख़बर दी, उन्होंने कहा कि अबुज़्ज़िनाद ने मुझसे बयान किया अअ़रज के वास्ते से, उन्होंने हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, इमाम इसलिए है कि उसकी पैरवी की जाए, इसलिए जब वो तक्बीर कहे तो तुम भी तक्बीर कहो। जब वो रुकूअ करे तो तुम भी रुकूअ करो और जब वो समिअ़ल्लाहु लिमन हमिदह कहे तो तुम रब्बना व लकल हम्द कहो और जब वो सज्दा करे तो तुम भी सज्दा करो और जब वो बैठकर नमाज़ पढ़े तो तुम सब भी बैठकर नमाज़ पढ़ो।

(राजेअ़ : 722)

٧٣٤- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ: أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبُو الزِّنَادِ عَنِ الأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِنَّمَا جُعِلَ الإِمَامُ لِيُؤْتَمَّ بِهِ، فَإِذَا كَبَّرَ فَكَبِّرُوا، وَإِذَا رَكَعَ فَارْكَعُوا، وَإِذَا قَالَ: سَمِعَ اللهُ لِمَنْ حَمِدَهُ فَقُولُوا: رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ، وَإِذَا سَجَدَ فَاسْجُدُوا، وَإِذَا صَلَّى جَالِسًا فَصَلُّوا جُلُوسًا أَجْمَعُونَ)). [راجع: ٧٢٢]

तश्रीह : इस बारे में भी क़दरे इख़्तिलाफ़ है बेहतर यही है कि इमाम व मुक़्तदी दोनों **समिअ़ल्लाहु लिमन हमिदह** कहें और फिर दोनों **रब्बना व लकल हम्द** कहें। हज़रत मौलाना उबैदुल्लाह साहब शैख़ुल हदीष मुबारकपुरी हदीषे अबू हुरैरह (रज़ि.) **'षुम्मा यक़ूलु समिअ़ल्लाहु लिनन हमिदहू हीन यर्फ़उ सुल्बहू मिनर्रक्अ़ति षुम्मा यक़ूलु व हुम क़ाइमुन रब्बना व लकल हम्द'** के तहत फ़र्माते हैं।

'रब्बना लकल हम्दु बिहज़्फ़िल्वावि व फ़ी रिवायतिन बिइष्बातिहा व क़द तक़द्दम अन्नर्रिवायत बिषुबूतिल वावि अर्जहू व हिय आतिफ़तुन अला मुक़द्दरिन अय रब्बना अतअ़नाक व हमदनाक व लकल हम्दु व क़ील ज़ाइदतुन क़ालल अस्मई सअलतु अबा अम्रिन मिन्हा फ़क़ाल ज़ाइदतुन तक़ूलुल अ़रबु यअ़नी हाज़ा फ़यक़ूलुल मुख़ातबु नअ़म व हुव लक बिदिरहमिन फ़ल्वावु ज़ाइदतुन व क़ील हिय वावुल हालि क़ालहुब्नुल अषीर व ज़अ़अफ़ मा अदाहू व फ़ीहि अन्नत्तस्मीअ ज़िक्रुन्नुहूज़ि वर्रफ़्इ वत्तहमीदु ज़िक्रुल इअ़तिदालि वस्तुदिल्ल बिही अला अन्नहू युशरिउल जम्अ बैनत्तस्मीइ वत्तहमीदि लिकुल्लि मुस़ल्लिन मिन इमामिन व मुन्फ़रिदिन व मुतमिन इज़ हुव हिक़ायतु लिमुतलक़ि सलातिही ﷺ' (मिर्आतुल मफ़ातीह जि: 1/स:559) **रब्बना लकद हम्द** हज़्फ़े वाव के साथ और बाज़ रिवायात में **इष्बाते वाव** के साथ मरवी है और तरजीह **इष्बाते वाव** को ही है जो **वावे–अत्फ़** है और मअ़तूफ़ अलैह मुक़द्दर है। यानी ऐ रब हमारे! हमने तेरी इताअ़त की, तेरी ता'रीफ़ की और ता' रीफ़ तेरे ही लिए है। बाज़ लोगों ने अ़रब के मुहावरे के मुताबिक़ इसे **वावे ज़ाइद** भी कहा है। बाज़ ने वाव हाल के लिए माना है, इस हदीष अबू हुरैरह (रज़ि.) से मा'लूम हुआ कि **समिअ़ल्लाहु लिमन हमिदह** कहना, ये रुकूअ में झुकने और इससे सर उठाने का ज़िक्र है और **रब्बना व लकल हम्द** कहना ये खड़े होकर ए'तिदाल पर आ जाने के वक़्त का ज़िक्र है। इसीलिए मशरुअ़ है कि इमाम हो या मुक़्तदी या मुनफ़रिद सब ही **समिअ़ल्लाहु लिमन हमिदह** फिर **रब्बना व लकल हम्द** कहें। इसलिये कि हज़रत (ﷺ) की नमाज़ इसी तरह नक़ल की गई है और आपका इर्शाद है कि तुम उसी तरह नमाज़ पढ़ो जैसे तुमने मुझको पढ़ते हुए देखा है।

बाब तक्बीरे तह़रीमा में नमाज़ शुरू करते ही बराबर दोनों हाथों का (कँधों या कानों तक) उठाना

٨٣- بَابُ رَفْعِ الْيَدَيْنِ فِي التَّكْبِيرَةِ الأُولَى مَعَ الافْتِتَاحِ سَوَاءً

(735) हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुस्लिमा ने बयान किया, उन्होंने इमाम मालिक से, उन्होंने इब्ने शिहाब ज़ुहरी से, उन्होंने सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह से, उन्होंने अपने बाप (अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) से कि रसूलल्लाह नमाज़ शुरू करते वक़्त अपने दोनों

٧٣٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ عَنْ مَالِكٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ سَالِمِ بْنِ عَبْدِ اللهِ عَنْ أَبِيهِ: (أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ كَانَ

हाथों को मोंढों तक उठाते, उसी तरह जब रुकूअ के लिए अल्लाहु अकबर कहते और जब अपना सर रुकूअ से उठाते तो दोनों हाथ भी उठाते और रुकूअ से सर मुबारक उठाते हुए समिअल्लाहुलिमन हमिदह रब्बना व लकल हम्द कहते थे। सज्दे में जाते वक़्त रफ़उल यदैन नहीं करते थे।

(दीगर मक़ाम : 736, 738, 739)

يَرْفَعُ يَدَيْهِ حَذْوَ مَنْكِبَيْهِ إِذَا افْتَتَحَ الصَّلاَةَ، وَإِذَا كَبَّرَ لِلرُّكُوعِ، وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ رَفَعَهُمَا كَذَلِكَ أَيْضًا وَقَالَ: ((سَمِعَ اللهُ لِمَنْ حَمِدَهُ رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ)). وَكَانَ لاَ يَفْعَلُ ذَلِكَ فِي السُّجُودِ.

[أطرافه في : ٧٣٦، ٧٣٨، ٧٣٩].

बाब 84 : रफ़उल यदैन तक्बीरे तहरीमा के वक़्त, रुकूअ में जाते और रुकूअ से सर उठाते वक़्त (सुन्नत है)

٨٤- بَابُ رَفْعِ الْيَدَيْنِ إِذَا كَبَّرَ، وَإِذَا رَكَعَ، وَإِذَا رَفَعَ

(736) हमसे मुहम्मद बिन मुक़ातिल ने बयान किया, कहा कि हमको अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी। कहा कि हमको यूनुस बिन यज़ीद ऐली ने ज़ुह्री से ख़बर दी, उन्होंने कहा कि मुझे सालिम बिन अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) से ख़बर दी, उन्होंने बतलाया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को देखा कि जब आप नमाज़ के लिए खड़े हुए तो तक्बीरे तहरीमा के वक़्त आपने रफ़उल यदैन किया। आपके दोनों हाथ उस वक़्त मोंढों तक उठे और उसी तरह जब आप रुकूअ के लिए तक्बीर कहते उस वक़्त भी रफ़उल यदैन करते और जब रुकूअ से सर उठाते उस वक़्त भी करते। उस वक़्त आप कहते समिअल्लाहु लिमन हमिदह। अलबत्ता सज्दे में आप रफ़उल यदैन नहीं करते थे। (राजेअ : 735)

٧٣٦- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مُقَاتِلٍ قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ الْمُبَارَكِ قَالَ : أَخْبَرَنَا يُونُسُ عَنْ الزُّهْرِيِّ أَخْبَرَنِي سَالِمُ بْنُ عَبْدِ اللهِ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: رَأَيْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ إِذَا قَامَ فِي الصَّلاَةِ رَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى تَكُونَا حَذْوَا مَنْكِبَيْهِ، وَكَانَ يَفْعَلُ ذَلِكَ حِيْنَ يُكَبِّرُ لِلرُّكُوعِ، وَيَفْعَلُ ذَلِكَ إِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ وَيَقُولُ: ((سَمِعَ اللهُ لِمَنْ حَمِدَهُ)) وَلاَ يَفْعَلُ ذَلِكَ فِي السُّجُودِ.

[راجع: ٧٣٥]

(737) हमसे इस्हाक़ बिन शाहीन वास्ती ने बयान किया, कहा कि हमसे ख़ालिद बिन अब्दुल्लाह तिहान ने बयान किया ख़ालिद हुज़्ज़ाअ से। उन्होंने अबू क़िलाबा से कि उन्होंने मालिक बिन हुवैरिष सहाबी को देखा कि जब वो नमाज़ शुरू करते तो तक्बीरे तहरीमा के साथ रफ़उल यदैन करते, फिर जब रुकूअ में जाते तो उस वक़्त भी रफ़उल यदैन करते और जब रुकूअ से सर उठाते तब भी करते और उन्होंने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) भी इसी

٧٣٧- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ الْوَاسِطِيُّ قَالَ: حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ عَنْ خَالِدٍ عَنْ أَبِي قِلاَبَةَ: أَنَّهُ رَأَى مَالِكَ بْنَ الْحُوَيْرِثِ إِذَا صَلَّى كَبَّرَ وَرَفَعَ يَدَيْهِ، وَإِذَا أَرَادَ أَنْ يَرْكَعَ رَفَعَ يَدَيْهِ، وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ رَفَعَ يَدَيْهِ، وَحَدَّثَ أَنَّ رَسُولَ

तरह किया करते थे।

اللهِ ﷺ صَنَعَ هَكَذَا.

बाब 85 : हाथों को कहाँ तक उठाना चाहिए

٨٥- بَابُ إِلَى أَيْنَ يَرْفَعُ يَدَيْهِ؟

और अबू हुमैद सअ़दी (रज़ि.) ने अपने साथियों से कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने अपने दोनों हाथों को मोंढों तक उठाया

وَقَالَ أَبُو حُمَيْدٍ فِي أَصْحَابِهِ: ((رَفَعَ النَّبِيُّ ﷺ حَذْوَ مَنْكِبَيهِ)).

(738) हमसे अबुल यमान हकम बिन नाफ़ेअ ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें शुऐब ने ज़ुह्री से ख़बर दी, उन्होंने कहा कि मुझे सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने ख़बर दी कि अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने कहा कि मैंने नबी करीम (ﷺ) को देखा कि आप नमाज़ तक्बीरे तहरीमा से शुरू करते और तक्बीर कहते वक़्त अपने दोनों हाथों को मोंढों तक उठा कर ले जाते और जब रुकूअ के लिये तक्बीर कहते तब भी उसी तरह करते और जब समिअ़ल्लाहु लिमन हमिदह कहते तब भी उसी तरह करते और रब्बना व लकल हम्द कहते। सज्दा करते वक़्त या सज्दा से सर उठाते वक़्त इस तरह रफ़उ़ल यदैन नहीं करते थे।

(राजेअ़ : 735)

٧٣٨- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ: أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي سَالِمُ بْنُ عَبْدِ اللهِ أَنَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ افْتَتَحَ التَّكْبِيرَ فِي الصَّلاَةِ فَرَفَعَ يَدَيْهِ حِينَ يُكَبِّرُ حَتَّى يَجْعَلَهُمَا حَذْوَ مَنْكِبَيهِ، وَإِذَا كَبَّرَ لِلرُّكُوعِ فَعَلَ مِثْلَهُ، وَإِذَا قَالَ: ((سَمِعَ اللهُ لِمَنْ حَمِدَهُ)) فَعَلَ مِثْلَهُ وَقَالَ: رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ، وَلاَ يَفْعَلُ ذَلِكَ حِينَ يَسْجُدُ وَلاَ حِينَ يَرْفَعُ رَأْسَهُ مِنَ السُّجُودِ.

[راجع: ٧٣٥]

बाब 86 : (चार रकअ़त नमाज़ में) क़अ़दा ऊला से उठने के बाद रफ़उ़ल यदैन करना

٨٦- بَابُ رَفْعِ الْيَدَيْنِ إِذَا قَامَ مِنَ الرَّكْعَتَيْنِ

(739) हमसे अ़याश बिन वलीद ने बयान किया, कहा कि हमसे अ़ब्दुल आ़ला बिन अ़ब्दुल आ़ला ने बयान किया, कहा कि हमसे उ़बैदुल्लाह उ़मरी ने नाफ़ेअ़ से बयान किया कि अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) जब नमाज़ में दाख़िल होते तो पहले तक्बीरे तहरीमा कहते और साथ ही रफ़उ़ल यदैन करते। इसी तरह जब वो रुकूअ़ करते तब और जब समिअ़ल्लाहु लिमन हमिदह कहते तब भी दोनों हाथों को उठाते और जब क़अ़द-ए-ऊला से उठते तब भी रफ़उ़ल यदैन करते। आपने इस काम को नबी करीम (ﷺ) तक पहुँचाया। (कि आँहज़रत ﷺ इसी तरह नमाज़ पढ़ा करते थे) (राजेअ़ : 735)

٧٣٩- حَدَّثَنَا عَيَّاشٌ قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الأَعْلَى قَالَ: حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ عَنْ نَافِعٍ: (أَنَّ ابْنَ عُمَرَ كَانَ إِذَا دَخَلَ فِي الصَّلاَةِ كَبَّرَ وَرَفَعَ يَدَيْهِ، وَإِذَا رَكَعَ رَفَعَ يَدَيْهِ، وَإِذَا قَالَ: سَمِعَ اللهُ لِمَنْ حَمِدَهُ رَفَعَ يَدَيْهِ، وَإِذَا قَامَ مِنَ الرَّكْعَتَيْنِ رَفَعَ يَدَيْهِ. وَرَفَعَ ذَلِكَ ابْنُ عُمَرَ إِلَى نَبِيِّ اللهِ ﷺ).

[راجع: ٧٣٥]

तश्रीह : तकबीरे तहरीमा के वक़्त और रुकूअ में जाते और रुकूअ से सर उठाते वक़्त और आख़री रकअ़त के

बाब 87 : नमाज़ में दायाँ हाथ बाएँ पर रखना

M-09825696131

٨٧- بَابُ وَضْعِ الْيُمْنَى عَلَى الْيُسْرَى فِي الصَّلاَةِ

(740) हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुस्लिमा क़अ़नी ने बयान किया इमाम मालिक (रह.) से, उन्होंने अबू हाज़िम बिन दीनार से, उन्होंने सहल बिन सअ़द (रज़ि.) से कि लोगों को हुक्म दिया जाता था कि नमाज़ में दायाँ हाथ बाईं कलाई पर रखें। अबू हाज़िम बिन दीनार ने बयान किया कि मुझे अच्छी तरह याद है कि आप उसे रसूलुल्लाह (ﷺ) तक पहुँचाते थे। इस्माईल बिन अबी उवैस ने कहा ये बात आँहज़रत (ﷺ) तक पहुँचाई जाती थी यूँ नहीं कहा कि पहुँचाते थे।

٧٤٠- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ عَنْ مَالِكٍ عَنْ أَبِي حَازِمٍ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ قَالَ: كَانَ النَّاسُ يُؤْمَرُونَ أَنْ يَضَعَ الرَّجُلُ يَدَهُ الْيُمْنَى عَلَى ذِرَاعِهِ الْيُسْرَى فِي الصَّلاَةِ. قَالَ أَبُو حَازِمٍ لاَ أَعْلَمُهُ إِلاَّ يَنْمِي، ذَلِكَ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ: قَالَ إِسْمَاعِيلُ: ((يُنْمَى ذَلِكَ)) وَلَمْ يَقُلْ ((يَنْمِي)).

तश्रीह : शैख़ुल ह़दीष़ ह़ज़रत मौलाना उ़बैदुल्लाह स़ाह़ब मद्दज़िल्लुहू फ़र्माते हैं, **'लम यज़्कुर सहलुब्नु सअ़दिन फ़ी ह़दीष़िही मह़ल्ल वज़्इल्यदैनि मिनल जसद्दि व हुव इन्दना अलस़्स़दरि लिमा वरद फ़ी ज़ालिक मिन अह़ादीष़ स़रीह़तिन क़विय्यतिन फ़मिन्हा ह़दीषु वाइलिब्नि हुज्र क़ाल स़ल्लैतु मअ़न्नबिय्यि ﷺ फ़वुज़ूअ यदहुल्युम्ना अ़ला यदिहिल्युस्रा अ़ला स़दरिही अख़्रजहुब्नु ख़ुज़ैमत फ़ी स़ह़ीह़िही ज़करहुल्हाफ़िज़ु बुलूग़ुल्मरामि वद्दिरायति वत्तल्ख़ीस़ि व फ़तहिल बारी वन्नववी फ़िल्ख़ुलास़ति व शर्ह़िल्मुहज़्ज़बि व शर्ह़ि मुस्लिम लिल इह़तिजाजि बिही अ़ला मा ज़हबत इलैहिश्शाफ़िइय्यतु मिन वज़्इल्यदैनि अलस़्स़दरि व ज़िक्रुहुमा हाज़ल ह़दीष़ फ़ी मअ़रज़िल इह़तिजाजि बिही सुकूतुहुमा अनिल कलामि फ़ीहि यदुल्लु अ़ला अन्न ह़दीष़ वाइलिन हाज़ाइन्दहुमा स़ह़ीह़ुन औ ह़सनुन क़ाबिलुन लिल्इह़तिजाजि अल्ख़'** (मिर्अ़ातुल मफ़ातीह़)

यानी ह़ज़रत सहल बिन सअ़द ने इस ह़दीष़ में हाथों के बाँधने की जगह का ज़िक्र नहीं किया और वो हमारे नज़दीक सीना है। जैसा कि इस बारे में कई अह़ादीष़े क़वी और स़रीह़ मौजूद हैं। जिनमें एक ह़दीष़ वाइल बिन हुज्र की है। वो कहते हैं कि मैंने आँहज़रत (ﷺ) के पीछे नमाज़ पढ़ी। आपने अपना दायाँ, हाथ बाएँ के ऊपर बाँधा और उनको सीने पर रखा। इस रिवायत को मुह़द्दिष़ इब्ने ख़ुज़ैमा ने अपनी स़ह़ीह़ में नक़ल किया है और ह़ाफ़िज़ इब्ने ह़जर ने अपनी किताब बुलूग़ुल मराम और दिराया और तल्ख़ीस़ और फ़त्हुल बारी मे ज़िक्र फ़र्माया है। और इमाम नववी (रह़) ने अपनी किताब ख़ुलास़ा और शरह़े मुहज़्ज़ब और शरह़े मुस्लिम में ज़िक्र किया है और शाफ़िय्या ने इसी से दलील पकड़ी है कि हाथों को सीने पर बाँधना चाहिए। ह़ाफ़िज़ इब्ने ह़जर और अ़ल्लामा नववी (रह़) ने इस बारे में ह़दीष़ से दलील ली है और इस ह़दीष़ की सनद में उन्होंने कोई कलाम नहीं किया, लिहाज़ा ये ह़दीष़ उनके नज़दीक स़ह़ीह़ या ह़सन हुज्जत पकड़ने के क़ाबिल है।

इस बारे में दूसरी दलील वो ह़दीष़ है जिसे इमाम अह़मद ने अपनी मुस्नदे अह़मद में रिवायत किया है। चुनाँचे फ़र्माते हैं, **'ह़द्दष़ना यह़्यब्नु सइदिन अन सुफ़्यान ह़द्दषना सम्माक अ़ न क़बीसा इब्नि हल्ब अ़न अबीहि क़ाल राइतु रसूलल्लाहि ﷺ यन्स़रिफ़ अन यमीनिही व अन यसरिही व राइतुहू यज़उ हाज़िही अ़ला स़दरिही व वस़फ़ यह़्या अल्युम्ना अलल युस्रा फ़ौ क़ल्मफ़्स़ लि व रुवातु हाज़ल ह़दीष़ि कु ल्लुहुम ष़िकातुन व इस्नादुहू मुत्तसिलुन'** (तुह़फ़तुल अह़्वुज़ी पेज नं. 216)

यानी हमसे यह़्या बिन सईद ने सुफ़यान ष़ौरी से बयान किया। वो कहते हैं कि हमसे सिमाक ने क़ुबैस़ा इब्ने वहब से बयान किया। वो अपने बाप से रिवायत करते हैं कि मैंने रसूले करीम (ﷺ) को देखा। आप अपने दाएँ और बाएँ जानिब सलाम

बाब 95 इमाम और मुक़्तदी के लिए क़िरअत का वाजिब होना, हज़र और सफ़र हर हालत में, सिर्री और जह्री सब नमाज़ों में

٩٥- بَابُ وُجُوبِ الْقِرَاءَةِ لِلإِمَامِ وَالْمَأْمُومِ فِي الصَّلَوَاتِ كُلِّهَا فِي الْحَضَرِ وَالسَّفَرِ، وَمَا يُجْهَرُ فِيهَا وَمَا يُخَافَتُ

क़िरअत से सूरह फ़ातिहा का पढ़ना मुराद है। जैसा कि अगली हदीस में आ रही है कि सूरह फ़ातिहा पढ़े बग़ैर नमाज़ नहीं होती

M-09825696131

(756) हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, कहा कि हमसे ज़ुहरी ने बयान किया महमूद बिन रबीआ़ से, उन्होंने हज़रत उ़बादा बिन स़ामित (रज़ि.) से कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, जिस शख़्स़ ने सूरह फ़ातिहा न पढ़ी उसकी नमाज़ नहीं हुई।

٧٥٦- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ: حَدَّثَنَا الزُّهْرِيُّ عَنْ مَحْمُودِ بْنِ الرَّبِيعِ عَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((لاَ صَلاَةَ لِمَنْ لَمْ يَقْرَأْ بِفَاتِحَةِ الْكِتَابِ)).

तश्रीह : इमाम के पीछे जहरी और सिर्री नमाज़ों में सूरह फ़ातिहा पढ़ना एक ऐसा मसला है जिसके षुबूत बहुत सी अहादीषे स़हीहा से षाबित है। बावजूद इस हक़ीक़त के फिर ये एक मअ़रका आरा बह्ष चली आ रही है। जिस पर बहुत सी किताबें लिखी जा चुकी हैं। जो हज़रात इसके क़ाइल नहीं है। उनमें कुछ का ग़ुलू तो यहाँ तक बढ़ा हुआ है कि वो इसे हरामे मुत्लक़ क़रार देते हैं और इमाम के पीछे सूरह फ़ातिहा पढ़ने वालों के बारे में यहाँ तक कह जाते हैं कि क़यामत के दिन उनके मुँह मे आग के अंगारे भरे जाएँगे। नऊ़ज़ुबिल्लाह मिन्हु। इसीलिए मुनासिब मा'लूम हुआ कि इस मसले की कुछ वज़ाहत कर दी जाए ताकि क़ाइलीन और मानेईन के दरम्यान निफ़ाक़ की ख़लीज़ कुछ न कुछ कम हो सके।

यहाँ हज़रत इमाम बुख़ारी (रह़) जो हदीष लाए हैं उसके ज़ेल में हज़रत मौलाना उ़बैदुल्लाह स़ाहब शैख़ुल हदीष मुबारकपुरी मद्दज़िल्लुहू फ़र्माते हैं,

'व सुम्मियत फ़ातिहतुल किताबि लिअन्नहू युब्दउ बिकिताबतिहा फ़िल्मुसाहिफ़ि व युब्दउ बिक़िरअतिहा फ़िस़्स़लाति व फ़ातिहतु कुल्लि शैइन मब्दउहूल्लज़ी युफ़्तहु बिही मा बअ़दहू इफ़्ततह फ़ुलानुन कज़ा इब्तदअ़ बिही क़ालब्नु ज़रीर फ़ी तफ़्सीरिही (जिल्द 1 स. 25) व सुम्मियत फ़ातितुल किताबि लिअन्नहा युफ़्ततहु बिकिताबतिहल मुसाहिफ़ व युक़्रा बिहा फ़िस़्स़लाति फ़हिय फ़वातिहु लिमा यतलूहा मिन सुवरिल क़ुर्आनि फिल किताबि वल किराति व सुम्मियत उम्मुल क़ुआनि लितक़दुमिहा अ़ला सुवरि साइरिल क़ुर्आनि ग़ैरहा व तअख़्ख़ुरा मा सिवाहा फ़िल क़िराति वल किताबति अल्ख़' (अल् मिर्आत जिल्द नं. पेज नं. 583)

ख़ुलास़ा इस इ़बारत का ये कि सूरह अल्हम्दु शरीफ़ का नाम फ़ातिहातुल किताब इसलिए रखा गया कि क़ुर्आन मजीद की किताबत इसी से शुरू होती है और नमाज़ में क़िरात की इब्तिदा भी इसी से की जाती है। अ़ल्लामा इब्ने जरीर ने भी अपनी तफ़्सीर में यही लिखा है। इसको उम्मुल क़ुर्आन इसलिए कहा गया कि किताबत और क़िरात मे ये इसकी तमाम सूरतों पर मुक़द्दम है और सारी सूरतें इसके बाद हैं। ये हदीष इस अम्र पर दलील है कि नमाज़ में सूरह फ़ातिहा फ़र्ज़ है और ये नमाज़ के अरकान में से है। जो इसे न पढ़े उसकी नमाज़ स़हीह न होगी। शाह वलीउल्लाह मुहद्दिष देह्लवी ने भी अपनी मशहूर किताब **हुज्जतुल्लाहिल बालिग़ा** (जिल्द 2 पेज नं. 4) पर इसे नमाज़ का अहम रुक्न तस्लीम किया है। इसलिए कि ये हदीष आम है। नमाज़ चाहे फ़र्ज़ हो चाहे नफ़्ल, और वो शख़्स़ इमाम हो या मुक़्तदी, या अकेला। यानी किसी शख़्स़ की कोई नमाज़ भी बग़ैर फ़ातिहा पढ़े नहीं होगी।

चुनाँचे मशहूर शारेहे बुख़ारी हज़रत अ़ल्लामा क़स्तलानी (रह़) शरह स़हीह बुख़ारी जिल्द 2 पेज नं. 439 में इस हदीष की वज़ाहत करते हुए लिखते हैं। **'अय फ़ी कुल्लि रकअ़तिन मुन्फ़रिदन औ इमामन औ मामूमन सवाउन असर्रल्इमामु औ जहर'** यानी इस हदीष का मक़्स़द ये है कि हर रकअ़त में (हर नमाज़ी को) ख़्वाह अकेला हो या इमाम, या मुक़्तदी, ख़्वाह आहिस्ता पढ़े या बुलन्द आवाज़ से सूरह फ़ातिहा पढ़ना ज़रूरी है।

नीज़ इसी त़रह अ़ल्लामा किरमानी (रह़) फ़र्माते हैं,

'व फ़िल हदीषि (अय हदीषु उ़बादत) दलीलुन अ़ला अन्न क़िरातल्फ़ातिहति वाजिबतुन अलल इमामि वल मुन्फ़रिदि वल मामूमि फ़िस़्स़लवाति कुल्लिहा' (उ़म्दतुल क़ारी शरह स़हीह बुख़ारी जिल्द नं. 3 पेज नं. 63) यानी हज़रत उ़बादा (रज़ि) की ये हदीष इस अम्र पर स़ाफ़ दलील है कि सूरह फ़ातिहा का पढ़ना इमाम और अकेले और मुक़्तदी सबके लिए तमाम नमाज़ों मे वाजिब है। नीज़ उ़म्दतुल क़ारी शरह स़हीह बुख़ारी जिल्द 3 पेज नं. 64 में लिखते हैं। हन्फ़ियों के मशहूर शारेह

(756) हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, कहा कि हमसे ज़ुहरी ने बयान किया मह्मूद बिन रबीअ़ा से, उन्होंने ह़ज़रत उ़बादा बिन स़ामित (रज़ि.) से कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, जिस शख़्स़ ने सूरह फ़ातिह़ा न पढ़ी उसकी नमाज़ नहीं हुई।

٧٥٦- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ: حَدَّثَنَا الزُّهْرِيُّ عَنْ مَحْمُودِ بْنِ الرَّبِيْعِ عَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((لاَ صَلاَةَ لِمَنْ لَمْ يَقْرَأْ بِفَاتِحَةِ الْكِتَابِ)).

तश्रीह़ : इमाम के पीछे जहरी और सिर्री नमाज़ों में सूरह फ़ातिह़ा पढ़ना एक ऐसा मसला है जिसके षुबूत बहुत सी अह़ादीषे स़ह़ीह़ा से षाबित है। बावजूद इस ह़क़ीक़त के फिर ये एक मअ़रका आरा बह्ष चली आ रही है। जिस पर बहुत सी किताबें लिखी जा चुकी हैं। जो ह़ज़रात इसके क़ाइल नहीं है। उनमें कुछ का ग़ुलू तो यहाँ तक बढ़ा हुआ है कि वो इसे ह़रामे मुत़्लक़ क़रार देते हैं और इमाम के पीछे सूरह फ़ातिह़ा पढ़ने वालों के बारे में यहाँ तक कह जाते हैं कि क़यामत के दिन उनके मुँह मे आग के अंगारे भरे जाएँगे। नऊ़ज़ुबिल्लाह मिन्हु। इसीलिए मुनासिब मा'लूम हुआ कि इस मसले की कुछ वज़ाह़त कर दी जाए ताकि क़ाइलीन और मानेईन के दरम्यान निफ़ाक़ की ख़लीज़ कुछ न कुछ कम हो सके।

यहाँ ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़) जो ह़दीष़ लाए हैं उसके ज़ेल में ह़ज़रत मौलाना उ़बैदुल्लाह स़ाह़ब शैख़ुल ह़दीष़ मुबारकपुरी मद्दज़िल्लुहू फ़र्माते हैं,

'व सुम्मियत फ़ातिहतुल किताबि लिअन्नहू युब्दउ बिकिताबतिहा फ़िल्मुसाहिफ़ि व युब्दउ बिक़िरअतिहा फ़िस्स़लाति व फ़ातिहतु कुल्लि शैइन मब्दउहूल्लज़ी युफ़्ततहु बिही मा बअ़दहू इफ़्ततह फ़ुलानुन कज़ा इब्तदअ बिही क़ालब्नु ज़रीर फ़ी तफ़्सीरिही (जिल्द 1 स. 25) व सुम्मियत फ़ातितुल किताबि लिअन्नहा युफ़्ततहु बिकिताबतिहल मुसाहिफ़ व युक़्रा बिहा फ़िस्स़लाति फ़हिय फ़वातिहु लिमा यतलूहा मिन सुवरिल क़ुर्आनि फिल किताबि वल किराति व सुम्मियत उम्मुल क़ुआनि लितक़द्दुमिहा अ़ला सुवरि साइरिल क़ुर्आनि ग़ैरहा व तअख़्ख़ुरा मा सिवाहा फ़िल क़िराति वल किताबति अल्ख़' (अल् मिर्आत जिल्द नं. पेज नं. 583)

ख़ुलास़ा इस इ़बारत का ये कि सूरह अल्ह़म्दु शरीफ़ का नाम फ़ातिह़ातुल किताब इसलिए रखा गया कि क़ुर्आन मजीद की किताबत इसी से शुरू होती है और नमाज़ में क़िरात की इब्तिदा भी इसी से की जाती है। अ़ल्लामा इब्ने जरीर ने भी अपनी तफ़्सीर में यही लिखा है। इसको उम्मुल क़ुर्आन इसलिए कहा गया कि किताबत और क़िरात मे ये इसकी तमाम सूरतों पर मुक़द्दम है और सारी सूरतें इसके बाद हैं। ये ह़दीष़ इस अम्र पर दलील है कि नमाज़ में सूरह फ़ातिह़ा फ़र्ज़ है और ये नमाज़ के अरकान में से है। जो इसे न पढ़े उसकी नमाज़ स़ह़ीह़ न होगी। शाह वलीउल्लाह मुह़द्दिष़ देह्लवी ने भी अपनी मशहूर किताब **ह़ुज्जतुल्लाहिल बालिग़ा** (जिल्द 2 पेज नं. 4) पर इसे नमाज़ का अहम रुक्न तस्लीम किया है। इसलिए कि ये ह़दीष़ आ़म है। नमाज़ चाहे फ़र्ज़ हो चाहे नफ़्ल, और वो शख़्स़ इमाम हो या मुक़्तदी, या अकेला। यानी किसी शख़्स़ की कोई नमाज़ भी बग़ैर फ़ातिह़ा पढ़े नहीं होगी।

चुनाँचे मशहूर शारेह़े बुख़ारी ह़ज़रत अ़ल्लामा क़स्त़लानी (रह़) शरह़ स़ह़ीह़ बुख़ारी जिल्द 2 पेज नं. 439 में इस ह़दीष़ की वज़ाह़त करते हुए लिखते हैं। **'अय फ़ी कुल्लि रकअ़तिन मुन्फ़रिदन औ इमामन औ मामूमन सवाउन असर्रल्इमामु औ जहर'** यानी इस ह़दीष़ का मक़्स़द ये है कि हर रकअ़त में (हर नमाज़ी को) ख़्वाह अकेला हो या इमाम, या मुक़्तदी, ख़्वाह आहिस्ता पढ़े या बुलन्द आवाज़ से सूरह फ़ातिह़ा पढ़ना ज़रूरी है।

नीज़ इसी त़रह़ अ़ल्लामा किरमानी (रह़) फ़र्माते हैं,

'व फ़िल हदीष़ि (अय हदीषु उ़बादत) दलीलुन अ़ला अन्न क़िरातल्फ़ातिहति वाजिबतुन अ़लल इमामि वल मुन्फ़रिदि वल मामूमि फ़िस्स़लवाति कुल्लिहा' (उ़म्दतुल क़ारी शरह़ स़ह़ीह़ बुख़ारी जिल्द नं. 3 पेज नं. 63) यानी ह़ज़रत उबादा (रज़ि) की ये ह़दीष़ इस अम्र पर स़ाफ़ दलील है कि सूरह फ़ातिह़ा का पढ़ना इमाम और अकेले और मुक़्तदी सबके लिए तमाम नमाज़ों मे वाजिब है। नीज़ उ़म्दतुल क़ारी शरह़ स़ह़ीह़ बुख़ारी जिल्द 3 पेज नं. 64 में लिखते हैं। ह़न्फ़ियों के मशहूर शारेह़

أَنْ يَؤُمَّهُمْ غَيْرُهُ- فَلَمَّا أَتَاهُمُ النَّبِيُّ ﷺ أَخْبَرُوهُ الْخَبَرَ، فَقَالَ: ((يَا فُلاَنُ، مَا يَمْنَعُكَ أَنْ تَفْعَلَ مَا يَأْمُرُكَ بِهِ أَصْحَابُكَ، وَمَا يَحْمِلُكَ عَلَى لُزُومِ هَذِهِ السُّورَةِ فِي كُلِّ رَكْعَةٍ؟)) فَقَالَ: إِنِّي أُحِبُّهَا. قَالَ: ((حُبُّكَ إِيَّاهَا أَدْخَلَكَ الْجَنَّةَ)).

ख़बर दी। आप (ﷺ) ने उनको बुलाकर पूछा कि ऐ फ़लाँ! तुम्हारे साथी जिस तरह कहते हैं इस पर अमल करने से तुमको कौनसी रुकावट है और हर रकअत में इस सूरह को ज़रूरी क़रार देने का सबब क्या है। उन्होंने कहा कि हुज़ूर! मैं इस सूरह से मुहब्बत करता हूँ। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि इस सूरह की मुहब्बत तुम्हें जन्नत में ले जाएगी।

आपने उनके इस फ़ेअल पर सुकूत फ़र्माया बल्कि तहसीन फ़र्माई। ऐसी अहादीष़ को तक़रीरी कहा गया है।

٧٧٥- حَدَّثَنَا آدَمُ قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عَمْرِو بْنِ مُرَّةَ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا وَائِلٍ قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ إِلَى ابْنِ مَسْعُودٍ فَقَالَ: قَرَأْتُ الْمُفَصَّلَ اللَّيْلَةَ فِي رَكْعَةٍ. فَقَالَ: هَذًّا كَهَذِّ الشِّعْرِ. لَقَدْ عَرَفْتُ النَّظَائِرَ الَّتِي كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَقْرُنُ بَيْنَهُنَّ. فَذَكَرَ عِشْرِينَ سُورَةً مِنَ الْمُفَصَّلِ، سُورَتَيْنِ فِي كُلِّ رَكْعَةٍ.

[طرفاه في : ٤٩٩٦، ٥٠٤٣].

(775) हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअबा ने बयान किया, कहा कि हमसे अम्र बिन मुर्रह ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने अबुल वाइल शक़ीक़ बिन मुस्लिम से सुना कि एक शख़्स अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और कहा कि मैंने रात एक रकअत में मुफ़स्सल की कोई सूरत पढ़ी। आपने फ़र्माया कि क्या इस तरह (जल्दी-जल्दी) पढ़ी जैसे शे'र पढ़े जाते हैं। मैं उन हम–मा'नी सूरतों को जानता हूँ जिन्हें नबी करीम (ﷺ) एक साथ मिलाकर पढ़ते थे। आपने मुफ़स्सल की बीस सूरतों का ज़िक्र किया। हर रकअत के लिए दो-दो सूरतें।

(दीगर मक़ाम : 4996, 5043)

١٠٧- بَابُ يَقْرَأُ فِي الأُخْرَيَيْنِ بِفَاتِحَةِ الْكِتَابِ

बाब 107 : पिछली दो रकआत में सिर्फ़ सूरह फ़ातिहा पढ़ना

٧٧٦- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ: حَدَّثَنَا هَمَّامٌ عَنْ يَحْيَى عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي قَتَادَةَ عَنْ أَبِيهِ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ يَقْرَأُ فِي الظُّهْرِ فِي الأُولَيَيْنِ بِأُمِّ الْكِتَابِ وَسُورَتَيْنِ، وَفِي الرَّكْعَتَيْنِ الأُخْرَيَيْنِ بِأُمِّ الْكِتَابِ، وَيُسْمِعُنَا الآيَةَ، وَيُطَوِّلُ فِي الرَّكْعَةِ الأُولَى مَا لاَ يُطَوِّلُ فِي الرَّكْعَةِ الثَّانِيَةِ، وَهَكَذَا فِي الْعَصْرِ، وَهَكَذَا فِي

(776) हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे हम्माम बिन यह्या ने बयान किया, उन्होंने यह्या बिन अबी कष़ीर के वास्ते से बयान किया, उन्होंने अब्दुल्लाह बिन अबी क़तादा से, उन्होंने अपने बाप अबू क़तादा (रज़ि.) से कि नबी (ﷺ) ज़ुहर की पहली दो रकअतों में सूरह फ़ातिहा और दो सूरतें पढ़ते थे और आख़िरी दो रकअतों में सिर्फ़ सूरह फ़ातिहा पढ़ते। कभी-कभी हमें एक आयत सुना भी दिया करते थे और पहली रकअत में क़िरअत दूसरी रकअत से ज़्यादा करते थे। अस्र और सुबह की नमाज़ों मे भी आपका यही मअमूल था (हदीष़ और बाब में मुताबक़त ज़ाहिर है)

لمبی करते थे और दूसरी रकअ़त में हल्की। सुबह की नमाज़ में भी आप उसी तरह करते थे। (राजेअ़ : 759)

وَيُقَصِّرُ فِي الرَّكْعَةِ الثَّانِيَةِ، وَيَفْعَلُ ذَلِكَ فِي صَلَاةِ الصُّبْحِ. [راجع: ٧٥٩]

बाब 111 : (जहरी नमाज़ों में) इमाम का बुलन्द आवाज़ से आमीन कहना

١١١- بَابُ جَهْرِ الإِمَامِ بِالتَّأْمِينِ

मस्नून है और अ़ता बिन अबी रबाह ने कहा कि आमीन एक दुआ है और अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) और उन लोगों ने जो आपके पीछे (नमाज़ पढ़ रहे) थे, इस ज़ोर से आमीन कही कि मस्जिद गूंज उठी और ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) इमाम से कह दिया करते थे कि आमीन से हमें महरूम न रखना और नाफ़ेअ़ ने कहा कि इब्ने उ़मर (रज़ि.) आमीन कभी नहीं छोड़ते थे और लोगों को उसकी तर्ग़ीब भी दिया करते थे। मैंने आपसे उसके बारे में एक ह़दीष़ भी सुनी थी।

وَقَالَ عَطَاءٌ: آمِينَ دُعَاءٌ. أَمَّنَ ابْنُ الزُّبَيْرِ وَمَنْ وَرَاءَهُ حَتَّى إِنَّ لِلْمَسْجِدِ لَلَجَّةً. وَكَانَ أَبُو هُرَيْرَةَ يُنَادِي الإِمَامَ: لاَ تُفْتِنِي بِآمِينَ. وَقَالَ نَافِعٌ: كَانَ ابْنُ عُمَرَ لاَ يَدَعُهُ، وَيَحُضُّهُمْ، وَسَمِعْتُ مِنْهُ فِي ذَلِكَ خَيْرًا.

(780) हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्होंने इब्ने शिहाब से, उन्होंने सईद बिन मुसय्यिब और अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रहमान के वास्ते से, उन्होंने ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से ख़बर दी कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि जब इमाम आमीन कहे तो तुम भी आमीन कहो क्योंकि जिसकी आमीन मलाइका की आमीन के साथ हो गई उसके तमाम गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाएँगे। इब्ने शिहाब ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) आमीन कहते थे।

(दीगर मक़ाम : 2402)

٧٨٠- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ: أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ سَعِيْدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ وَأَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّهُمَا أَخْبَرَاهُ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((إِذَا أَمَّنَ الإِمَامُ فَأَمِّنُوا، فَإِنَّهُ مَنْ وَافَقَ تَأْمِينُهُ تَأْمِينَ الْمَلاَئِكَةِ غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ)). قَالَ ابْنُ شِهَابٍ وَكَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((آمِينَ)).

[طرفه في : ٢٤٠٢].

बाब 112 : आमीन कहने की फ़ज़ीलत

١١٢- بَابُ فَضْلِ التَّأْمِينِ

(781) हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें इमाम मालिक ने अबुज़्ज़िनाद से ख़बर दी, उन्होंने अअ़रज से, उन्होंने ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि जब कोई तुममें से आमीन कहे और फ़रिश्तों ने भी उसी वक़्त आसमान पर आमीन कही। इस तरह एक की आमीन दूसरे की आमीन के साथ मिल गई तो उसके

٧٨١- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ أَبِي الزِّنَادِ عَنِ الأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رضي الله عنه أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((إِذَا قَالَ أَحَدُكُمْ آمِينَ، وَقَالَتِ الْمَلاَئِكَةُ فِي السَّمَاءِ آمِينَ، فَوَافَقَتْ إِحْدَاهُمَا الأُخْرَى، غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ

पिछले तमाम गुनाह मुआफ़ हो जाते हैं। M-09825696131 ذَنبِه)).

अलहम्दु शरीफ़ के ख़ात्मे पर फ़रिश्ते भी आमीन कहते हैं। सिर्री में पस्त आवाज़ से और जहरी में बुलन्द आवाज़ से, पस जिस नमाज़ी की आमीन फ़रिश्तों की आमीन के साथ मिल गई, उसका बेड़ा पार हो गया। अल्लाह पाक हर मुसलमान का बेड़ा पार लगाए।

बाब 113 : मुक़्तदी का आमीन बुलन्द आवाज़ से कहना

١١٣- بَابُ جَهْرِ الْمَأْمُومِ بِالتَّأْمِينِ

(782) हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुस्लिमा क़अ़नी ने बयान किया, उन्होंने इमाम मालिक (रह.) से, उन्होंने अबूबक्र बिन अ़ब्दुर्रहमान के गुलाम सुमय से, उन्होंने अबू स़ालेह सम्मान से, उन्होंने ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि जब इमाम 'ग़ैरिल मग़ज़ूबि अ़लैहिम वलज़्ज़ाल्लीन' कहे तो तुम भी आमीन कहो क्योंकि जिसने फ़रिश्तों के साथ आमीन कही उसके पीछे के तमाम गुनाह मुआफ़ कर दिये जाते हैं। सुमय के साथ इस ह़दीष़ को मुहम्मद बिन अ़म्र ने भी अबू सलमा से, उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से, उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से रिवायत किया। और नुऐम मज्मर ने भी अबू हुरैरह (रज़ि.) से, उन्होंने आँह़ज़रत (ﷺ) से।

(दीगर मक़ाम : 4475)

٧٨٢- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ عَنْ مَالِكٍ عَنْ سُمَيٍّ مَوْلَى أَبِي بَكْرٍ عَنْ أَبِي صَالِحٍ السَّمَّانِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((إِذَا قَالَ الإِمَامُ: ﴿غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلاَ الضَّالِّينَ﴾ فَقُولُوا: آمِينَ، فَإِنَّهُ مَنْ وَافَقَ قَوْلُهُ قَوْلَ الْمَلاَئِكَةِ غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ)). تَابَعَهُ مُحَمَّدُ بْنُ عَمْرٍو عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ. وَنُعَيْمٌ الْمُجْمِرُ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ.

[طرفه في : ٤٤٧٥].

मुक़्तदी इमाम की आमीन सुनकर आमीन कहेंगे, इसी से मुक़्तदियों के लिए आमीन बिल जहर का इष्बात हुआ। बनज़रे इंस़ाफ़ मुत़ालअ़ा करने वालों के लिए यही काफ़ी है। तअ़स्सुबे मसलकी का दुनिया में कोई इलाज नहीं।

तशरीह : जहरी नमाज़ों में सूरह फ़ातिह़ा के इख़्तिमाम पर इमाम और मुक़्तदियों के लिए बुलन्द आवाज़ से आमीन कहना ये भी एक ऐसी बह़ष़ है जिस पर फ़रीक़ेन ने कितने ही स़फ़्ह़ात स्याह (कागज़ काले) कर डाले हैं । यही नहीं बल्कि इस पर बड़े–बड़े फ़सादात भी हो चुके हैं। मुह़तरम बिरादराने अह़नाफ़ ने कितनी मसाजिद से आमीन बिल जहर के आ़मिलीन को निकाल दिया, मारा-पीटा और मामला सरकारी अ़दालतों तक पहुँचा है। यही वजह हुई कि इस जंग को ख़त्म करने के लिए अहले ह़दीष़ ह़ज़रात ने अपनी मसाजिद अलग ता'मीर कीं और इस त़रह़ ये फ़साद कम हुआ। अगर ग़ौर किया जाए तो अ़क़्लन व नक़्लन ये झगड़ा हर्गिज़ न होना चाहिए था। लफ़्ज़े आमीन का मत़लब ये है कि ऐ अल्लाह! मैंने जो दुआएँ तुझसे की हैं उनको क़ुबूल फ़र्मा ले। ये लफ़्ज यहूद व नस़ारा में भी मुस्तअ़मल (प्रयुक्त Used) रहा और इस्लाम में भी इसे इस्ते'माल किया गया। जहरी नमाज़ों मे इसका ज़ोर से कहना कोई अम्रे क़बीह़ न था। मगर स़द अफ़सोस कि कुछ उ़लम–ए–सू ने राई को पहाड़ बना दिया। नतीजा ये हुआ कि मुसलमानों में सर फुटव्वल हुई और अ़र्से के लिये दिलों में काविश पैदा हो गई।

सय्यदना ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़) ने यहाँ बाब मुनअ़क़िद करके और उसके तह़त अह़ादीष़ लाकर इस बहष़ का ख़ात्मा कर दिया। फिर भी बहुत से लोग तफ़्स़ीलात का शौक़ रखते हैं। लिहाज़ा हम इस बारे में एक तफ़्स़ीली मक़ाला पेश कर रहे हैं जो मुत्तह़िदा (अखण्ड) भारत के एक ज़बरदस्त फ़ाज़िल उस्ताज़ ह़ज़रत मौलाना ह़ाफ़िज़ अ़ब्दुल्लाह स़ाह़ब रोपड़ी (रह़) के ज़ोरे क़लम का नतीजा है। इसमें दलाइल के साथ साथ उन पर ए'तिराज़ाते वारिदा के भी काफ़ी शाफ़ी जवाबात दिये गये हैं। चुनाँचे ह़ज़रत मौलाना स़ाह़ब क़द्दस सिर्रुहु फ़र्माते हैं :

बुलन्द आवाज़ से आमीन कहने के बारे में अहादीष़ व आष़ार और उलम-ए-अहनाफ़ के फ़तावे

M-09825696131

अहादीष़ : ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि) फ़र्माते हैं, **'कान रसूलुल्लाहि (ﷺ) इज़ा तला ग़ैरिल मग़्ज़ूबि अलैहिम वलज़्ज़ाल्लीन क़ाल आमीन ह़त्ता यस्मअ मंय्यलीहि मिनस्सफ़्फ़िल अव्वलि'** (अबू दाऊद पेज नं. 134 तबअ देहली)

तर्जुमा : रसूलुल्लाह (ﷺ) जब **ग़ैरिल मग़्ज़ूबि अलैहिम वलज़्ज़ाल्लीन** पढ़ते तो आमीन कहते। यहाँ तक कि जो पहली सफ़ में आपके नज़दीक थे, वो सुन लेते।

इस ह़दीष़ पर ह़नफ़िया की त़रफ़ से दो ए'तिराज़ होते हैं,

एक ये कि इस ह़दीष़ की इस्नाद में बिश्र बिन राफ़ेअ अल ह़ारिष़ी अबुल अस्बात़ एक रावी है। इसके बारे में नस्बुर्राया जिल्द 1 पेज नं. 371 में अ़ल्लामा ज़ेलई ह़नफ़ी लिखते हैं, **'ज़अअफ़हुल् बुख़ारी वत्तिर्मिज़ी वन्नसइ व अह़मद वब्नु मईन वब्नु ह़िब्बान'** इसको इमाम बुख़ारी, तिर्मिज़ी, नसाई, अह़मद, इब्ने मुईन और इब्ने ह़िब्बान (रह़) ने ज़ईफ़ कहा है।

दूसरा ए'तिराज़ ये है कि एक रावी अबू अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़म्मे अबू हुरैरह (रज़ि) है। जो बिश्र बिन राफ़ेअ का उस्ताज़ है, इसके बारे में ज़ेलई (रह़) लिखते हैं : कि उसका ह़ाल मा'लूम नहीं और बिश्र बिन राफ़ेअ के सिवा उससे किसी ने रिवायत नहीं की। यानी ये मज्हूलुल ऐन है, उसकी शख़्सियत का पता नहीं।

जवाब ए'तिराज़े अव्वल : ख़ुलास़ा तज़हीबुल कमाल के पेज नं. 41 में बिश्र बिन राफ़ेअ के बारे में लिखा है, **वष़्ष़कहू इब्नु मईन व इब्नु अदी व कालल बुख़ारी वला युताबउ अलैहि** यानी इब्ने मुईन और इब्ने अ़दी ने इसको ष़िक़ा कहा है और इमाम बुख़ारी (रह़) ने कहा है। इसकी मुवाफ़क़त नहीं की जाती।

इससे मा'लूम हुआ कि कोई ज़ईफ़ कहता है और कोई ष़िक़ा और ये भी मा'लूम हुआ कि ज़ईफ़ कहने वालों ने ज़ुअफ़ की वजह बयान नहीं की और ऐसी जरह़ को जरह़े मुब्हम कहते हैं और उसूल का क़ायदा है :

ष़िक़ा कहने वालों के मुक़ाबले में ऐसी जरह़ का ए'तिबार नहीं। हाँ अगर वजह ज़ुअफ़ बयान कर दी जाती तो ऐसी जरह़ बेशक तअ़दील पर मुक़द्दम होती और ऐसी जरह़ को जरह़े मुफ़स्सर कहते हैं।

फिर इमाम बुख़ारी (रह़) का कहना कि इसकी मुवाफ़क़त नहीं की जाती। ये बहुत हल्की जरह़ है। ऐसे रावी की ह़दीष़ ह़सन दर्ज़े से नहीं गिरती। ग़ालिबन इसी लिए अबू दाऊद (रह़) और मुंज़री ने इस पर सुकूत किया है और इससे दूसरे ए'तिराज़ का जवाब भी निकल आया क्योंकि अबू दाऊद जिस ह़दीष़ पर सुकूत करते हैं। वो उनके नज़दीक अच्छी होती है और मज़्हूलुल ऐन की रिवायत ज़ईफ़ होती है। पस अबू अ़ब्दुल्लाह मज्हुलुल ऐन न हुआ, वरना सुकूत न करते। अ़लावा उसके अ़ल्लामा ज़ेलई (रह़) को ग़लती लगी है, ये मज्हूल नहीं। ह़ाफ़िज़ इब्ने ह़जर (रह़) तक़्रीब में लिखते हैं। मक़्बूल यानी उसकी ह़दीष़ मोतबर है।

इमाम दारे क़ुत़्नी (रह़) कहते हैं। इस ह़दीष़ की इस्नाद ह़सन है। मुस्तदरक ह़ाकिम में है कि ये ह़दीष़ बुख़ारी मुस्लिम की शर्त़ पर स़ह़ीह़ है। इमाम बैहक़ी कहते हैं। ह़सन स़ह़ीह़ है। (नैलुल औतार जिल्द 2 पेज नं. 117 त़बअ मिस्र)

तम्बीह : नस़बुर्राया जिल्द 1 पेज नं. 371 के ह़ाशिये में लिखा है कि इसकी इस्नाद में इस्ह़ाक़ बिन इब्राहीम बिन अल्अ़ला ज़ुबैदी ज़ईफ़ है।

मगर जो जरह़ मुफ़स्सर ष़ाबित नहीं हुई। इसलिए दारे क़ुत़्नी ने इसको ह़सन कहा है और ह़ाकिम ने स़ह़ीह़ और बैहक़ी

फ़र्मा रहे हैं।

ग़ालिबन उस ज़माने का वाक़िया है कि जब आप फ़ज्र में अ़ब्दुल मलिक पर क़ुनूत पढ़ते थे। अ़ब्दुल मलिक भी इब्ने ज़ुबैर (रज़ि) पर क़ुनूत पढ़ता था और जिस त़रह़ के ह़ालात इस ज़माने में थे उसमें मुबालग़ा और बेएह़तियात़ उ़मूमन हो जाया करती है। (तफ़्हीमुल बुख़ारी पारा 3 पेज नं. 135)

इस बेतुकी राय ज़नी पर अहले इंसाफ़ ख़ुद नज़र डाल सकेंगे कि ये कहाँ तक दुरुस्त है। अव्वल तो अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि) का आमीन बिल जेहर कहना ख़ास़ नमाज़े फ़ज्र में किसी रिवायत में मज़्कूर नहीं है। हो सकता है कि इस वाक़िये का ता'ल्लुक़ मग़्रिब या इशा से भी हो। फिर अल्ह़म्दु शरीफ़ के ख़ात्मे पर आमीन बिल जेहर का अ़ब्दुल मलिक पर क़ुनूत पढ़ने से क्या ता'ल्लुक़? क़ुनूत का मह़ल दूसरा है फिर मुबालग़ा और बे एह़तियाती को ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि) जैसे जलीलुल क़द्र स़ह़ाबी की त़रफ़ मन्सूब करना एक बड़ी जुर्अत है और भी इसी क़िस्म की बेतुकी बातें की जाती हैं। अल्लाह पाक ऐसे उ़लम–ए– किराम को नेक हिदायत दे कि वो अम्रे ह़क़ को तस्लीम करने के लिए दिल खोलकर तैयार हों और बेजा तावीलात से काम लेकर आज के ता'लीमयाफ़्ता रोशन ख़्याल लोगों को हंसने का मौक़ा न दें **अल्लाहुम्म वफ़्फ़िक़्ना लिमा तुहिब्बु व तर्ज़ा, आमीन।**

बाब 114 : जब स़फ़ तक पहुँचने से पहले ही किसी ने रुकूअ़ कर लिया (तो उसके बारे में क्या हुक्म है?)

١١٤– بَابُ إِذَا رَكَعَ دُوْنَ الصَّفِّ

(783) हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा कि हमसे हम्माम बिन यह़्या ने ज़ियाद बिन ह़स्सान अ़अलम से बयान किया, उन्होंने ह़ज़रत ह़सन (रह.) से, उन्होंने ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) से कि वो रसूलुल्लाह (ﷺ) की त़रफ़ (नमाज़ पढ़ने के लिए) गए, आप उस वक़्त रुकूअ़ में थे। इसलिए स़फ़ तक पहुँचने से पहले ही उन्होंने रुकूअ़ कर लिया, फिर इसका ज़िक्र नबी करीम (ﷺ) से किया तो आपने फ़र्माया कि अल्लाह तुम्हारा शौक़ और ज़्यादा करे लेकिन दोबारा ऐसा न करना।

٧٨٣– حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيْلَ قَالَ: حَدَّثَنَا هَمَّامٌ عَنِ الأَعْلَمِ – وَهُوَ زِيَادٌ – عَنِ الْحَسَنِ عَنْ أَبِي بَكْرَةَ : أَنَّهُ انْتَهَى إِلَى النَّبِيِّ ﷺ وَهُوَ رَاكِعٌ فَرَكَعَ قَبْلَ أَنْ يَصِلَ إِلَى الصَّفِّ، فَذَكَرَ ذَلِكَ لِلنَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: ((زَادَكَ اللهُ حِرْصًا، وَلاَ تَعُدْ)).

तश्रीह़ : त़बरानी की रिवायत में यूँ है कि अबूबक्र उस वक़्त मस्जिद में पहुँचे कि नमाज़ की तक्बीर हो चुकी थी, ये दौड़े और त़ह़ावी की रिवायत में है कि दौड़ते हुए हांपने लगे, उन्होंने मारे जल्दी के स़फ़ में शरीक होने से पहले ही रुकूअ़ कर दिया। नमाज़ के बाद जब आँह़ज़रत (ﷺ) को ये ह़ाल मा'लूम हुआ तो आपने फ़र्माया कि आइन्दा ऐसा न करना।

कुछ अहले इल्म ने इससे रुकूअ़ में आने वालों के लिए रकअ़त के हो जाने पर दलील पकड़ी है। औ़नुल मा'बूद शरह़े अबू दाऊद पेज नं. 332 में है, **'क़ालश्शौकानी फ़िन्नैलि लैस फ़ीहि मा यदुल्लु अ़ला मा ज़हबू इलैहि लिअन्नहू कमा लम यामुर्हु बिल आदति लम युन्क़ल अयज़न अन्नहू इअतद्द बिहा वहुआउ लहू बिल्हिर्सि ला यस्तल्ज़िमुल इअतिदादु बिहा लिअन्नल्कौन मअइमामि मामूरुन बिही सवाउन कानश्शैउल्लज़ी युदरिकुहुल्मूतिम मुअतद्दन बिही अम ला कमा फ़िल्हदीष़ इजाजिअतुम इलस्सलाति व नहनु सुजूदुन फ़स्जुदू औ ला तउद्दूहा शैअन अ़ला अन्नन्नबिय्यु ﷺ क़द नहा अबा बक्रत अनिल्ऊदि इला मिष़्लि ज़ालिक वल्इहतिजाजु बिशैइन क़द नहा अन्हु ला यस़िह्हु व क़द अज़ाब इब्नु हज्म फ़िल्मुहल्ला अ़न हदीष़ि अबी बक्रत फ़क़ाल अन्नहू ला हुज्जत लहुम फ़ीहि लिअन्नहू लैस फ़ीहि इज्तिराउन बितिल्कर्रअति'**

ख़ुलास़ा ये कि बक़ौले अ़ल्लामा शौकानी इस ह़दीष़ से ये इस्तिदलाल स़ह़ीह़ नहीं है क्योंकि अगर ह़दीष़ में ये स़राह़त नहीं है कि आपने इसे उस रकअ़त के लौटाने का हुक्म नहीं फ़र्माया तो साथ ही मन्क़ूल ये भी नहीं कि इस रकअ़त को काफ़ी

बाब 122 : नबी करीम (ﷺ) का उस शख़्स को नमाज़ दोबारा पढ़ने का हुक्म देना जिसने रुकूअ पूरी तरह नहीं किया था

١٢٢- بَابُ أَمْرِ النَّبِيِّ ﷺ الَّذِي لاَ يُتِمُّ رُكُوعَهُ بِالإِعَادَةِ

(793) हमसे मुसद्दद बिन मुस्रहिद ने बयान किया, कहा कि हमसे यह्या बिन सईद क़त्तान ने उबैदुल्लाह उमरी से बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे सईद बिन अबी सईद मक़्बरी ने अपने वालिद से बयान किया, उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से कि नबी करीम (ﷺ) मस्जिद में तशरीफ़ ले गए। इतने में एक शख़्स आया और नमाज़ पढ़ने लगा। नमाज़ के बाद उसने आकर नबी करीम (ﷺ) को सलाम किया। आप (ﷺ) ने सलाम का जवाब देकर कहा कि वापस जाकर दोबारा नमाज़ पढ़, क्योंकि तूने नमाज़ नहीं पढ़ी। चुनाँचे उसने दोबारा नमाज़ पढ़ी और वापस आकर फिर आपको सलाम किया। आपने इस बार भी यही फ़र्माया कि दोबारा जाकर नमाज़ पढ़, क्योंकि तूने नमाज़ पढ़ी। तीन बार इसी तरह हुआ। आख़िर उस शख़्स ने कहा कि उस ज़ात की क़सम! जिसने आपको हक़ के साथ मबऊ़ष फ़र्माया। मैं तो इससे अच्छी नमाज़ नहीं पढ़ सकता। इसलिए आप मुझे सिखलाइए। आपने फ़र्माया जब तू नमाज़ के लिए खड़ा हो तो (पहले) तक्बीर कह फिर क़ुर्आन मजीद में से जो कुछ तुझसे हो सके पढ़, उसके बाद रुकूअ कर और पूरी तरह रुकूअ में चला जा। फिर सर उठा और पूरी तरह खड़ा हो जा। फिर जब तू सज्दा करे तो पूरी तरह सज्दा में चला जा। फिर (सज्दा से) सर उठाकर अच्छी तरह बैठ जा। दोबारा भी इसी तरह सज्दा कर। यही त़रीक़ा नमाज़ की तमाम (रकअतों में) रख। (राजेअ : 757)

٧٩٣- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَ بْنُ سَعِيْدٍ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ قَالَ: حَدَّثَنِي سَعِيْدٌ الْمَقْبُرِيُّ عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ دَخَلَ الْمَسْجِدَ فَدَخَلَ رَجُلٌ فَصَلَّى، ثُمَّ جَاءَ فَسَلَّمَ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ، فَرَدَّ عَلَيْهِ النَّبِيُّ ﷺ السَّلاَمَ فَقَالَ: ((ارْجِعْ فَصَلِّ فَإِنَّكَ لَمْ تُصَلِّ))، فَصَلَّى، ثُمَّ جَاءَ فَسَلَّمَ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: ((ارْجِعْ فَصَلِّ فَإِنَّكَ لَمْ تُصَلِّ)) (ثَلاَثًا) فَقَالَ: وَالَّذِي بَعَثَكَ بِالْحَقِّ فَمَا أُحْسِنُ غَيْرَهُ فَعَلِّمْنِي. قَالَ: ((إِذَا قُمْتَ إِلَى الصَّلاَةِ فَكَبِّرْ، ثُمَّ اقْرَأْ مَا تَيَسَّرَ مَعَكَ مِنَ الْقُرْآنِ، ثُمَّ ارْكَعْ حَتَّى تَطْمَئِنَّ رَاكِعًا، ثُمَّ ارْفَعْ حَتَّى تَعْتَدِلَ قَائِمًا، ثُمَّ اسْجُدْ حَتَّى تَطْمَئِنَّ سَاجِدًا، ثُمَّ ارْفَعْ حَتَّى تَطْمَئِنَّ جَالِسًا، ثُمَّ اسْجُدْ حَتَّى تَطْمَئِنَّ سَاجِدًا، ثُمَّ افْعَلْ ذَلِكَ فِي صَلاَتِكَ كُلِّهَا)). [راجع: ٧٥٧]

तशरीह़ : इसी ह़दीष़ को बरिवायत रिफ़ाआ बिन राफ़ेअ इब्ने अबी शैबा ने यूँ रिवायत किया है कि उस शख़्स ने रुकूअ और सज्दा पूरे त़ौर पर अदा नहीं किया था। इसलिए आँह़ज़रत (ﷺ) ने उसे नमाज़ लौटाने का हुक्म फ़र्माया। यही बाब का तर्जुमा है। ष़ाबित हुआ कि ठहर ठहरकर इत्मीनान से हर रुक्न का अदा करना फ़र्ज़ है। उस रिवायते बुख़ारी में ये है कि आपने उसे फ़र्माया कि पढ़ जो तुझे क़ुर्आन से आसान हो। मगर रिफ़ाआ बिन राफ़ेअ की रिवायत इब्ने अबी शैबा में साफ़ यूँ मज़्कूर है, **ष़ुम्म इक़्र: बिउम्मिल क़ुर्आन व माशाअल्लाहु** यानी पहले सूरह फ़ातिह़ा पढ़ फिर जो आसान हो क़ुर्आन की तिलावत कर। इस तफ़्सील के बाद इस रिवायत से सूरह फ़ातिह़ा की अ़दमे रुक्नियत पर दलील पकड़ने वाला या तो तफ़्सीली रिवायात से नावाक़िफ़ है या फिर तअ़स्सुब का शिकार है।

अल्लाहुम्मग़्फ़िरली (इस दुआ को पढ़कर) आप क़ुर्आन के हुक्म पर अमल करते थे। (राजेअ : 714)

اللّٰهُمَّ رَبَّنَا وَبِحَمْدِكَ، اللّٰهُ اغْفِرْ لِيْ)). يَتَأَوَّلُ الْقُرْآنَ. [راجع: ٧٩٤]

तश्रीह : सूरह **'इज़ा जाअ नस्रूल्लाहि'** में है, **'फ़सब्बिह बिहम्दि रब्बिक वस्तग़्फ़िरहु'** (अपने रब की पाकी बयान करो और उससे बख़्शिश मांगो); इस हुक्म की रोशनी में आप (ﷺ) सज्दा और रुकूअ में ज़िक्र की गई दुआ पढ़ा करते थे। जिसका तर्जुमा ये है कि या अल्लाह! मैं तेरी ह़म्द के साथ तेरी पाकी बयान करता हूँ। या अल्लाह! तू मुझको बख़्श दे। इस दुआ में तस्बीह़ और तह़्मीद और इस्तिग़्फ़ार तीनों मौजूद हैं, इसलिये रुकूअ और सज्दा में इसका पढ़ना अफ़ज़ल है इसके अलावा रुकूअ में **सुब्हान रब्बियल्अज़ीम** और सज्दा में **सुब्हान रब्बियल्आला** मसनूना दुआएँ भी आयाते क़ुर्आनिया ही की ता'मील हैं जैसा कि मुख़्तलिफ़ आयात में हुक्म है। एक रिवायत में है कि सूरह **'इज़ा जाआ नस्रूल्लाह'** के नुज़ूल के बाद आप (ﷺ) हमेशा रुकूअ और सज्दों में इस दुआ को पढ़ते रहे। या'नी **सुब्हानक अल्लाहुम्म रब्बना व बिहम्दिक अल्लाहुम्मग़्फ़िरली** अ़ल्लामा इमाम शौकानी (रह़.) इसका मतलब यूँ बयान फ़र्माते हैं कि **बितौफ़ीक़ि ली व हिदायतिक व फ़ज़्लिक अलय्या सुब्हानक ला बिहौली व क़ुव्वती** या'नी या अल्लाह! मैं सिर्फ़ तेरी तौफ़ीक़ और हिदायत और फ़ज़्ल से तेरी पाकी बयान करता हूँ। अपनी तरफ़ से इस कारे अज़ीम के लिये मुझमें कोई ताक़त नहीं है। कुछ रिवायात में रुकूअ और सज्दों में ये दुआ पढ़नी भी आँह़ज़रत (ﷺ) से षाबित है, **'सुब्बूहुन क़ुद्दूसुन रब्बुल मलाइकति वर्रूह'** (अह़मद, मुस्लिम वग़ैरह) या'नी मेरा रुकूअ या सज्दा उस ज़ाते वाहिद के लिये है जो तमाम नुक़्सों और शरीकों से पाक है वो मुक़द्दस है वो फ़रिश्तों का और जिब्रईल का भी रब है।

बाब 140 : दोनों सज्दों के बीच ठहरना

١٤٠- بَابُ الْمُكْثِ بَيْنَ السَّجْدَتَيْنِ

(818) हमसे अबुन नोअमान मुहम्मद बिन फ़ज़्ल ने बयान किया, कहा कि हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने अय्यूब सुख़्तियानी से बयान किया, उन्होंने अबू क़िलाबा अब्दुल्लाह बिन ज़ैद से, कि मालिक बिन हुवैरिष़ (रज़ि.) ने अपने साथियों से कहा कि मैं तुम्हें नबी करीम (ﷺ) की नमाज़ क्यों न सिखा दूँ। अबू क़तादा ने कहा ये नमाज़ का वक़्त नहीं था (मगर आप हमें सिखाने के लिये) खड़े हुए। फिर रुकूअ किया और तकबीर कही फिर सर उठाया और थोड़ी देर खड़े रहे। फिर सज्दा किया और थोड़ी देर के लिये सज्दे से सर उठाया और फिर सज्दा किया और सज्दे से थोड़ी देर के लिये सर उठाया। उन्होंने हमारे शैख़ उमर बिन सलमा नमाज़ में एक ऐसी चीज़ किया करते थे कि दूसरे लोगों को इसी तरह करते मैंने नहीं देखा। आप तीसरी या चौथी रकअत पर (सज्दे से फ़ारिग़ होकर खड़े होने से पहले) बैठते थे (या'नी जल्सा-ए-इस्तिराहत करते थे फिर नमाज़ सिखलाने के बाद) (राजेह : 688)

٨١٨- حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ قَالَ: حَدَّثَنَا حَمَّادٌ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ أَبِي قِلاَبَةَ أَنَّ مَالِكَ بْنَ الْحُوَيْرِثِ قَالَ لأَصْحَابِهِ: أَلاَ أُنَبِّئُكُمْ صَلاَةَ رَسُولِ اللهِ ﷺ- قَالَ وَذَاكَ فِي غَيْرِ حِيْنِ صَلاَةٍ - فَقَامَ، ثُمَّ رَكَعَ فَكَبَّرَ، ثُمَّ رَفَعَ رَأْسَهُ فَقَامَ هُنَيَّةً، ثُمَّ سَجَدَ، ثُمَّ رَفَعَ رَأْسَهُ هُنَيَّةً -ثُمَّ سَجَدَ ثُمَّ رَفَعَ رَأْسَهُ هُنَيَّةً فَصَلَّى صَلاَةَ عَمْرِو بْنِ سَلِمَةَ شَيْخِنَا هَذَا - قَالَ أَيُّوبُ: كَانَ يَفْعَلُ شَيْئًا لَمْ أَرَهُمْ يَفْعَلُونَهُ، كَانَ يَقْعُدُ فِي الثَّالِثَةِ أَوِ الرَّابِعَةِ. [راجع: ٦٧٧]

٨١٩- فَأَتَيْنَا النَّبِيَّ ﷺ فَأَقَمْنَا عِنْدَهُ فَقَالَ

बाब 142 : उस शख़्स के बारे में जो शख़्स नमाज़ की ताक़ रकअ़त (पहली और तीसरी) में थोड़ी देर बैठे और उठ जाए

١٤٢- بَابُ مَنِ اسْتَوَى قَاعِدًا فِي وِتْرٍ مِنْ صَلاَتِهِ ثُمَّ نَهَضَ

(823) हमसे मुहम्मद बिन सब्बाह ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें हुशैम ने ख़बर दी, उन्होंने कहा ख़ालिद हज़्ज़ा ने ख़बर दी, अबू क़तादा से, उन्होंने बयान किया कि मुझे मालिक बिन हुवैरिष़

٨٢٣- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الصَّبَّاحِ قَالَ: أَخْبَرَنَا هُشَيْمٌ أَخْبَرَنَا خَالِدٌ الْحَذَّاءُ عَنْ أَبِي قِلاَبَةَ قَالَ: أَخْبَرَنَا مَالِكُ بْنُ الْحُوَيْرِثِ

लैषी (रज़ि.) ने ख़बर दी कि आपने नबी करीम (ﷺ) को नमाज़ पढ़ते देखा, आप (ﷺ) जब ताक़ रकअ़त में होते, उस वक़्त तक न उठते जब तक थोड़ी देर बैठ न लेते।

اللَّيْثِيُّ (أَنَّهُ رَأَى النَّبِيَّ ﷺ يُصَلِّي، فَإِذَا كَانَ فِي وِتْرٍ مِنْ صَلاَتِهِ لَمْ يَنْهَضْ حَتَّى يَسْتَوِيَ قَاعِدًا).

ताक़ रकअ़तों के बाद या'नी पहली और तीसरी रकअ़त के दूसरे सज्दे से जब उठे तो थोड़ी देर बैठकर फिर उठना; इसको जल्स-ए-इस्तिराहृत कहते हैं जो सुन्नते सहीहा से षाबित है।

أَهْلِ الْمَدِينَةِ)). [راجع: ٥٦٦]

इसलिये कि इस्लाम सिर्फ़ मदीना तक ही महदूद था, ख़ास तौर से बा-जमाअत का सिलसिला मदीना ही में था।

इमाम बुख़ारी (रह.) ने इस हदीष़ से बाब का मतलब यूँ निकाला कि उस वक़्त इशा की नमाज़ पढ़ने के लिये बच्चे भी आते रहते होंगे, तभी तो ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने फ़र्माया कि औ़रतें और बच्चे सो गए। पस जमाअ़त में औ़रतों का बच्चों के साथ शरीक होना भी षाबित हुआ, **'वज़्ज़ाहिरू मिन कलामि उ़मर अन्नहू शाहदन्निसाअल्लाती हज़र्न फिलमस्जिदि क़द निम्न व स़िब्यानुहुन्न मअहुन्न.'** (हाशिया बुख़ारी) या'नी ज़ाहिरे कलामे उ़मर से यही है कि उन्होंने उन औ़रतों का मुशाहिदा किया जो मस्जिद में अपने बच्चों समेत नमाज़े इशा के लिये आई थीं और वो सो गईं जबकि उनके बच्चे भी उनके साथ थे।

863. हमसे उ़मर बिन अ़ली फ़लास ने बयान किया, कहा कि हमसे यह्या बिन सईद क़त्तान ने बयान किया, कहा कि हमसे सुफ़्यान ष़ौरी ने बयान किया, कहा कि मुझ से अ़ब्दुर्रह्मान बिन आ़बिस ने बयान किया, कहा कि मैंने इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से सुना और उनसे एक शख़्स ने ये पूछा था कि क्या तुमने (औ़रतों का) निकलना ईद के दिन आँहज़रत (ﷺ) के साथ देखा है? उन्होंने कहा हाँ, देखा है। अगर मैं आप का रिश्तेदार-अ़ज़ीज़ न होता तो कभी न देखता। (या'नी मेरी कमसिनी और क़राबत की वजह से आँहज़रत मुझ को अपने साथ रखते थे) कष़ीर बिन स़ल्त के मकान के पास जो निशान हैं, पहले वहाँ आप (ﷺ) तशरीफ़ लाए, वहाँ आप (ﷺ) ने ख़ुत्बा सुनाया फिर आप औ़रतों के पास तशरीफ़ लाए और उन्हें भी वा'ज़ व नस़ीहत की। आप (ﷺ) ने उनसे ख़ैरात करने के लिये कहा। चुनाँचे औ़रतों ने अपने छल्ले और अंगूठियाँ उतार-उतार कर बिलाल (रज़ि.) के कपड़े में डालनी शुरू कर दी। आख़िर आप (ﷺ) बिलाल (रज़ि.) के साथ घर तशरीफ़ लाए। (राजेअ़ : 98)

٨٦٣- حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَلِيٍّ قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ حَدَّثَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَابِسٍ سَمِعْتُ ابْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ لَهُ رَجُلٌ: شَهِدْتَ الْخُرُوجَ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ؟ قَالَ: نَعَمْ، وَلَوْ لاَ مَكَانِي مِنْهُ مَا شَهِدْتُهُ - يَعْنِي مِنْ صِغَرِهِ - ((الْعَلَمَ الَّذِي عِنْدَ دَارِ كَثِيْرِ بْنِ الصَّلْتِ، ثُمَّ خَطَبَ، ثُمَّ أَتَى النِّسَاءَ فَوَعَظَهُنَّ وَذَكَّرَهُنَّ وَأَمَرَهُنَّ أَنْ يَتَصَدَّقْنَ، فَجَعَلَتِ الْمَرْأَةُ تَهْوِي بِيَدِهَا إِلَى حَلْقِهَا تُلْقِي فِي ثَوْبِ بِلاَلٍ، ثُمَّ أَتَى هُوَ وَبِلاَلٌ الْبَيْتَ)).

[راجع: ٩٨]

तश्रीह : ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास कमसिन थे, बावजूद उसके ईद में शरीक हुए यहीं से बाब का तर्जुमा निकलता है और उससे औ़रतों का ईदगाह में जाना भी षाबित हुआ। चुनाँचे अह़नाफ़ के यहाँ ईदगाह में औ़रतों का जाना जाइज़ नहीं है, इसीलिये एक बुख़ारी शरीफ़ के देवबन्दी नुस्ख़े में तर्जुमा ही बदल दिया गया है। चुनाँचे वो तर्जुमा यूँ करते हैं कि 'उनसे एक शख़्स ने यूँ पूछा कि क्या नबी करीम (ﷺ) के साथ आप ईदगाह गए थे। हालाँकि पूछा ये जा रहा था कि क्या तुमने ईद के दिन नबी करीम (ﷺ) के साथ औ़रतों का निकलना देखा है, उन्होंने कहा कि हाँ ज़रूर देखा है। ये बदला हुआ तर्जुमा देवबन्दी तफ़्हीमुल बुख़ारी पारा नं. 4 पेज नं. 32 पर देखा जा सकता है। ग़ालिबन ऐसे ही ह़ज़रात के लिये कहा गया है कि ख़ुद बदलते नहीं क़ुर्आन को बदल देते हैं। **वफ़्फ़क़नल्लाहु लिमा युहिब्बु व यर्ज़ा आमीन।**

बाब 162 : औ़रतों का रात में और (सुबह के वक़्त) अंधेरे में मस्जिद में जाना

١٦٢- بَابُ خُرُوجِ النِّسَاءِ إِلَى الْمَسَاجِدِ بِاللَّيْلِ وَالْغَلَسِ

864. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा कि हमें शुऐब ने ज़ुहरी से ख़बर दी, उन्होंने कहा कि मुझे उर्वा बिन यज़ीद ने आइशा (रज़ि.) से बयान किया, आप (रज़ि.) ने फ़र्माया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने एक मर्तबा इशा की नमाज़ में इतनी देरी की कि उमर (रज़ि.) को कहना पड़ा कि औरतें और बच्चे सो गये। फिर नबी करीम (ﷺ) (हुज्रे से) बाहर तशरीफ़ लाए और फ़र्माया कि देखो रूए-ज़मीन पर इस नमाज़ का (इस वक़्त) तुम्हारे सिवा और कोई इन्तिज़ार नहीं कर रहा है। उन दिनों मदीना के सिवा और कहीं नमाज़ नहीं पढ़ी जाती थी और लोग इशा की नमाज़ शफ़क़ डूबने के बाद से रात की पहली तिहाई गुज़रने तक पढ़ा करते थे।

(राजेअ : 566)

٨٦٤- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ: أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: (أَعْتَمَ رَسُولُ اللهِ ﷺ بِالْعَتَمَةِ حَتَّى نَادَاهُ عُمَرُ: نَامَ النِّسَاءُ وَالصِّبْيَانُ، فَخَرَجَ النَّبِيُّ ﷺ فَقَالَ: ((مَا يَنْتَظِرُهَا أَحَدٌ غَيْرُكُمْ مِنْ أَهْلِ الأَرْضِ)). وَلاَ يُصَلِّي يَوْمَئِذٍ إِلاَّ بِالْمَدِينَةِ، وَكَانُوا يُصَلُّونَ الْعَتَمَةَ فِيمَا بَيْنَ أَنْ يَغِيبَ الشَّفَقُ إِلَى ثُلُثِ اللَّيْلِ الأَوَّلِ.

[راجع: ٥٦٦]

तशरीह : मा'लूम हुआ कि औरतें भी नमाज़ के लिये हाज़िर थीं, तभी तो हज़रत उमर (रज़ि.) ने ये जुम्ला बाआवाज़े बुलन्द फ़र्माया ताकि आप (ﷺ) तशरीफ़ लाएँ और नमाज़ पढ़ाएँ। बाब का तर्जुमा इसी से निकलता है कि औरतें और बच्चे सो गए क्योंकि इससे मा'लूम होता है कि औरतें भी रात को नमाज़े इशा के लिये मस्जिद में आया करती थीं। उसके बाद जो ह़दीष़ इमाम बुख़ारी (रह़.) ने बयान की उससे भी यही निकलता है कि रात को औरत मस्जिद में जा सकती है। दूसरी ह़दीष़ में है कि अल्लाह की बन्दियों को मस्जिद में जाने से न रोको, ये ह़दीष़ें इसको ख़ास़ करती हैं या'नी रात को रोकना मना है। अब औरतों का जमाअत में आना मुस्तह़ब है या मुबाह़ इसमें इख़्तिलाफ़ है। कुछ ने कहा जवान औरत को मुबाह़ है और बूढ़ी को मुस्तह़ब है। ह़दीष़ से ये भी निकला कि औरतें ज़रूरत के लिये बाहर निकल सकती हैं। इमाम अबू ह़नीफ़ा ने कहा कि मैं औरतों का जुम्अे में आना मकरूह जानता हूँ और बुढ़िया इशा और फ़ज्र की जमाअत में आ सकती है और नमाज़ों में न आए और अबू यूसुफ़ ने कहा बुढ़िया हर एक नमाज़ के लिये मस्जिद में आ सकती है और जवान का आना मकरूह है। क़स्तलानी (मौलाना वह़ीदुज़्ज़माँ मरहूम) हज़रत इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह़.) का क़ौल ख़िलाफ़े ह़दीष़ होने की वजह से हुज्जत नहीं जैसा कि ख़ुद ह़ज़रत इमाम की वस़िय्यत है कि मेरा क़ौल ख़िलाफ़े ह़दीष़ हो तो छोड़ दो।

865. हमसे उबैदुल्लाह बिन मूसा ने हन्ज़ला बिन अबी सुफ़्यान से बयान किया, उनसे सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उमर ने, उनसे उनके बाप इब्ने उमर (रज़ि.) ने, वो नबी करीम (ﷺ) से रिवायत करते थे कि आपने फ़र्माया कि अगर तुम्हारी बीवियाँ तुमसे रात में मस्जिद आने की इजाज़त माँगे तो तुम लोग उन्हें इसकी इजाज़त दे दिया करो।

उबैदुल्लाह के साथ इस ह़दीष़ को शुअ़बा ने भी आ'मश से रिवायत किया, उन्होंने मुजाहिद से, उन्होंने इब्ने उमर (रज़ि.) से और उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से।

(दीगर मक़ामात : 873, 899, 900, 5238)

٨٦٥- حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُوسَى عَنْ حَنْظَلَةَ عَنْ سَالِمِ بْنِ عَبْدِ اللهِ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: ((إِذَا اسْتَأْذَنَكُمْ نِسَاءُكُمْ بِاللَّيْلِ إِلَى الْمَسْجِدِ فَأْذَنُوا لَهُنَّ)).

تَابَعَهُ شُعْبَةُ عَنِ الأَعْمَشِ عَنْ مُجَاهِدٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ.

[أطرافه في : ٨٧٣، ٨٩٩، ٩٠٠،

.[٥٢٣٨

बाब 163 : लोगों का नमाज़ के बाद इमाम के उठने का इन्तिज़ार करना

١٦٣ - بَابُ انْتِظَارِ النَّاسِ قِيَامَ الإِمَامِ الْعَالِمِ

866. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे उ़ष्मान बिन उ़मर ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें यूनुस बिन यज़ीद ने ज़ुहरी से ख़बर दी, उन्होंने कहा कि मुझे हिन्द बिन्त हारिष़ ने ख़बर दी कि नबी करीम (ﷺ) की ज़ोज: मुतह्हरा उम्मे सलमा (रज़ि.) ने उन्हें ख़बर दी कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के ज़माने में औरतें फ़र्ज़ नमाज़ से सलाम फेरने के फौरन बाद (बाहर आने के लिये) उठ जाती थी। रसूलुल्लाह (ﷺ) और मर्द नमाज़ के बाद अपनी जगह बैठे रहते। जब तक अल्लाह को मन्ज़ूर होता। फिर जब रसूलुल्लाह (ﷺ) उठते तो दूसरे मर्द भी खड़े हो जाते।

٨٦٦ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ عُمَرَ قَالَ أَخْبَرَنَا يُونُسُ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: حَدَّثَتْنِي هِنْدُ بِنْتُ الْحَارِثِ أَنَّ أُمَّ سَلَمَةَ زَوْجَ النَّبِيِّ ﷺ أَخْبَرَتْهَا ((أَنَّ النِّسَاءَ فِي عَهْدِ رَسُولِ اللهِ ﷺ كُنَّ إِذَا سَلَّمْنَ مِنَ الْمَكْتُوبَةِ قُمْنَ وَثَبَتَ رَسُولُ اللهِ ﷺ وَمَنْ صَلَّى مِنَ الرِّجَالِ مَا شَاءَ اللهُ، فَإِذَا قَامَ رَسُولُ اللهِ ﷺ قَامَ الرِّجَالُ)).

इस ह़दीष़ से भी औरतों का जमाअ़त में शरीक होना षाबित हुआ।

867. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मस्लमा क़अम्बी ने बयान किया, उन्होंने इमाम मालिक (रह.) से बयान किया। (दूसरी सनद) और हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, उन्हें इमाम मालिक (रह.) ने यह्या बिन सईद अन्सारी से ख़बर दी, उन्हें उ़म्रा बिन्त अ़ब्दुर्रह्मान ने, उनसे ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने फ़र्माया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) सुबह की नमाज़ पढ़ लेते फिर औरतें चादर में लिपट कर (अपने घरों को) वापस हो जाती थी। अंधेरे से उनकी पहचान न हो सकती।

(राजेअ़ : 372)

٨٦٧ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ عَنْ مَالِكٍ ح. وَحَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ: أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيْدٍ عَنْ عَمْرَةَ بِنْتِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: (إِنْ كَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ لَيُصَلِّي الصُّبْحَ فَيَنصَرِفُ النِّسَاءُ مُتَلَفِّعَاتٍ بِمُرُوطِهِنَّ مَا يُعْرَفْنَ مِنَ الْغَلَسِ).

[راجع: ٣٧٢]

868. हमसे मुहम्मद बिन मिस्कीन ने बयान किया, कहा कि हमसे बिश्र बिन बुकैर ने बयान किया, कहा कि हमें इमाम औज़ाई ने ख़बर दी, कहा कि मुझसे यह्या बिन अबी कष़ीर ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन अबी क़तादा अन्सारी ने, उनसे उनके वालिद अबू क़तादा अन्सारी (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं नमाज़ के लिये खड़ा होता हूँ, मेरा इरादा ये होता है कि नमाज़ लम्बी करूँ लेकिन किसी बच्चे के

٨٦٨ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مِسْكِينٍ قَالَ: حَدَّثَنَا بِشْرٌ قَالَ أَخْبَرَنَا الأَوْزَاعِيُّ قَالَ حَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ أَبِي كَثِيرٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي قَتَادَةَ الأَنْصَارِيِّ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِنِّي لأَقُومُ إِلَى الصَّلاَةِ

मंज़ूर करते हो तुम जानो अपने पैग़म्बर को जो जवाब क़यामत के दिन देना हो वो दे लेना। **वमा अलैना इल्लल बलाग़** (मौलाना वहीदुज़्ज़माँ)

बाब 164 : औरतों का मर्दों के पीछे नमाज़ पढ़ना

١٦٤- بَابُ صَلاَةِ النِّسَاءِ خَلْفَ الرِّجَالِ

870. हमसे यह्या बिन क़ज़आ ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे इब्राहीम बिन सअद ने बयान किया, उन्होंने ज़ुहरी से बयान किया, उनसे हिन्द बिन्त हारिष ने बयान किया, उनसे उम्मे सुलैम (रज़ि.) ने, उन्होंने फ़र्माया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जब सलाम फेरते तो आपके सलाम फेरते ही औरतें जाने के लिये उठ जाती थीं और आँहज़रत (ﷺ) थोड़ी देर ठहरे रहते, खड़े न होते। ज़ुहरी ने कहा कि हम ये समझते हैं, आगे अल्लाह जाने, ये इसलिये था ताकि औरतें मर्दों से पहले निकल जाएँ।

٨٧٠- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ قَزَعَةَ قَالَ: حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنِ سَعْدٍ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ هِنْدَ بِنْتِ الْحَارِثِ عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: (كَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ إِذَا سَلَّمَ قَامَ النِّسَاءُ حِيْنَ يَقْضِي تَسْلِيْمَهُ، وَيَمْكُثُ هُوَ فِي مَقَامِهِ يَسِيْرًا قَبْلَ أَنْ يَقُومَ. قَالَ : نَرَى - وَاللهُ أَعْلَمُ - أَنَّ ذَلِكَ كَانَ لِكَيْ يَنْصَرِفَ النِّسَاءُ قَبْلَ أَنْ يُدْرِكَهُنَّ الرِّجَالِ.

871. हमसे अबू नुऐम फ़ज़ल बिन दुकैन ने बयान किया, कहा कि हमसे सुफ़्यान इब्ने उययना ने बयान किया, उनसे इस्हाक़ बिन अब्दुल्लाह बिन अबी त़लहा ने, उनसे हज़रत अनस (रज़ि.) ने फ़र्माया कि नबी करीम (ﷺ) ने (मेरी माँ) उम्मे सुलैम के घर में नमाज़ पढ़ाई। मैं और यतीम मिलकर आप (ﷺ) के पीछे खड़े हुए और उम्मे सुलैम (रज़ि.) हमारी पीछे थीं। (राजेअ : 380)

٨٧١- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ قَالَ : حَدَّثَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ عَنْ إِسْحَاقَ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: (صَلَّى النَّبِيُّ ﷺ فِي بَيْتِ أُمِّ سُلَيْمٍ فَقُمْتُ وَيَتِيْمٌ خَلْفَهُ. وَأُمُّ سُلَيْمٍ خَلْفَنَا). [راجع: ٣٨٠]

बाब 165 : सुबह की नमाज़ पढ़कर औरतों का जल्दी से चला जाना और मस्जिद में कम ठहरना

١٦٥- بَابُ سُرْعَةِ انْصِرَافِ النِّسَاءِ مِنَ الصُّبْحِ وَقِلَّةِ مُقَامِهِنَّ فِي الْمَسْجِدِ

872. हमसे यह्या बिन मूसा ने बयान किया, कहा कि हमसे सईद बिन मन्सूर ने बयान किया, कहा कि हमसे फ़ुलैज बिन सुलैमान ने अब्दुर्रह्मान बिन क़ासिम से बयान किया, उनसे उन के बाप (क़ासिम बिन मुहम्मद बिन अबी बकर) ने उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) सुबह की नमाज़ मुँह अंधेरे पढ़ते थे। मुसलमानों की औरतें जब (नमाज़ पढ़कर) वापस होतीं तो अंधेरे की वजह से उनकी पहचान न होती या वो एक दूसरे को न

٨٧٢- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ مُوسَى قَالَ حَدَّثَنَا سَعِيْدُ بْنُ مَنْصُورٍ قَالَ حَدَّثَنَا فُلَيْحٌ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ الْقَاسِمِ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا : ((أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ كَانَ يُصَلِّي الصُّبْحَ بِغَلَسٍ فَيَنْصَرِفْنَ نِسَاءُ الْمُؤْمِنِيْنَ لاَ يُعْرَفْنَ مِنَ الْغَلَسِ، أَوْ

पहचान सकतीं। (राजेअ : 382) M-09825696131 لاَ يَعْرِفُ بَعْضُهُنَّ بَعْضًا)). [راجع: ٣٧٢]

तश्रीह : नमाज़ ख़त्म होते ही औरतें वापस हो जाती थीं इसलिये उनकी वापसी के वक़्त भी इतना अँधेरा रहता था कि एक–दूसरी को पहचान नहीं सकती थी। लेकिन मर्द फ़ज्र के बाद आम तौर से नमाज़ के बाद मस्जिद में कुछ देर के लिये ठहरते थे। ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) को अल्लाह पाक ने इज्तिहाद का दर्ज-ए-कामिल अ़ता फ़र्माया था। इसी आधार पर आपने अपनी जामिउ़स्सह़ीह़ में एक–एक ह़दीष़ से बहुत से मसाइल का इस्तिख़राज फ़र्माया है। ह़दीष़े मज़कूर पीछे भी कई बार ज़िक्र हो चुकी है। ह़ज़रत इमाम ने इससे फ़ज्र की नमाज़ अव्वले वक़्त ग़लस (अंधेरे) में पढ़ने का इष़्बात फ़र्माया है और यहाँ औरतों का शरीके जमाअ़त होना और सलाम के बाद उनका फ़ौरन मस्जिद से चले जाना वग़ैरह मसाइल बयान फ़र्माएँ हैं। ता'ज्जुब है उन अ़क़्ल के दुश्मनों पर जो ह़ज़रत इमाम जैसे मुज्तहिदे मुत्लक़ की दिरायत का इंकार करते हैं और आपको सिर्फ़ रिवायात का इमाम तस्लीम करते हैं। हालाँकि रिवायत और दिरायत दोनों में आपकी महारते ताम्मा ष़ाबित है और मज़ीद ख़ूबी ये है कि आपकी दिरायत व तफ़क़्क़ुह की बुनियाद सिर्फ़ क़ुर्आन और ह़दीष़ पर है, राय और क़यास पर नहीं। जैसा कि दूसरे अइम्म-ए-मुज्तहिदीन में से कुछ ह़ज़रात का ह़ाल है जिनके तफ़क़्क़ुह की बुनियाद सिर्फ़ राय और क़यास पर है। ह़ज़रत इमामे बुख़ारी (रह़.) को अल्लाह ने जो मुक़ाम अ़ता फ़र्माया था वो उम्मत में बहुत कम लोगों के ह़िस्से में आया है। अल्लाह ने आपको पैदा ही इसलिये फ़र्माया था कि शरीअ़ते मुह़म्मदिया को क़ुर्आनो–सुन्नत की बुनियाद पर इस दर्ज़ा मुंज़बित फ़र्माएं कि क़यामत के लिये उम्मत इससे बेनियाज़ होकर बेधड़क शरीअ़त पर अ़मल करती रहे। आयते शरीफ़ा, **'व आख़रीन मिन्हुम लम्मा यलह़क़ू बिहिम'** (अल जुम्आ 3) की मिस्दाक़ बेशक व शुब्हा इन्हीं मुह़द्दिष़ीने किराम (रह़.) अज्मईन की जमाअ़त है।

बाब 166 : औरत मस्जिद में जाने के लिये अपने ख़ाविन्द से इजाज़त ले

١٦٦ - بَابُ اسْتِئْذَانِ الْمَرْأَةِ زَوْجَهَا بِالْخُرُوجِ إِلَى الْمَسْجِدِ

873. हमसे मुसद्दद बिन मुस्रहद ने बयान किया, कहा कि हमसे यज़ीद बिन ज़ुरैअ़ ने बयान किया, उनसे मअ़मर ने, उनसे ज़ुहरी ने, उनसे सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर ने, उनसे उनके बाप ने, उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से रिवायत की है कि आपने फ़र्माया कि जब तुम में से किसी की बीवी (नमाज़ पढ़ने के लिये मस्जिद में आने की) उससे इजाज़त माँगे तो शौहर को चाहिये कि उसको न रोके। (राजेअ : 865)

٨٧٣- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا يَزِيْدُ بْنُ زُرَيْعٍ عَنْ مَعْمَرٍ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ سَالِمِ بْنِ عَبْدِ اللهِ عَنْ أَبِيْهِ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((إِذَا اسْتَأْذَنَتِ امْرَأَةُ أَحَدِكُمْ فَلاَ يَمْنَعْهَا)).

[راجع: ٨٦٥]

तश्रीह : इजाज़त दे इसलिये कि बीवी कोई हमारी लौण्डी नहीं है हमारी तरह वो भी आज़ाद है सिर्फ़ निकाह के मुआहिदे की वजह से वो हमारे मातह़त है। शरीअ़ते मुह़म्मदी में औरत और मर्द के (इन्सानी) हुक़ूक़ बराबर तस्लीम किये गए हैं। अब अगर इस ज़माने के मुसलमान अपनी शरीअ़त के बरख़िलाफ़ औरतों को क़ैदी और लौण्डी बनाकर रखें तो उसका इल्ज़ाम उन पर है न कि शरीअ़ते मुह़म्मदी पर। जिन पादरियों ने शरीअ़ते मुह़म्मदी को बदनाम किया कि इस शरीअ़त में औरतों को मुत्लक आज़ादी नहीं, उनकी नादानी है। (मौलाना वह़ीदुज़्ज़माँ मरहूम)

ह़न्फ़िया के यहाँ मसाजिद में नमाज़ के लिये औरतों का आना दुरुस्त नहीं है इस सिलसिले में उनकी बड़ी दलील ह़ज़रते आइशा (रज़ि.) की ह़दीष़ है जिनके अल्फ़ाज़ ये हैं **क़ालत लौ अदरकन्नबिय्यु (ﷺ) मा अह़दष़न्निसाउ लमनअ़हुन्नल्मस्जिद कमा मुनिअ़त निसाउ बनी इस्राईल अख़रजहुश्शैख़ानि** या'नी ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने फ़र्माया कि नबी करीम (ﷺ) उन चीज़ों को पा लेते जो आज औरतों ने नई ईजाद कर ली है तो आप उनको मसाजिद आने से मना फ़र्मा देते जैसा कि बनी इस्राईल की औरतों को रोक दिया गया था। इसके जवाब में अल मुह़द्दिष़ुल कबीर अल्लामा अ़ब्दुर्रह़मान मुबारकपुरी (रह़.) अपनी मशहूर किताब

उमूर में हिस्से लेने का कोई मौक़ा न मिला कि हज़रत फ़ारूक़े आ'ज़म अपने ख़ानदान व क़बीला के अफ़राद को अलग रखते रहे। अहदे उ़ष्मानी में आपकी क़ाबिलियत के मद्देनज़र आपको अहदे क़ज़ा पेश किया गया (क़ाज़ी बनाने की पेशकश की गई) लेकिन आपने ये फ़र्माकर इंकार कर दिया कि क़ाज़ी तीन क़िस्म के होते हैं जाहिल, आ़लिमे मसाइल अलदुनिया (दुनियवी मसाइल के आ़लिम) कि ये दोनों जहन्नमी है। तीसरे वो हैं जो सह़ीह़ इज्तिहाद करते हैं उन्हें न अ़ज़ाब है न ष़वाब और स़ाफ़ कह दिया कि मुझे कहीं का आ़मिल न बनाइए। उसके बाद अमीरुल मोमिनीन ने भी इस़रार न किया अलबत्ता उस अ़हद के जिहाद के मोर्चों में ज़रूर शरीक रहे। ट्यूनिश, अल जज़ाइर (अल्जीरिया), मराकश, ख़ुरासान और त़ब्रिस्मान के युद्धों में लड़े। जिस क़दर मनास़िब (पदों) और ओहदों की क़ुबूलयित से घबराते थे, जिहादों में उसी क़दर ज़ोश–ख़रोश और शौक़ व दिल बस्तगी के साथ हिस़्सा लेते थे।

आख़िर ज़मान-ए-उ़ष्मानी में जो फ़ित्ने रूनुमा (प्रकट) हुए आप उनसे बिल्कुल किनाराकश रहे। उनकी शहादत के बाद आपकी ख़िदमत में ख़िलाफ़त का ए'जाज़ पेश किया और अ़दमे क़ुबूलियत के सिलसिले में क़त्ल की धमकी दी गई लेकिन आपने फ़ित्नों (उपद्रवों) को देखते हुए इस अ़ज़ीमुश्शान ए'ज़ाज़ से भी इंकार कर दिया और कोई इअ़तिनाअ़ न की। उसके बाद आपने इस शर्त पर ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) के हाथ पर बेअ़त कर ली कि वो खाना–जंगियों (गृहयुद्धों) में कोई हिस़्सा न लेंगे। चुनाँचे जंगे जमल व स़िफ़्फ़ीन में शिर्कत न की। ताहम अफ़सोस करने वाले थे और कहा करते थे कि :–

'गो मैंने ह़ज़रत अ़ली क़र्रमल्लाहु वज्हहू की त़रफ़ से अपना हाथ आगे नहीं बढ़ाता लेकिन ह़क़ पर मुक़ाबला भी अफ़ज़ल है।' (मुस्तदरक)

फ़ैस़ला ष़ालिष़ी सुनने के लिये दूमतुल जन्दाल में तशरीफ़ ले गए। ह़ज़रत अ़ली करमुल्लाह वज्हू के बाद अमीर मुआ़विया (रज़ि.) के हाथ पर बेअ़त कर ली और शौक़े जिहाद में उस अ़हद के तमाम मअ़रकों में नीज़ मुहिमे क़ुस्तुन्तुनिया में शामिल हुए। यज़ीद के हाथ पर फ़ित्न-ए-इख़्तिलाफ़े उम्मत से दामन बचाए रखने के लिये बिला तामील बेअ़त कर ली और फ़र्माया कि ये ख़ैर है तो हम इस पर राज़ी हैं और अगर ये शर है तो हमने स़ब्र किया। आजकल लोग फ़ित्नों से बचना तो दरकिनार अपने ज़ाती मक़ास़िद के लिये फ़ित्ने पैदा करते हैं और अल्लाह के ख़ौफ़ से उनके जिस्म पर लरज़ा त़ारी नहीं होता। फिर ये बेअ़त ह़क़ीक़तन न किसी डर के आधार पर थी और न आप किसी लालच में आए थे। त़नत़ना और ह़क़परस्ती का ये आ़लम था कि अम्रे ह़क़ के मुक़ाबले में किसी बड़ी से बड़ी शख़्सियत को भी ख़ात़िर में नहीं लाते थे।

बाब 167 : औरतों का मर्दों के पीछे नमाज़ पढ़ना

١٦٧ - بَابُ صَلاَةِ النِّسَاءِ خَلْفَ الرِّجَالِ

874. हमसे अबू नुऐ़म फ़ुज़ैल बिन दुकैन ने बयान किया, कहा कि हमसे सुफ़्यान इब्ने उ़ययना ने बयान किया, उनसे इस्ह़ाक़ बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अबी त़ल्हा ने, उनसे ह़ज़रत अनस (रज़ि.) ने फ़र्माया कि नबी करीम (ﷺ) ने (मेरी माँ) उम्मे सुलैम के घर में नमाज़ पढ़ाई। मैं और यतीम मिलकर आप (ﷺ) के पीछे खड़े हुए और उम्मे सुलैम (रज़ि.) हमारे पीछे थीं।

٨٧٤- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ عَنْ إِسْحَاقَ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ (صَلَّى النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي بَيْتِ أُمِّ سُلَيْمٍ، فَقُمْتُ وَيَتِيمٌ خَلْفَهُ. وَأُمُّ سُلَيْمٍ خَلْفَنَا).

875. हमसे यह़्या बिन क़ज़अ़ा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे इब्राहीम बिन सअ़द ने बयान किया, उन्होंने ज़ुहरी से बयान किया, उनसे हिन्द बिन्त ह़ारिष़ ने बयान किया, उनसे उम्मे सुलैम (रज़ि.) ने, उन्होंने फ़र्माया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जब सलाम फेरते तो आपके सलाम फेरते ही औरतें जाने के लिये उठ जाती थीं

٨٧٥- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ قَزَعَةَ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ هِنْدٍ بِنْتِ الْحَارِثِ عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ قَالَتْ: (كَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ إِذَا سَلَّمَ قَامَ النِّسَاءُ حِينَ

يَقْضِي تَسْلِيمَهُ، وَهُوَ يَمْكُثُ فِي مَقَامِهِ يَسِيرًا قَبْلَ أَنْ يَقُومَ. قَالَتْ نُرَى - وَاللهُ أَعْلَمُ - أَنَّ ذَلِكَ كَانَ لِكَيْ يَنْصَرِفَ النِّسَاءُ قَبْلَ أَنْ يُدْرِكَهُنَّ الرِّجَالُ.

[راجع: ٣٨٠]

और आँहज़रत (ﷺ) थोड़ी देर ठहरे रहते, खड़े न होते। ज़ुहरी ने कहा कि हम ये समझते हैं, आगे अल्लाह जाने, ये इसलिये था कि औरतें मर्दों से पहले निकल जाएँ।

(राजेअ : 380)

11. किताबुल जुमुआ

किताब जुम्आ के बयान में

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

तश्रीह : लफ़्ज़े जुम्आ मीम के साकिन के साथ और जुमुआ मीम की फ़तह के साथ दोनों तरह से बोला गया। अल्लामा शौकानी फ़र्माते हैं, **'क़ाल फिल्फतहि कदिख़्तुलिफ फी तस्मिय्यतिल्यौमि बिलजुम्अति मअल्इत्तिफ़ाक़ि अलाअन्नहू कान लयुसम्मा फिल्जाहिलिय्यति वल्अरूबति बिफत्हिल्ऐनि व ज़म्मिर्राइ व बिल्वहदति अल्ख़'** या'नी जुम्अे की वजहे तस्मिया में इख़्तिलाफ़ है इस पर सबका इत्तिफ़ाक़ है कि अहदे जाहिलियत में उसको यौमे ऊरूबा कहा करते थे। हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा (रह़.) ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) से रिवायत किया है कि उस दिन मख़्लूक़ की ख़िल्क़त तक्मील को पहुँची इसलिये उसे जुम्आ कहा गया। कुछ लोग कहते हैं कि तख़्लीक़े आदम की तक्मील इसी दिन हुई इसलिये इसे जुम्आ कहा गया। इब्ने हुमैद में सनदे सहीह से मरवी है कि हज़रत असद बिन ज़रारह के साथ अंसार ने जमा होकर नमाज़ अदा की और हज़रत असद बिन ज़रारह ने उनको वा'ज़ फ़र्माया। पस उसका नाम उन्होंने जुम्आ रख दिया क्योंकि वो सब इसमें जमा हुए। ये भी है कि कअब बिन लवी उस दिन अपनी क़ौम को हरमे शरीफ़ में जमा करके उनको वा'ज़ किया करता था और कहा करता था कि इस हरम से एक नबी का ज़ुहूर होने वाला है। यौमे अरूबा का नाम सबसे पहले यौमे जुम्आ कअब बिन लवी ही ने रखा। ये दिन बड़ी फ़ज़ीलत रखता है। इसमें एक घड़ी ऐसी है जिसमें जो नेक दुआ की जाए क़ुबूल होती है। हज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) ने अपने रविश के मुताबिक़ नमाज़े जुम्आ की फ़र्ज़ियत के लिये आयते क़ुर्आनी से इस्तिदलाल फ़र्माया जैसा कि नीचे के बाब से ज़ाहिर है कि हज़रत मौलाना उबैदुल्लाह साहब शैख़ुल हदीष़ मुबारक पुरी फ़र्माते हैं, **'व ज़कर इब्नुल क़य्यिम फिल्हुदा सफ़ा 102, 118 जिल्द-01 लियौमिल्जुम्अति षलाषव्व षलाषीन ख़ुसूसिय्यतन ज़कर बअ्ज़हल्हाफ़िज़ु फिल्फतहि मुलख़्ख़िसम्मिन अह़्ब्बिल्वुक़ूफ़ि अलैहा फल्यर्जिअ इलैहिमा'** (मिर्आत जिल्द नं. 2, पेज नं. 272) या'नी जुम्अे के दिन 33 ख़ुसूसियात हैं जैसा कि अल्लामा इब्ने क़य्यिम ने ज़िक्र किया है कुछ उनमें से हाफ़िज़ इब्ने हजर ने फ़त्हुल बारी में भी नक़ल की हैं। तफ़्सीलात का शौक़ रखनेवाले उन किताबों की तरफ़ रुजूअ फ़र्माएँ।

तबरानी की रिवायत है कि आप हमेशा ऐसा किया करते थे। उन सूरतों में इंसान की पैदाइश और क़यामत वग़ैरह का ज़िक्र है और ये जुम्आ के दिन ही वाक़ेअ होगी। इस ह़दीष़ से मालिकिया का रद्द हुआ जो नमाज़ में सज्दे वाली सूरत पढ़ना मकरूह जानते हैं। अबू दाऊद की रिवायत है कि नमाज़ में भी सज्दे की सूरत पढ़ी और सज्दा किया। (वह़ीदी) अल्लामा शौकानी इस बारे में कई अह़ादीष़ नक़ल करने के बाद फ़र्माते हैं, **'व हाज़िहिल्अह़ादीषु फीहा मशरूइय्यतु किराति तन्ज़ीलिस्सज्दति व हल अता अलल्इन्सानि क़ालल्इराक़ी व मिम्मन कान यफ़अलुहू मिनस़्सहाबति अ़ब्दुल्लाहिब्नि अ़ब्बास व मिनत्ताबिईन इब्राहीम बिन अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ व हुव मज़्हबश्शाफ़िई व अह़मद व अस़्हाबुल्अह़ादीष़'** (नैलुल औतार) या'नी इन अह़ादीष़ से ष़ाबित हुआ कि जुम्अे के दिन फ़ज्र की नमाज़ की पहली रकअत में अलिफ़ लाम तंज़ील सज्दा दूसरी में हल अता अ़लल इंसान पढ़ना अफ़ज़ल है। स़ह़ाबा में से ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) और ताबेई में से इब्राहीम बिन अ़ब्दुर्रहमान का यही अ़मल था और इमाम शाफ़िई और इमाम अह़मद और अहले ह़दीष़ का यही मज़हब है।

अ़ल्लामा क़स्तलानी फ़र्माते हैं कि **'वत्तअ्बीरू बिकान यश्उरू बिमवाज़बतिही अ़लैहिस्सलाम अलल्किराति बिहिमा फीहा'** या'नी ह़दीषे मज़्कूर में लफ़्ज़े काना बतला रहा है कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने जुम्अे के दिन फ़ज्र की नमाज़ में इन सूरतों पर मवाज़बत या'नी हमेशगी फ़र्माई है। अगरचे कुछ उ़लमा मवाज़बत को नहीं मानते मगर तबरानी में ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) से **'युदीमु बिज़ालिक'** लफ़्ज़ मौजूद है। या'नी आप (ﷺ) ने इस अ़मल पर मुदावमत फ़र्माई (क़स्तलानी) कुछ लोगों ने दा'वा किया था कि अहले मदीना ने ये अ़मल छोड़ दिया था, इसका जवाब अ़ल्लामा इब्ने ह़जर (रह़.) इन लफ़्ज़ों में दिया है, **'व अम्मा दअ्वाहू अन्ननास तरकुल्अमल बिही फ़ बातिलतुन लिअम्मन अक्षर अहलिल्इल्मि मिनस़्सहाबति वत्ताबिईन क़द क़ालू बिही कमा नक़लहुब्नुल्मुन्ज़िर व गैरहू हत्ता अन्नहू ष़ाबितुन अन इब्राहीम इब्नि औ़फ़ वल्अस्अद व हुव मिन किबारित्ताबिईन मिन अहलिल्मदीनति अन्नहू अम्मन्नास बिल्मदीनति बिहिमा फिल्फज्रि यौमल्जुम्अति अख़्रजहू इब्नु अबी शैबत बिइस्नादिन सहीहिन'** अल्ख़ (फ़त्हुल बारी) या'नी ये दा'वा कि लोगों ने इस पर अ़मल करना छोड़ दिया था झूठ है। इसलिये कि अक्षर अहले इल्म स़ह़ाबा व ताबेईन इसके क़ाइल हैं जैसा कि इब्ने मुंज़िर वग़ैरह ने नक़ल किया है यहाँ तक कि इब्राहीम इब्ने औ़फ़ से भी ष़ाबित है जो मदीना के बड़े ताबेईन में से हैं कि उन्होंने जुम्अे के दिन लोगों को फ़ज्र की नमाज़ पढ़ाई और इन्हीं दो सूरतों को पढ़ा। इब्ने अबी शैबा ने इसे सह़ीह़ सनद से रिवायत किया है।

बाब 11 : गांव और शहर दोनों जगह जुम्आ दुरुस्त है

١١- بَابُ الْجُمُعَةِ فِي الْقُرَى وَالْمُدُنِ

(892) हमसे मुहम्मद बिन मुष़न्ना ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अबू आ़मिर अ़क़्दी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे इब्राहीम बिन त़ह्मान ने बयान किया, उनसे अबू जम्रह नज़्र बिन अ़ब्दुर्रहमान ज़ब्ग़ी ने, उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने, आपने फ़र्माया कि नबी करीम (ﷺ) की मस्जिद के बाद सबसे पहला जुम्आ बनू क़ैस की मस्जिद में हुआ जो बेहरीन के मुल्क जुवाष़ी में थी।
(दीगर मक़ाम : 4371)

٨٩٢- حَدَّثَنِيْ مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو عَامِرٍ الْعَقَدِيُّ قَالَ: حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيْمُ بْنُ طَهْمَانَ عَنْ أَبِي جَمْرَةَ الضُّبَعِيِّ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: (إِنَّ أَوَّلَ جُمْعَةٍ جُمِّعَتْ - بَعْدَ جُمْعَةٍ فِي مَسْجِدِ رَسُولِ اللهِ ﷺ- فِي مَسْجِدِ عَبْدِ الْقَيْسِ بِجُوَاثَى مِنَ الْبَحْرَيْنِ).
[طرفه في : ٤٣٧١].

(893) हमसे बिश्र बिन मुह़म्मद मर्वज़ी ने बयान किया, कहा कि हमें अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, कहा कि हमें यूनुस बिन

٨٩٣- حَدَّثَنِيْ بِشْرُ بْنُ مُحَمَّدٍ الْمَرْوَزِيُّ قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ قَالَ : أَخْبَرَنَا يُونُسُ

यज़ीद ने ज़ुह्री से ख़बर दी, उन्हें सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह ने इब्ने आमिर से ख़बर दी, उन्होंने कहा कि मैंने नबी करीम (ﷺ) को ये कहते हुए सुना कि तुममें से हर शख़्स निगहबान है और लैष़ ने इसमें ये ज़्यादती की कि यूनुस ने बयान किया कि रुज़ैक़ बिन ह़कीम ने इब्ने शिहाब को लिखा। उन दिनों मैं भी वादिउल क़ुरा में इब्ने शिहाब के पास ही था कि क्या मैं जुम्आ पढ़ सकता हूँ। रुज़ैक़ (ऐला के आसपास) एक ज़मीन काश्त करवा रहे थे। वहाँ ह़ब्शा वग़ैरह के कुछ लोग मौजूद थे। उस ज़माने में रुज़ैक़ ऐला में (ह़ज़रत उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ की त़रफ़ से) ह़ाकिम थे। इब्ने शिहाब (रह़.) ने उन्हें लिखवाया, मैं वहीं सुन रहा था कि रुज़ैक़ जुम्आ पढ़ाएँ। इब्ने शिहाब रुज़ैक़ को ये ख़बर दे रहे थे कि सालिम ने उनसे ह़दीष़ बयान की कि अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना। आपने फ़र्माया कि तुममें से हर एक निगराँ हैं और उसके मातह़तों के बारे में उससे सवाल होगा। इमाम निगराँ हैं और उससे सवाल उसकी रिआ़या के बारे में होगा। इंसान अपने घर का निगराँ हैं और उससे उसकी रइयत (प्रजा) के बारे में सवाल होगा। औ़रत अपने शौहर के घर की निगराँ हैं और उससे उसकी रइयत के बारे में सवाल होगा। ख़ादिम अपने आक़ा के माल का निगराँ है और उससे उसकी रइयत के बारे में सवाल होगा। इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने फ़र्माया कि मेरा ख़्याल है कि आप (ﷺ) ने ये भी फ़र्माया कि इंसान अपने बाप के माल का निगराँ है और उससे उसकी रइयत के बारे में सवाल होगा और तुममें से हर शख़्स निगराँ हैं और सबसे उसकी रइयत के बारे में सवाल होगा।

(दीगर मक़ाम : 2409, 2554, 2751)

عَنِ الزُّهْرِيِّ أَخْبَرَنَا سَالِمُ بْنُ عَبْدِ اللهِ عَنِ ابنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((كُلُّكُمْ رَاعٍ)). وَزَادَ اللَّيْثُ قَالَ يُونُسُ كَتَبَ رُزَيْقُ بْنُ حُكَيْمٍ إِلَى ابْنِ شِهَابٍ- وَأَنَا مَعَهُ يَوْمَئِذٍ بِوَادِي الْقُرَى - : هَلْ تَرَى أَنْ أُجَمِّعَ؟ وَرُزَيْقٌ عَامِلٌ عَلَى أَرْضٍ يَعْمَلُهَا وَفِيْهَا جَمَاعَةٌ مِنَ السُّوْدَانِ وَغَيْرِهِمْ، وَرُزَيْقٌ يَوْمَئِذٍ عَلَى أَيْلَةَ، فَكَتَبَ ابْنُ شِهَابٍ - وَأَنَا أَسْمَعُ - يَأْمُرُهُ أَنْ يُجَمِّعَ، يُخْبِرُهُ أَنَّ سَالِمًا حَدَّثَهُ أَنَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ عُمَرَ يَقُولُ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((كُلُّكُمْ رَاعٍ، وَكُلُّكُمْ مَسْؤُولٌ عَنْ رَعِيَّتِهِ: الإِمَامُ رَاعٍ وَمَسْؤُولٌ عَنْ رَعِيَّتِهِ، وَالرَّجُلُ رَاعٍ فِي أَهْلِهِ وَهُوَ مَسْؤُولٌ عَنْ رَعِيَّتِهِ، وَالْمَرْأَةُ رَاعِيَةٌ فِي بَيْتِ زَوْجِهَا وَمَسْؤُولَةٌ عَنْ رَعِيَّتِهَا، وَالْخَادِمُ رَاعٍ فِي مَالِ سَيِّدِهِ وَمَسْؤُولٌ عَنْ رَعِيَّتِهِ)) - قَالَ: وَحَسِبْتُ أَنْ قَدْ قَالَ: ((وَالرجُلُ رَاعٍ فِي مَالِ أَبِيْهِ وَمَسْؤُولٌ عَنْ رَعِيَّتِهِ، وَكُلُّكُمْ رَاعٍ وَمَسْؤُولٌ عَنْ رَعِيَّتِهِ)).

[أطرافه في : ٢٤٠٩، ٢٥٥٤، ٢٧٥١،

तश्रीह: मुज्तहिदे मुत्लक़ ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) ने उन लोगों का रद्द फ़र्माया है जो जुम्अ़े की स़िह़त के लिये शहर और ह़ाकिम वग़ैरह की क़ुयूद लगाते हैं और गांव में जुम्अ़े के लिये इंकार करते हैं। ह़ज़रत मौलाना वह़ीदुज़्ज़माँ स़ाह़ब शारेह़े बुख़ारी फ़र्माते हैं कि इससे इमाम बुख़ारी (रह़.) ने उन लोगों का रद्द किया जो जुम्अ़े के लिये शहर की क़ैद करते हैं। अहले ह़दीष़ का मज़हब ये है कि जुम्अ़े की शर्तें जो ह़न्फ़ियों ने लगाई हैं वो सब बेदलील हैं और जुम्आ दूसरी नमाज़ों की तरह़ है सिर्फ़ जमाअ़त इसमें शर्त है। इमाम के सिवा एक आदमी और होना और नमाज़ से पहले दो ख़ुत्बे पढ़ना सुन्नत है बाक़ी

इब्ने सीरीन से मरवी है कि मदीने के लोग आँहज़रत (ﷺ) के आने से पहले जबकि अभी सूरह जुम्आ भी नाज़िल नहीं हुई थी एक दिन जमा हुए और कहने लगे कि यहूद और नसारा ने एक दिन जमा होकर इबादत के लिये मुक़र्रर किये हुए हैं क्यूँ न हम भी एक दिन मुक़र्रर करके अल्लाह की इबादत किया करें। सो उन्होंने अ़रूबा का दिन मुक़र्रर किया और असअ़द बिन ज़रारह को इमाम बनाया और जुम्आ अदा किया। उस दिन ये आयत नाज़िल हुई, **'इज़ा नूदिय लिस्सलाति मिंय्यौमिल जुम्अ़ति फ़स्औ इला ज़िक्रिल्लाहि'** (अल जुम्आ, आयत नं. 9) इसको अ़ल्लामा इब्ने हजर ने सहीह सनद के साथ अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ से नक़ल फ़र्माया और कहा है कि इसका शाहिद इस्नाद हसन के साथ अहमद, अबू दाऊद, इब्ने माज़ा ने निकाला।

उस्ताज़ुना व मौलाना हज़रत मुहद्दिष़ अ़ब्दुर्रहमान मुबारकपुरी (रह.) फ़र्माते हैं कि **'सुम्मियतिल्जुम्अ़तु लिइज्तिमाइन्नासि फीहा व कान यौमल्जुम्अ़ति युसम्मल्अ़रूबा'** या'नी जुम्आ इसलिये नाम पड़ा कि लोग इसमें जमा होते हैं और ज़मान-ए-जाहिलियत में इसका नाम यौमे अ़रूबा था। इसकी फ़ज़ीलत के बारे में इमामे तिर्मिज़ी (रह.) हदीष़ लाए हैं, **'अन अबी हुरैरत अनिन्नबिय्यि (ﷺ) क़ाल खैरु यौमिन तलअ़त फीहिश्शम्सु यौमल्जुम्अ़ति फीहि खुलिक आदमु व फीहि उदखिलल्जन्नत व फीहि उख्रेज मिन्हा व ला तक़ूमुस्साअ़तु इल्ला फी यौमिल्जुम्अ़ति'** 'या'नी तमाम दिनों में बेहतरीन दिन जिसमें सूरज तुलूअ़ होता है वो जुम्अ़े का दिन है, इसमें आदम अ़लैहिस्सलाम पैदा हुए और इसी दिन में जन्नत में दाख़िल किये गए और इस दिन उनका जन्नत से निकलना हुआ और क़यामत भी इस दिन क़ायम होगी।'

फ़ज़ाइले जुम्आ पर मुस्तक़िल किताबें लिखी गईं हैं। ये उम्मत की हफ़्तावारी ईद है मगर सद अफ़सोस कि जिन हज़रात ने देहात में जुम्आ बन्द कराने की तहरीक चलाई इससे कितने ही देहात के मुसलमान जुम्आ से इस दर्जा ग़ाफ़िल हो गए कि उनको ये भी ख़बर नहीं कि आज जुम्अ़े का दिन है। इसकी ज़िम्मेदारी उन उ़लमा पर आइद होती है। काश! ये लोग हालाते मौजूदा का जाइज़ा लेकर मफ़ादे उम्मत पर ग़ौर कर सकते।

बाब 13 :

١٣ – بَابٌ

(899) हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया, कहा कि हमसे शबाबा ने बयान किया, कहा कि हमसे वरक़ा बिन अ़म्र ने बयान किया, उनसे अ़म्र बिन दीनार ने, उनसे मुजाहिद ने, उनसे इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि औरतों को रात के वक़्त मस्जिदों में आने की इजाज़त दे दिया करो।
(राजेअ़ : 865)

٨٩٩– حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ حَدَّثَنَا شَبَابَةُ قَالَ حَدَّثَنَا وَرْقَاءُ عَنْ عَمْرِو بْنِ دِيْنَارٍ عَنْ مُجَاهِدٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ : ((ائْذَنُوا لِلنِّسَاءِ بِاللَّيْلِ إِلَى الْمَسَاجِدِ)).[راجع: ٨٦٥]

(900) हमसे यूसुफ़ बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया कि कहा हमसे उ़बैदुल्लाह इब्ने उ़मर ने बयान किया। उनसे नाफ़ेअ़ ने, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने, उन्होंने कहा कि हज़रत उ़मर (रज़ि.) की एक बीवी थीं जो सुबह और इशा की नमाज़ जमाअ़त से पढ़ने के लिये मस्जिद में आया करती थीं। उनसे कहा गया कि बावजूद यह जानते हुए कि हज़रत उ़मर (रज़ि.) इस बात को मकरूह जानते हैं और वो ग़ैरत महसूस करते हैं फिर आप मस्जिद में क्यूँ जाती हैं। इस पर उन्होंने कहा कि

٩٠٠– حَدَّثَنَا يُوسُفُ بْنُ مُوسَى قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ قَالَ حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ عُمَرَ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: كَانَتِ امْرَأَةٌ لِعُمَرَ تَشْهَدُ صَلاَةَ الصُّبْحِ وَالْعِشَاءِ فِي الْجَمَاعَةِ فِي الْمَسْجِدِ. فَقِيْلَ لَهَا : لِمَ تَخْرُجِيْنَ وَقَدْ تَعْلَمِيْنَ أَنَّ عُمَرَ يَكْرَهُ ذَلِكَ وَيَغَارُ؟ قَالَتْ: وَمَا يَمْنَعُهُ أَنْ يَنْهَانِي؟ قَالَ:

يَمنَعُهُ قَولُ رَسُولِ اللهِ ﷺ: ((لاَ تَمنَعُوا إِمَاءَ اللهِ مَسَاجِدَ اللهِ)). [راجع: ٨٦٥]

फिर वो मुझे मना क्यूँ नहीं कर देते। लोगों ने कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की उस ह़दीष़ की वजह से कि अल्लाह की बन्दियों को अल्लाह की मस्जिदों में आने से न रोको। (राजेअ़ : 865)

١٤- بَابُ الرُّخصَةِ إِن لَم يَحضُرِ الجُمُعَةِ فِي المَطَرِ

बाब 14 : अगर बारिश हो रही हो तो जुम्ओ में ह़ाज़िर होना वाजिब नहीं

٩٠١- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ: حَدَّثَنَا إِسمَاعِيلُ قَالَ: أَخبَرَنَا عَبدُ الحَمِيدِ صَاحِبُ الزِّيَادِيِّ قَالَ: حَدَّثَنَا عَبدُ اللهِ بنُ الحَارِثِ ابنُ عَمِّ مُحَمَّدِ بنِ سِيرِينَ: قَالَ ابنُ عَبَّاسٍ لِمُؤَذِّنِهِ فِي يَومٍ مَطِيرٍ: إِذَا قُلتَ أَشهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللهِ فَلاَ تَقُل: حَيَّ عَلَى الصَّلاَةِ، قُل: صَلُّوا فِي بُيُوتِكُم. فَكَأَنَّ النَّاسَ استَنكَرُوا، فَقَالَ: فَعَلَهُ مَن هُوَ خَيرٌ مِنِّي، إِنَّ الجُمُعَةَ عَزمَةٌ، وَإِنِّي كَرِهتُ أَن أُخرِجَكُم فَتَمشُونَ فِي الطِّينِ وَالدَّحضِ. [راجع: ٦١٦]

(901) हमसे मुसद्द बिन मुस्रहद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे इस्माईल बिन अ़लिया ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें स़ाहिबुज़्ज़ियादी अ़ब्दुल ह़मीद ने ख़बर दी, कहा कि हमसे मुह़म्मद बिन सीरीन के चचाज़ाद भाई अ़ब्दुल्लाह बिन ह़ारिष़ ने बयान किया, कि अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने अपने मुअज़्ज़िन को एक बार बारिश के दिन कहा कि 'अश्हदुअन्ना मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह' के बाद ह़य्या अ़लस़्स़लाह (नमाज़ की त़रफ़ आओ) न कहना बल्कि ये कहना 'स़ल्लू फ़ी बुयुतिकुम' (अपने घरों में नमाज़ पढ़ लो) लोगों ने इस बात पर ता'ज्जुब किया तो आपने फ़र्माया कि इसी त़रह़ मुझसे बेहतर इंसान (रसूलुल्लाह (ﷺ)) ने किया था। बेशक जुम्आ फ़र्ज़ है और मैं मकरूह जानता हूँ कि तुम्हें घरों से बाहर निकालकर मिट्टी और कीचड़ फिसलान में चलाऊँ। (राजेअ़ : 616)

तश्रीह : ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) का ये मत़लब था कि बेशक जुम्आ फ़र्ज़ है मगर ह़ालते बारिश में ये अ़ज़ीमत रुख़्स़त से बदल जाती है। लिहाज़ा क्यूँ न इस रुख़्स़त से तुमको फ़ायदा पहुँचाऊँ कि तुम कीचड़ में फिसलने और बारिश में भीगने से बच जाओ।

١٥- بَابُ مِن أَينَ تُؤتَى الجُمُعَةُ، وَعَلَى مَن تَجِبُ؟

बाब 15 : जुम्ओ के लिये कितनी दूर वालों को आना चाहिये और किन लोगों पर जुम्आ वाजिब है?

لِقَولِ اللهِ تَعَالَى: ﴿إِذَا نُودِيَ لِلصَّلاَةِ مِن يَومِ الجُمُعَةِ﴾ [سورة الجمعة: ٩].

وَقَالَ عَطَاءٌ: إِذَا كُنتَ فِي قَريَةٍ جَامِعَةٍ فَنُودِيَ بِالصَّلاَةِ مِن يَومِ الجُمُعَةِ فَحَقٌّ عَلَيكَ أَن تَشهَدَهَا، سَمِعتَ النِّدَاءَ أَو لَم

क्योंकि अल्लाह तआ़ला का (सूरह जुम्आ में) इर्शाद है 'जब जुम्ओ के दिन नमाज़ के लिये अज़ान हो (तो अल्लाह का ज़िक्र की त़रफ़ दौड़ो) अ़त़ा बिन रिबाह ने कहा कि जब तुम ऐसी बस्ती में हो जहाँ जुम्आ हो रहा हो और जुम्ओ के दिन नमाज़ के लिये अज़ान दी जाए तो तुम्हारे लिये जुम्ओ की नमाज़ पढ़ने आना वाजिब है। अज़ान सुनी हो या न सुनी हो। और ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.)

طِيبٍ، ثُمَّ رَاحَ وَلَمْ يُفَرِّقْ بَيْنَ اثْنَيْنِ فَصَلَّى مَا كُتِبَ لَهُ، ثُمَّ إِذَا خَرَجَ الإِمَامُ أَنْصَتَ، غُفِرَ لَهُ مَا بَيْنَهُ وَبَيْنَ الْجُمُعَةِ الأُخْرَى)). [راجع: ٨٨٣]

और जितनी उसकी क़िस्मत में थी, नमाज़ पढ़ी, फिर जब इमाम बाहर आया और ख़ुत्बा शुरू किया तो ख़ामोश हो गया, उसके उस जुम्अ़े में से दूसरे जुम्अ़े तक के तमाम गुनाह बख़्श दिए जाएँगे। (राजेअ़ : 883)

तश्रीह : आदाबे जुम्अ़ा में से ज़रूरी अदब है कि आने वाला निहायत ही अदब व मतानत के साथ जहाँ जगह पाए बैठ जाए। किसी की गर्दन फलाँगकर आगे न बढ़ें क्योंकि ये शरअ़न मम्नूअ़ और मअ़यूब है। इससे ये भी वाज़ेह़ हो गया कि शरीअ़ते इस्लामी में किसी को तकलीफ़ देना ख़्वाह वो तकलीफ़ बनाम इबादते नमाज़ ही में क्यूँ न हों। वो अल्लाह के नज़दीक गुनाह है। इसी मज़्मून की अगली ह़दीष़ में मज़ीद तफ़्सील आ रही है।

٢٠- بَابُ لاَ يُقِيمُ الرَّجُلُ أَخَاهُ يَوْمَ الْجُمُعَةِ وَيَقْعُدُ فِي مَكَانِهِ

बाब 20 : जुम्अ़े के दिन किसी मुसलमान भाई को उसकी जगह से उठाकर खुद वहाँ न बैठे

٩١١- حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ قَالَ: أَخْبَرَنَا مَخْلَدُ بْنُ يَزِيدَ قَالَ: أَخْبَرَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ قَالَ: سَمِعْتُ نَافِعًا قَالَ: سَمِعْتُ ابْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا يَقُولُ: ((نَهَى النَّبِيُّ ﷺ أَنْ يُقِيمَ الرَّجُلُ أَخَاهُ مِنْ مَقْعَدِهِ وَيَجْلِسَ فِيهِ)). قُلْتُ لِنَافِعٍ: الْجُمُعَةَ؟ قَالَ: الْجُمُعَةَ وَغَيْرَهَا. [طرفاه في : ٦٢٦٩، ٦٢٧٠].

(911) हमसे मुह़म्मद बिन सलाम बैकुन्दी (रह़.) ने बयान किया, कहा कि हमें मुख़्लद बिन यज़ीद ने ख़बर दी, कहा कि हमें इब्ने जुरैज ने ख़बर दी, कहा कि मैंने नाफ़ेअ़ से सुना, उन्होंने कहा मैंने ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) से सुना, उन्होंने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने इससे मना किया है कि कोई शख़्स अपने मुसलमान भाई को उठाकर उसकी जगह ख़ुद बैठ जाए। मैंने नाफ़ेअ़ से पूछा कि क्या ये जुम्अ़े के लिये है तो उन्हों ने जवाब दिया कि जुम्अ़े और ग़ैर जुम्अ़ा सबके लिये यही हुक्म है। (दीगर मक़ाम : 6269, 6270)

ता'ज्जुब है उन लोगों पर जो अल्लाह की मसाजिद यहाँ तक कि का'बा मुअ़ज्ज़मा और मदीनतुल मुनव्वरा में ष़वाब के लिये दौड़ते हैं और दूसरों को तकलीफ़ पहुँचाकर उनकी जगह पर क़ब्ज़ा करते हैं। बल्कि कुछ मर्तबा झगड़ा–फ़साद तक नौबत पहुँचाकर फिर वहाँ नमाज़ पढ़ते और अपने नफ़्स को ख़ुश करते हैं कि वो इबादते इलाही कर रहे हैं। उनको मा'लूम होना चाहिये कि उन्होंने इबादत का सह़ी मफ़हूम नहीं समझा बल्कि कुछ नमाज़ी तो ऐसे हैं कि उनको ह़क़ीक़ते इबादत का पता नहीं है। **'अल्लाहुम्मर्हम अ़ला उम्मति ह़बीबिक (ﷺ)'**

यहाँ मौलाना वह़ीदुज़्ज़माँ मरह़ूम फ़र्माते हैं कि मस्जिद अल्लाह की है। किसी के बाबा–दादा की मिल्कियत नहीं जो नमाज़ी पहले आया और किसी जगह बैठ गया वही उसी जगह का ह़क़दार है। अब बादशाह या वज़ीर भी आए तो उसको उठाने का ह़क़ नहीं रखता। (वह़ीदी)

٢١- بَابُ الأَذَانِ يَوْمَ الْجُمُعَةِ

बाब 21 : जुम्अ़े के दिन अज़ान का बयान

٩١٢- حَدَّثَنَا آدَمُ قَالَ : حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي ذِئْبٍ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنِ السَّائِبِ بْنِ يَزِيدَ قَالَ: ((كَانَ النِّدَاءُ يَوْمَ الْجُمُعَةِ أَوَّلُهُ إِذَا

(912) हमसे आदम ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे इब्ने अबी ज़िब ने ज़ुह्री के वास्ते से बयान किया, उनसे साइब बिन यज़ीद ने कि नबी करीम (ﷺ) और ह़ज़रत अबूबक्र और ह़ज़रत

جَلَسَ الإِمَامُ عَلَى الْمِنْبَرِ عَلَى عَهْدِ النَّبِيِّ ﷺ وَأَبِي بَكْرٍ وَعُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا. فَلَمَّا كَانَ عُثْمَانَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ. وَكَثُرَ النَّاسُ - زَادَ النِّدَاءَ الثَّالِثَ عَلَى الزَّوْرَاءِ قَالَ أَبُو عَبْدِ اللهِ الزَّوْرَاءُ مَوْضِعٌ بِالسُّوقِ بِالْمَدِينَةِ. [أطرافه في: ٩١٣، ٩١٥، ٩١٦].

उ़मर (रज़ि.) के ज़माने में जुम्अ़े की पहली अज़ान उस वक़्त दी जाती थी जब इमाम मिम्बर पर ख़ुत्बा के लिये बैठते लेकिन ह़ज़रत उ़स्मान (रज़ि.) के ज़माने में जब मुसलमानों की कष़रत हो गई तो वो मुक़ामे ज़ौरा से एक और अज़ान दिलवाने लगे। अबू अ़ब्दुल्लाह इमाम बुख़ारी (रह.) फ़र्माते हैं कि ज़ौरा मदीना के बाज़ार में एक जगह है। (दीगर मक़ाम : 913, 915, 916)

तश्रीह : मा'लूम हुआ कि असल अज़ाने जुम्आ वही थी जो आँह़ज़रत (ﷺ) और शैख़ेन के मुबारक ज़मानों में इमाम के मिम्बर पर आने के वक़्त दी जाती थी। बाद में ह़ज़रत उ़स्मान ग़नी (रज़ि.) ने लोगों को आगाह करने के लिये बाज़ार में एक अज़ान का और इज़ाफ़ा कर दिया ताकि वक़्त से लोग जुम्आ के लिये तैयार हो सकें। ह़ज़रत उ़स्मान (रज़ि.) की त़रह़ बवक़्ते ज़रूरत मस्जिद से बाहर किसी मुनासिब जगह पर ये अज़ान अगर अब भी दी जाए तो जाइज़ है मगर जहाँ ज़रूरत न हो वहाँ सुन्नत के मुत़ाबिक़ स़िर्फ़ ख़ुत्बा ही के वक़्त ख़ूब आवाज़ से एक ही अज़ान देनी चाहिये।

बाब 22 : जुम्अ़े के लिये एक मुअज़्ज़िन मुक़र्रर करना

٢٢- بَابُ الْمُؤَذِّنِ الْوَاحِدِ يَوْمَ الْجُمُعَةِ

٩١٣- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ قَالَ : حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ أَبِي سَلَمَةَ الْمَاجِشُونُ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنِ السَّائِبِ بْنِ يَزِيدَ : (أَنَّ الَّذِي زَادَ التَّأْذِينَ الثَّالِثَ يَوْمَ الْجُمُعَةِ عُثْمَانُ بْنُ عَفَّانَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ- حِينَ كَثُرَ أَهْلُ الْمَدِينَةِ - وَلَمْ يَكُنْ لِلنَّبِيِّ ﷺ مُؤَذِّنٌ غَيْرَ وَاحِدٍ، وَكَانَ التَّأْذِينُ يَوْمَ الْجُمُعَةِ حِينَ يَجْلِسُ الإِمَامُ) يَعْنِي عَلَى الْمِنْبَرِ.

[راجع: ٩١٢]

(913) हमसे अबू नुऐ़म फ़ज़्ल बिन दुकैन ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अबू सलमा माजिशून ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे ज़ुह्री ने बयान किया, उनसे साइब बिन यज़ीद ने कि जुम्अ़े में तीसरी अज़ान ह़ज़रत उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान (रज़ि.) ने बढ़ाई जबकि मदीना में लोग ज़्यादा हो गए थे जबकि नबी करीम (ﷺ) के एक ही मुअज़्ज़िन थे। (आप (ﷺ) के दौर में) जुम्अ़े की अज़ान उस वक़्त दी जाती थी जब इमाम मिम्बर पर बैठता।

(राजेअ़ : 912)

इससे उन लोगों का रद्द हुआ जो कहते हैं कि आँह़ज़रत (ﷺ) जब मिम्बर पर जाते तो तीन मुअज़्ज़िन एक के बाद एक अज़ान देते। एक मुअज़्ज़िन का मत़लब ये है कि जुम्अ़े की अज़ान ख़ास़, एक मुअज़्ज़िन ह़ज़रत बिलाल (रज़ि.) ही दिया करते थे वरना वैसे तो ज़मान-ए-नबवी में कई मुअज़्ज़िन मुक़र्रर थे जो बारी-बारी अपने वक़्तों पर अज़ान दिया करते थे।

बाब 23 : इमाम मिम्बर पर बैठे बैठे अज़ान सुनकर उसका जवाब दे

٢٣- بَابُ يُجِيبُ الإِمَامُ عَلَى الْمِنْبَرِ إِذَا سَمِعَ النِّدَاءَ

(914) हमसे मुहम्मद बिन मुक़ातिल ने बयान किया, उन्होंने

٩١٤- حَدَّثَنَا ابْنُ مُقَاتِلٍ قَالَ: أَخْبَرَنَا

लिसुन्नतिर्रातिबति व अदबिल्ख़ुत्बति जमीअन बिक़दरिल्इम्कानि व ला तग़तर फी हाज़िहिल्मस्अलति बिमा यल्हजु बिही अहलु बलदिक फइन्नल्हदीष़ सहीहुन वाजिबुन इत्तिबाउहू' (हुज्जतुल्लाहिल बालिग़ा : जिल्द नं. 2, पेज नं. 101) या'नी जब कोई नमाज़ी ऐसे हाल में मस्जिद में आए कि इमाम ख़ुत्बा दे रहा हो तो दो हल्की रकअत पढ़ ले ताकि सुन्नते रातिबा और अदबे ख़ुत्बा दोनों की रिआयत हो सके और इस मसले के बारे में तुम्हारे शहर के लोग जो शोर करते हैं (और इन रकअतों के पढ़ने से रोकते हैं, उनके धोखे में न आना क्योंकि इस मसले के हक़ में हदीषे सहीह वारिद है जिसकी इत्तेबा (पैरवी) वाजिब है, वबिल्लाहित्तौफ़ीक़।

बाब 34 : ख़ुत्बा में दोनों हाथ उठाकर दुआ माँगना

٣٤- بَابُ رَفْعِ الْيَدَيْنِ فِي الْخُطْبَةِ

(932) हमसे मुसद्दद बिन मुस्रहद ने बयान किया, कहा कि हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अब्दुल अज़ीज़ बिन अनस ने बयान किया, उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने, (दूसरी सनद) और हम्माद ने यूनुस से भी रिवायत की अब्दुल अज़ीज़ और यूनुस दोनों ने ष़ाबित से, उन्होंने अनस (रज़ि.) से कि नबी करीम (ﷺ) जुम्अे का ख़ुत्बा दे रहे थे कि एक शख़्स खड़ा हो गया और कहने लगा या रसूलल्लाह (ﷺ)! मवेशी और बकरियाँ हलाक हो गईं (बारिश न होने की वजह से) आप (ﷺ) दुआ फ़र्माएँ कि अल्लाह तआला बारिश बरसाए। चुनाँचे आप (ﷺ) ने दोनों हाथ फैलाए और दुआ की।

(दीगर मक़ाम : 933, 1013, 1014, 1015, 1016, 1017, 1018, 1019, 1021, 1029, 1033, 3582, 6093, 6342)

٩٣٢- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ: حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ عَبْدِ الْعَزِيزِ عَنْ أَنَسٍ، وَعَنْ يُونُسَ عَنْ ثَابِتٍ بْنِ أَنَسٍ قَالَ: ((بَيْنَمَا النَّبِيُّ ﷺ يَخْطُبُ يَوْمَ الْجُمُعَةِ إِذْ قَامَ رَجُلٌ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ هَلَكَ الْكُرَاعُ هَلَكَ الشَّاءُ، فَادْعُ اللهَ أَنْ يَسْقِيَنَا. فَمَدَّ يَدَيْهِ وَدَعَا)).

[أطرافه في : ٩٣٣، ١٠١٣، ١٠١٤، ١٠١٥، ١٠١٦، ١٠١٧، ١٠١٨، ١٠١٩، ١٠٢١، ١٠٢٩، ١٠٣٣، ٣٥٨٢، ٦٠٩٣، ٦٣٤٢].

बाब 35 : जुम्अे के ख़ुत्बे में बारिश के लिये दुआ करना

٣٥- بَابُ الاِسْتِسْقَاءِ فِي الْخُطْبَةِ يَوْمَ الْجُمُعَةِ

933. हमसे इब्राहीम बिन मुन्ज़िर ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे वलीद बिन मुस्लिम ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे इमाम अबू अम्र औज़ाई ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे इस्हाक़ बिन अब्दुल्लाह बिन अबी तलहा (रज़ि.) ने बयान किया, उनसे हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि एक मर्तबा नबी करीम (ﷺ) के ज़माने में क़हत (अकाल) पड़ा, आप (ﷺ) ख़ुत्बा दे रहे थे कि एक देहाती ने कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! जानवर मर गये और अहलो-अयाल दानों को तरस गये। आप हमारे लिये अल्लाह तआला से दुआ फ़र्माएँ। आप (ﷺ) ने दोनों

٩٣٣- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ الْمُنْذِرِ قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو عَمْرٍو قَالَ حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي طَلْحَةَ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ قَالَ: أَصَابَتِ النَّاسَ سَنَةٌ عَلَى عَهْدِ النَّبِيِّ ﷺ فَبَيْنَمَا النَّبِيُّ ﷺ يَخْطُبُ فِي يَوْمِ الْجُمُعَةِ قَامَ أَعْرَابِيٌّ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ، هَلَكَ الْمَالُ، وَجَاعَ الْعِيَالُ، فَادْعُ اللهَ لَنَا. ((فَرَفَعَ

يَدَيْهِ)) – وَمَا نَرَى فِي السَّمَاءِ قَزَعَةً – فَوَ الَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ مَا وَضَعَهَا حَتَّى ثَارَ السَّحَابُ أَمْثَالَ الْجِبَالِ، ثُمَّ لَمْ يَنْزِلْ عَنْ مِنْبَرِهِ حَتَّى رَأَيْتُ الْمَطَرَ يَتَحَادَرُ عَلَى لِحْيَتِهِ ﷺ. فَمُطِرْنَا يَوْمَنَا ذَلِكَ، وَمِنَ الْغَدِ، وَبَعْدَ الْغَدِ، وَالَّذِي يَلِيهِ حَتَّى الْجُمُعَةِ الأُخْرَى.

हाथ उठाए, बादल का एक टुकड़ा भी आसमान पर नज़र नहीं आ रहा था। उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है, अभी आप (ﷺ) ने हाथों को नीचे भी नहीं किया था कि पहाड़ों की तरह घटा उमड़ आई और आप (ﷺ) अभी मिम्बर से उतरे भी नहीं थे कि मैंने देखा कि बारिश का पानी आप (ﷺ) की रीशे मुबारक से टपक रहा था। उस दिन उसके बाद और लगातार अगले जुम्अे तक बारिश होती रही।

فَقَامَ ذَلِكَ الأَعْرَابِيُّ – أَوْ قَالَ غَيْرُهُ – فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ تَهَدَّمَ الْبِنَاءُ، وَغَرِقَ الْمَالُ، فَادْعُ اللهَ لَنَا. فَرَفَعَ يَدَيْهِ فَقَالَ: ((اللَّهُمَّ حَوَالَيْنَا وَلاَ عَلَيْنَا)). فَمَا يُشِيرُ بِيَدِهِ إِلَى نَاحِيَةٍ مِنَ السَّحَابِ إِلاَّ انْفَرَجَتْ، وَصَارَتِ الْمَدِينَةُ مِثْلَ الْجَوْبَةِ. وَسَالَ الْوَادِي قَنَاةُ شَهْرًا، وَلَمْ يَجِيءْ أَحَدٌ مِنْ نَاحِيَةٍ إِلاَّ حَدَّثَ بِالْجَوْدِ)).

[راجع: ٩٣٢]

(दूसरे जुम्अे को) यही देहाती फिर खड़ा हुआ या कहा कि कोई दूसरा शख़्स खड़ा हुआ और कहने लगा कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! इमारतें मुनहदिम हो गईं और जानवर डूब गए। आप (ﷺ) हमारे लिये अल्लाह से दुआ कीजिए। आप (ﷺ) ने दोनों हाथ उठाए और दुआ की कि ऐ अल्लाह! अब दूसरी तरफ़ बारिश बरसा और हमसे रोक दे। आप (ﷺ) हाथ से बादल के लिये जिस तरफ़ इशारा करते, उधर मतलअ साफ़ हो जाता। सारा मदीना तालाब की तरह बन गया था और क़नात का नाला महीना भर बहता रहा और आसपास से आने वाले भी अपने यहाँ भरपूर बारिश की ख़बर देते रहे। (राजेअ : 932)

तश्रीह : बाब और नक़लकर्दा हदीष़ से ज़ाहिर है कि इमाम बवक़्ते ज़रूरत जुम्अे के ख़ुत्बा में भी बारिश के लिये दुआ कर सकता है और ये भी षाबित हुआ कि किसी ऐसी अवामी ज़रूरत के लिये दुआ करने की दरख़्वास्त बहालते ख़ुत्बा इमाम से की जा सकती है और ये भी कि इमाम ऐसी दरख़्वास्त पर ख़ुत्बा ही में तवज्जह कर सकता है। जिन हज़रात ने ख़ुत्बा को नमाज़ का दर्जा देकर उसमें बवक़्ते ज़रूरत तकल्लुम को भी मना बतलाया है। इस हदीष़ से ज़ाहिर है कि उनका ये ख़्याल सहीह नहीं है।

अल्लामा शौकानी (रह.) इस वाक़िअे पर लिखते हैं, **'व फिल्हदीषि फवाइदुम्मिन्हा जवाज़ुल्मुकालमति मिनल्ख़तीबि हालल्ख़ुत्बति व तक्रारहुआइ व इद्ख़ालल्इस्तिस्काइ फी ख़ुत्बतिन वहुआउ बिही अलल्मिम्बरि व तर्कु तहवीलिर्रिदाई वल्इस्तिक़बालि वल्इज्तिजाइ बिस़लातिल्जुम्अति अन स़लातिल्इस्तिस्काइ कमा तक़द्दम व फीहि इल्मुम्मिन अलामिन्नुबुव्वति फ़ीहि इजाबतुल्लाहि तआला दुआअ नबिय्यिही व इम्तिषालस्सहाबि अम्मरहू कमा वक़अ कषीरुम्मिनर्रिवायाति व गैर ज़ालिक मिनल्फवाइदि'** (नैलुल औतार) या'नी इस हदीष़ से बहुत से मसाइल निकलते हैं मषलन हालते ख़ुत्बा में ख़तीब से बात करने का जवाज़ नीज़ दुआ करना (और उसके लिये हाथों को उठाकर दुआ करना) और ख़ुत्ब-ए-जुम्आ में इस्तिस्क़ाअ की दुआ और इस्तिस्क़ाअ के लिये ऐसे मौक़े पर चादर उलटने-पलटने को छोड़ देना और का'बा की ओर रुख़ भी न होना और नमाज़े जुम्आ को नमाज़े इस्तिस्क़ाअ के बदले में काफ़ी समझना। और उसमें आपकी नुबुव्वत की एक अहम दलील भी है कि अल्लाह ने आपकी दुआ क़ुबूल फ़र्माई और बादलों को आपका फ़र्मान तस्लीम करने पर मामूर फ़र्मा दिया और भी बहुत से फ़वाइद हैं। आपने किन लफ़्ज़ों में दुआ-ए-इस्तिस्क़ाअ की। इस बारे में भी कई रिवायात हैं जिनमें जामेअ दुआएँ ये है, **'अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिलआलमीनर्रहमानिर्रहीम मालिकि यौमिद्दीन ला इलाहा इल्लल्लाहु यफ़्अलुल्लाहु मा युरीदु अल्लाहुम्मा अन्त अल्लाह ला इलाहा इल्लाअन्त अन्तल्गनी व नहनुल्फ़ुक़राउ अन्ज़िल अलैनल्गैष मा अन्ज़ल्त लना क़ुव्वतन व बलागन इला हीन**

अल्लाहुम्मस्किना गैषन मुग़ीषन मरीअन मरीअन तबक़न गदकन आज़िलन ग़ैर राइषिन अल्लाहुम्म अस्क़ी इबादक व बहाइमक वन्शुर रहमतक वहइ बलदकलमय्यत' ये भी मशरूअ अम्र है कि ऐसे मौक़ों पर अपने में से किसी नेक बुज़ुर्ग को दुआ के लिये आगे किया जाए और वो अल्लाह से रो-रोकर दुआ करे और लोग पीछे से आमीन-आमीन कहकर गिरया व ज़ारी के साथ अल्लाह से पानी का सवाल करें।

बाब 36 : जुम्अे के दिन ख़ुत्बा के वक़्त चुप रहना

٣٦- بَابُ الإِنْصَاتِ يَوْمَ الْجُمُعَةِ وَالإِمَامُ يَخْطُبُ

और ये भी लग़्व हरकत है कि अपने पास बैठे हुए शख़्स से कोई कहे कि 'चुप रह' सलमान फ़ारसी (रज़ि.) ने भी नबी करीम (ﷺ) से नक़ल किया कि इमाम जब ख़ुत्बा शुरू करे तो ख़ामोश हो जाना चाहिये।

وَإِذَا قَالَ لِصَاحِبِهِ أَنْصِتْ فَقَدْ لَغَا. وَقَالَ سَلْمَانُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: ((يَنْصِتُ إِذَا تَكَلَّمَ الإِمَامُ)).

(934) हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा कि हमसे लैष बिन सअद ने अक़ील से बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उन्होंने कहा कि मुझे सईद बिन मुसय्यिब ने ख़बर दी और उन्हें अबू हुरैरह (रज़ि.) ने ख़बर दी कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि जब इमाम ख़ुत्बा दे रहा हो और तू अपने पास बैठे हुए आदमी से कहे कि 'चुप रह' तो तूने ख़ुद एक लग़्व हरकत की।

٩٣٤- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ قَالَ: حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي سَعِيْدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ أَخْبَرَهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((إِذَا قُلْتَ لِصَاحِبِكَ يَوْمَ الْجُمُعَةِ: أَنْصِتْ - وَالإِمَامُ يَخْطُبُ - فَقَدْ لَغَوْتَ)).

बाब 37 : जुम्अे के दिन वो घड़ी जिसमें दुआ क़ुबूल होती है

٣٧- بَابُ السَّاعَةِ الَّتِي فِي يَوْمِ الْجُمُعَةِ

(935) हमसे अब्दुल्लाह बिन मस्लमा क़अम्बी ने इमाम मालिक (रह.) से बयान किया, उनसे अबुज़्जिनाद ने, उनसे अब्दुर्रहमान अअरज ने, उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने जुम्अे के ज़िक्र में एक बार फ़र्माया कि इस दिन एक ऐसी घड़ी आती है जिसमें अगर कोई मुसलमान बन्दा खड़ा नमाज़ पढ़ रहा हो और कोई चीज़ अल्लाह पाक से मांग रहा हो तो अल्लाह पाक उसे वो चीज़ ज़रूर देता है। हाथ के इशारे से आपने बतलाया कि वो साअत बहुत थोड़ी सी है। (दीगर मक़ाम : 5294, 6400)

٩٣٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ عَنْ مَالِكٍ عَنْ أَبِي الزِّنَادِ عَنِ الأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ ذَكَرَ يَوْمَ الْجُمُعَةِ فَقَالَ: ((فِيهِ سَاعَةٌ لاَ يُوَافِقُهَا عَبْدٌ مُسْلِمٌ وَهُوَ قَائِمٌ يُصَلِّي يَسْأَلُ اللهَ شَيْئًا إِلاَّ أَعْطَاهُ إِيَّاهُ)) وَأَشَارَ بِيَدِهِ يُقَلِّلُهَا.

[طرفاه في : ٥٢٩٤، ٦٤٠٠].

तश्रीह : इस घड़ी की तअय्युन (निर्धारण) में इख़्तिलाफ़ है कि ये घड़ी किस वक़्त आती है कुछ रिवायत में इसके लिये वो वक़्त बतलाया गया है जब इमाम नमाज़े जुम्आ शुरू करता है। गोया नमाज़ ख़त्म होने तक बीच में ये घड़ी आती है कुछ रिवायात में तुलूअे फ़ज्र से उसका वक़्त बतलाया गया है। कुछ रिवायात में अस्र से मग़्रिब तक का वक़्त बतलाया गया है। ह़ाफ़िज़ इब्ने ह़जर (रह़.) फ़त्हुल बारी में बहुत तफ़्सील के साथ इन सारी रिवायात पर रोशनी डाली है और इस बारे

बाब 4 : ईदुल फ़ितर में नमाज़ के लिये जाने से पहले कुछ खा लेना

٤ – بَابُ الأَكْلِ يَوْمَ الْفِطْرِ قَبْلَ الْخُرُوْجِ

953. हमसे मुहम्मद बिन अ़ब्दुर्रहीम ने बयान किया कि हम को सईद बिन सुलैमान ने ख़बर दी कि हमें हुशैम बिन बशीर ने ख़बर दी, कहा कि हमें अ़ब्दुल्लाह बिन अबीबक्र बिन अनस ने ख़बर दी और उन्हें अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने, आपने बतलाया कि रसूले-करीम (ﷺ) ईदुल-फ़ितर के दिन न निकलते जब तक कि आप (ﷺ) चन्द खजूर न खा लेते और मुरजी बिन रजाअ ने कहा कि मुझ से उ़बैदुल्लाह बिन अबीबक्र ने बयान किया, कहा कि मुझ से अनस (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से, फिर यही ह़दीष़ बयान की कि आप ताक़ अ़दद खजूरें खाते थे।

٩٥٣– حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحِيْمِ أَخْبَرَنَا سَعِيْدُ بْنُ سُلَيْمَانَ قَالَ: حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ قَالَ : أَخْبَرَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ أَبِي بَكْرِ بْنِ أَنَسٍ عَنْ أَنَسٍ قَالَ: ((كَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ لاَ يَغْدُو يَوْمَ الْفِطْرِ حَتَّى يَأْكُلَ تَمَرَاتٍ)). وَقَالَ مُرَجَّأُ بْنُ رَجَاءٍ حَدَّثَنِي عُبَيْدُ اللهِ بْنِ أَبِيْ بَكْرٍ قَالَ: حَدَّثَنِي أَنَسٌ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: ((يَأْكُلُهُنَّ وِتْرًا)).

मा'लूम हुआ कि ईदुल फ़ित्र में नमाज़ के लिये निकलने से पहले चंद खजूरें अगर मयस्सर हों तो खा लेना सुन्नत है।

बाब 5 : बक़र ईद के दिन खाना

٥ – بَابُ الأَكْلِ يَوْمَ النَّحْرِ

इस बाब में ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) ने वो साफ़ ह़दीष़ न ला सके जो इमाम अह़मद व तिर्मिज़ी (रह़.) ने रिवायत की है कि बक़र ईद के दिन आप(ﷺ) लौटकर अपनी कुर्बानी में से खाते। वो ह़दीष़ भी थी मगर उन शराइत के मुताबिक़ न थी जो ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) के शराइत हैं, इसलिये आप (रह़.) उसको न ला सके।

945. हमसे मुसद्दद बिन मुस्रहद ने बयान किया, कहा कि हमसे इस्माईल बिन अ़ला ने अय्यूब सुख़ितयानी से, उन्होंने मुहम्मद बिन सीरीन से बयान किया, उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि जो शख़्स नमाज़ से पहले क़ुर्बानी कर दे उसे दोबारा क़ुर्बानी करनी चाहिये। इस पर एक शख़्स (अबू बुर्दा) ने खड़े होकर कहा कि ये ऐसा दिन है जिस दिन गोश्त की ख़्वाहिश ज़्यादा होती है और उसने अपने पड़ौसियों की तंगी का बयान किया। नबी करीम (ﷺ) ने उसको सच्चा समझा, उस शख़्स ने कहा कि मेरे पास एक साल की पठिया है जो गोश्त की दो बकरियों से भी मुझे ज़्यादा प्यारी है। नबी करीम (ﷺ) ने इस पर उसे इजाज़त दे दी कि वही क़ुर्बानी करे। अब मुझे मा'लूम नहीं कि ये इजाज़त दूसरों के लिये भी है या नहीं।

(दीगर मक़ामात : 984, 5546, 5549, 5561)

٩٥٤– حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ: حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيْلُ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ سِيْرِيْنَ عَنْ أَنَسٍ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((مَنْ ذَبَحَ قَبْلَ الصَّلاَةِ فَلْيُعِدْ)). فَقَامَ رَجُلٌ فَقَالَ: هَذَا يَوْمٌ يُشْتَهَى فِيْهِ اللَّحْمُ، وَذَكَرَ مِنْ جِيْرَانِهِ، فَكَأَنَّ النَّبِيَّ ﷺ صَدَّقَهُ، قَالَ: وَعِنْدِي جَذَعَةٌ أَحَبُّ إِلَيَّ مِنْ شَاتَيْ لَحْمٍ. فَرَخَّصَ لَهُ النَّبِيُّ ﷺ، فَلاَ أَدْرِي أَبَلَغَتِ الرُّخْصَةُ مَنْ سِوَاهُ أَمْ لاَ.

[أطرافه في: ٩٨٤، ٥٥٤٦، ٥٥٤٩، ٥٥٦١].

ये इजाज़त ख़ास़ अबू बुर्दा (रज़ि.) के लिये थी जैसा कि आगे आ रहा है। ह़ज़रत अनस (रज़ि.) को उनकी ख़बर नहीं हुई इसलिये उन्होंने ऐसा कहा।

955. हमसे उ़ष्मान बिन अबी शैबा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे जरीर ने बयान किया, उनसे मन्सूर ने, उनसे शुअ़बी ने, उनसे बराअ बिन आ़ज़िब (रज़ि.) ने, आपने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने ईदुल अज़्हा की नमाज़ के बाद ख़ुत्बा देते हुए फ़र्माया कि जिस शख़्स ने हमारी नमाज़ की सी नमाज़ पढ़ी और हमारी क़ुर्बानी की तरह क़ुर्बानी की उसकी क़ुर्बानी स़हीह़ हुई। लेकिन जो शख़्स नमाज़ से पहले क़ुर्बानी करे, वो नमाज़ से पहले ही गोश्त खाता है मगर वो क़ुर्बानी नहीं। बराअ के मामूं अबू बुर्दा बिन नियार ये सुनकर बोले कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! मैंने अपनी बकरी की क़ुर्बानी नमाज़ से पहले कर दी, मैंने सोचा कि ये खाने-पीने का दिन है। मेरी बकरी अगर घर पर पहला ज़बीहा बने तो बहुत अच्छा हो। इस ख़्याल से मैंने बकरी ज़िब्ह कर दी और नमाज़ से पहले ही उसका गोश्त भी खा लिया। इस पर आपने फ़र्माया कि फिर तुम्हारी बकरी गोश्त की बकरी हुई। अबू बुर्दा बिन नियार ने अ़र्ज़ किया कि मेरे पास एक साल की पठिया है और वो मुझे गोश्त की दो बकरियों से भी अ़ज़ीज़ है। क्या उससे मेरी क़ुर्बानी हो जाएगी? आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि हाँ, लेकिन तुम्हारे बाद किसी की क़ुर्बानी इस उ़म्र के नीचे से नाकाफ़ी होगी।

(राजेअ़ : 951)

٩٥٥ - حَدَّثَنَا عُثْمَانُ قَالَ: حَدَّثَنَا جَرِيْرٌ عَنْ مَنْصُورٍ عَنِ الشَّعْبِيِّ عَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: خَطَبَنَا النَّبِيُّ ﷺ يَومَ الأَضْحَى بَعْدَ الصَّلاَةِ فَقَالَ: ((مَنْ صَلَّى صَلاَتَنَا وَنَسَكَ نُسُكَنَا فَقَدْ أَصَابَ النُّسُكَ، وَمَنْ نَسَكَ قَبْلَ الصَّلاَةِ فَإِنَّهُ قَبْلَ الصَّلاَةِ وَلاَ نُسُكَ لَهُ)). فَقَالَ أَبُو بُرْدَةَ بْنُ نِيَارٍ خَالُ الْبَرَاءِ: يَا رَسُولَ اللهِ فَإِنِّي نَسَكْتُ شَاتِي قَبْلَ الصَّلاَةِ وَعَرِفْتُ أَنَّ الْيَومَ يَومُ أَكْلٍ وَشُرْبٍ، وَأَحْبَبْتُ أَنْ تَكُونَ شَاتِي أَوَّلَ شَاةٍ تُذْبَحُ فِي بَيْتِي، فَذَبَحْتُ شَاتِي وَتَغَدَّيْتُ قَبْلَ أَنْ آتِيَ الصَّلاَةَ. قَالَ: ((شَاتُكَ شَاةُ لَحْمٍ)). قَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ فَإِنَّ عِنْدَنَا عَنَاقًا لَنَا جَذَعَةً أَحَبُّ إِلَيَّ مِنْ شَاتَيْنِ أَفَتَجْزِي عَنِّي؟ قَالَ: ((نَعَمْ. وَلَنْ تَجْزِيَ عَنْ أَحَدٍ بَعْدَكَ)).

[راجع: ٩٥١]

तश्रीह़ : क्योंकि क़ुर्बानी में मुसन्ना बकरी ज़रूरी है जो दूसरे साल में हो और दाँत निकाल चुकी हो। बग़ैर दाँत निकाले बकरी क़ुर्बानी के लायक़ नहीं होती। अ़ल्लामा शौकानी (रह़.) नैलुल औतार में इस ह़दीष़ की शरह़ में फ़र्माते हैं, **'क़ौलुहू अल्मुसन्नतु कालल्उलमाउ अल्मुसुन्नतु हियष़्ष़निय्यतु मिन कुल्लि शैइन मिनल्इबिलि वल्बक़रि वल्गनमि फमा फौक़हा'** मस्जिद में है, **'अष़्ष़नियतु जम्उहू षनाया वहिय इस्नानि मुक़द्दमुल्फमि षनतानि मिन फौक़िन व षनतानि मिन अस्फल'** या'नी ष़नाया के सामने के ऊपर–नीचे के दाँत को कहते हैं। इस लिहाज़ से ह़दीष़ के ये मा'नी होते हैं दाँत वाले जानवरों को क़ुर्बानी करो। इससे लाज़िम यही नतीजा निकला कि खीरे की क़ुर्बानी न करो इसलिये एक रिवायत में है, **'युन्फा मिनज़्ज़हाया अल्लती लम तुसन्निन'** क़ुर्बानी के जानवरों में से वो जानवर निकाल डाला जाएगा जिसके दाँत न उगे होंगे, अगर मजबूरी की ह़ालत में मुसन्ना न मिले मुश्किल व दुश्वार हो तो **जिज़्अ़तुम मिनज़्ज़ान्न** भी कर सकते हैं। जैसा कि इसी ह़दीष़ के आख़िर में आप (ﷺ) ने फ़र्माया, **'इल्ला अय्यअ़स्रि अ़लैकुम फतज़्बहू जिज़्अ़तम्मिनज़्ज़ानि लुगातुल्हदीष़'** में लिखा है कि पांचवें बरस में जो ऊँट लगा हो और दूसरे बरस में जो गाय–बकरी लगी हो और चौथे बरस में जो घोड़ा लगा हो। कुछ ने कहा जो गाय तीसरे बरस में लगी हो, जो भेड़ एक बरस की हो गई। जैसा कि ह़दीष़ में है,

'ज़हैना मिन रसूलिल्लाहि (ﷺ) बिल्जिज़्इ मिनज़्ज़ानि वष़्ष़निय्यि मिनल्मअ़ज़ि' हमने आँह़ज़रत (ﷺ) के साथ एक बरस की भेड़ और दो बरस की (जो तीसरे में लगी हैं) बकरी क़ुर्बानी की और तफ़्सीर इब्ने कष़ीर में है कि बकरी ष़न्ना वो है कि जो दो साल गुज़ार चुकी हो और जिज़्आ उसको कहते हैं जो साल भर का हो गया हो।

कि हमसे अबू उसामा हम्माद बिन अबू उसामा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अ़ब्दुल्लाह ने नाफ़ेअ से बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ईदैन की नमाज़ ख़ुत्बे से पहले पढ़ा करते थे।

(राजेअ : 957)

حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ قَالَ: حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: ((كَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ وَأَبُوبَكْرٍ وَعُمَرُ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا يُصَلُّونَ الْعِيدَيْنِ قَبْلَ الْخُطْبَةِ)).

[راجع: ٩٥٧]

964. हमसे सुलैमान बिन ह़र्ब ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने, उन्होंने अ़दी बिन ष़ाबित से, उन्होंने सईद बिन जुबैर से, उन्होंने इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने ईदुल फ़ित्र के दिन दो रकअ़तें पढ़ीं न उनसे पहले कोई नफ़्ल पढ़ा न उनके बाद, फिर (ख़ुत्बा पढ़कर) आप औ़रतों के पास आए और बिलाल आप के साथ थे। आपने औ़रतों से फ़र्माया, ख़ैरात करो। वो ख़ैरात देने लगीं, कोई अपनी बाली पेश करने लगी कोई अपना हार देने लगी।

(राजेअ : 98)

٩٦٤- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عَدِيِّ بْنِ ثَابِتٍ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ: ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ صَلَّى يَوْمَ الْفِطْرِ رَكْعَتَيْنِ لَمْ يُصَلِّ قَبْلَهَا وَلاَ بَعْدَهَا. ثُمَّ أَتَى النِّسَاءَ وَمَعَهُ بِلاَلٌ، فَأَمَرَهُنَّ بِالصَّدَقَةِ، فَجَعَلْنَ يُلْقِينَ، تُلْقِي الْمَرْأَةُ خُرْصَهَا وَسِخَابَهَا)).

[راجع: ٩٨]

965. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया कि हमसे शुअ़बा ने बयान किया, कहा कि हमसे ज़ैद ने बयान किया, कहा कि मैंने शुअ़बी से सुना, उनसे बराअ बिन आ़ज़िब (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि हम इस दिन पहले नमाज़ पढ़ेंगे फिर ख़ुत्बा देने के बाद वापस होकर क़ुर्बानी करेंगे। जिसने इस त़रह किया उसने हमारी सुन्नत के मुताबिक़ अ़मल किया और जिसने नमाज़ से पहले क़ुर्बानी की तो उसका ज़बीहा गोश्त का जानवर है, जिसे वो घरवालों के लिये लाया है। क़ुर्बानी से उसका कोई भी ता'ल्लुक़ नहीं। एक अन्सारी (रज़ि.) जिनका नाम अबू बुर्दा बिन नियार था, बोले कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! मैंने तो (नमाज़ से पहले ही) क़ुर्बानी करदी लेकिन मेरे पास एक साल की पठिया है जो दूँदी हुई बकरी से भी अच्छी है। आप (ﷺ) ने फ़र्माया अच्छा इसी को बकरी के बदले में क़ुर्बानी कर लो और तुम्हारे बाद ये किसी और के लिये काफ़ी न होगी।

(राजेअ : 901)

٩٦٥- حَدَّثَنَا آدَمُ قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ: حَدَّثَنَا زُبَيْدٌ قَالَ: سَمِعْتُ الشَّعْبِيَّ عَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِنَّ أَوَّلَ مَا نَبْدَأُ فِي يَوْمِنَا هَذَا أَنْ نُصَلِّيَ ثُمَّ نَرْجِعَ فَنَنْحَرَ. فَمَنْ فَعَلَ ذَلِكَ أَصَابَ سُنَّتَنَا، وَمَنْ نَحَرَ قَبْلَ الصَّلاَةِ فَإِنَّمَا هُوَ لَحْمٌ قَدَّمَهُ لأَهْلِهِ، لَيْسَ مِنَ النُّسُكِ فِي شَيْءٍ)). فَقَالَ رَجُلٌ مِنَ الأَنْصَارِ يُقَالُ لَهُ أَبُو بُرْدَةَ بْنُ نِيَارٍ: يَا رَسُولَ اللهِ ذَبَحْتُ وَعِنْدِي جَذَعَةٌ خَيْرٌ مِنْ مُسِنَّةٍ. قَالَ: ((اجْعَلْهُ مَكَانَهُ وَلَمْ تُوفِيَ - أَوْ تَجْزِيَ - عَنْ أَحَدٍ بَعْدَكَ)). [راجع: ٩٥١]

तश्रीह : रिवायत में लफ़्ज़े अव्वल **मा नब्दउ फ़ी यौमिना हाज़ा** से बाब का तर्जुमा निकलता है क्योंकि जब पहला काम नमाज़ हुआ तो मा'लूम हुआ कि नमाज़ ख़ुत्बे से पहले पढ़नी चाहिये।

ने जो ख़लीफ़-ए-वक़्त था, ने हज्जाज को ये कहला भेजा था कि अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) की इताअत करता रहे। ये अम्र उस मरदूद पर शाक गुज़रा और उसने चुपके से एक शख़्स को इशारा कर दिया। उसने ज़हर आलूद बर्छा अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) के पांव में घुसेड़ दिया। ख़ुद ही तो ये शरारत की और ख़ुद ही क्या मिस्कीन बनकर अब्दुल्लाह (रज़ि.) की इयादत को आया? वाह रे मक्कार! अल्लाह को क्या जवाब देगा। आख़िर अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने जो अल्लाह के बड़े मक़्बूल बन्दे और बड़े आलिम और आबिद और ज़ाहिद और सहाबी-ए-रसूल (ﷺ) थे, उनका फ़रेब पहचान लिया और फ़र्माया कि तुमने ही तो मारा है और तू ही कहता है हम मुजरिम को पा लें तो उसको सख़्त सज़ा दें,

जफ़ा कर दी वो ख़ुदकश्ती ब तेग़े ज़ुल्म मारा
बहाना में बराए पुरशिसे बीमारी आई (मौलाना वहीदुज़्ज़माँ मरहूम)

इससे अंदाज़ा लगाया जा सकता है कि दुनियादार मुसलमानों ने किस–किस तरह से उलम-ए-इस्लाम को तकलीफ़ दी है फिर भी वो मर्दाने हक़–परस्त अम्रे हक़ की दा'वत देते रहे, आज भी उलमा को इन बुज़ुर्गों की इक़्तिदा लाज़िमी है।

बाब 10 : ईद की नमाज़ के लिये सवेरे जाना

١٠- بَابُ التَّبْكِيْرِ إِلَى الْعِيْدِ

और अब्दुल्लाह बिन बुस्र सहाबी ने (मुल्के शाम में इमाम के देर से निकलने पर ए'तिराज़ किया) फ़र्माया कि हम तो नमाज़ से इस वक़्त फ़ारिग़ हो जाया करते थे। या'नी जिस वक़्त नफ़्ल नमाज़ पढ़ना दुरुस्त होता है।

وَقَالَ عَبْدُ اللهِ بْنِ بُسْرٍ : إِنْ كُنَّا فَرَغْنَا فِي هَذِهِ السَّاعَةِ. وَذَلِكَ حِيْنَ التَّسْبِيْحِ.

तश्रीह: या'नी इश्राक़ की नमाज़ मतलब ये है कि सूरज एक नेज़ा या दो नेज़ा हो जाए। बस यही ईद की नमाज़ का अफ़ज़ल वक़्त है और जो लोग ईद की नमाज़ में देर करते हैं वो बिदअती हैं ख़ुसूसन ईदुल अज़्हा की नमाज़ और जल्द पढ़नी चाहिये ताकि लोग क़ुर्बानी वग़ैरह से जल्दी फ़ारिग़ हो जाएँ और सुन्नत के मुवाफ़िक़ क़ुर्बानी में से खाएँ। हदीष में है कि आँहज़रत (ﷺ) ईदुल फ़ित्र की नमाज़ उस वक़्त पढ़ते जब सूरज दो नेज़े बलन्द होता और ईदुल अज़्हा की नमाज़ जब एक नेज़ा बलन्द होता। (मौलाना वहीदुज़्ज़माँ)

968. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअबा ने ज़ैद से बयान किया, उनसे शुअबी ने, उनसे बराअ बिन आज़िब (रज़ि.) ने, उन्होंने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने क़ुर्बानी के दिन ख़ुत्बा दिया और आपने फ़र्माया कि इस दिन सबसे पहले हमें नमाज़ पढ़नी चाहिये, फिर (ख़ुत्बे के बाद) वापस आकर क़ुर्बानी करनी चाहिये, जिसने इस तरह किया उसने हमारी सुन्नत के मुताबिक़ किया और जिसने नमाज़ से पहले ज़िब्ह कर दिया तो ये एक ऐसा गोश्त होगा जिसे उसने अपने घरवालों के लिये जल्दी से तैयार कर लिया है। ये क़ुर्बानी क़त्अन नहीं। इस पर मेरे मामू अबू बुर्दा बिन नियार ने खड़े होकर कहा कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! मैंने तो नमाज़ के पढ़ने से पहले ही ज़िब्ह कर दिया। अल्बत्ता मेरे पास एक साल की एक पठिया है, जो दाँत निकली हुई बकरी से भी ज़्यादा बेहतर है। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि उसके बदले में इसे समझ लो या ये फ़र्माया कि इसे ज़िब्ह कर लो और तुम्हारे बाद ये

٩٦٨- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ زُبَيْدٍ عَنِ الشَّعْبِيِّ عَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ قَالَ: خَطَبَنَا النَّبِيُّ ﷺ يَوْمَ النَّحْرِ فَقَالَ ((إِنَّ أَوَّلَ مَا نَبْدَأُ بِهِ فِي يَوْمِنَا هَذَا أَنْ نُصَلِّيَ، ثُمَّ نَرْجِعَ فَنَنْحَرَ، فَمَنْ فَعَلَ ذَلِكَ فَقَدْ أَصَابَ سُنَّتَنَا، وَمَنْ ذَبَحَ قَبْلَ أَنْ يُصَلِّيَ فَإِنَّمَا هُوَ لَحْمٌ عَجَّلَهُ لأَهْلِهِ لَيْسَ مِنَ النُّسُكِ فِي شَيْءٍ)). فَقَامَ خَالِي أَبُوبُرْدَةَ بْنُ نِيَارٍ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ، أَنَا ذَبَحْتُ قَبْلَ أَنْ أُصَلِّيَ، وَعِنْدِي جَذَعَةٌ خَيْرٌ مِنْ مُسِنَّةٍ. قَالَ: ((اجْعَلْهَا مَكَانَهَا))

एक साल की पठिया किसी के लिये काफ़ी नहीं होगी।

(राजेअ : 951)

-أَوْ قَالَ: ((اذْبَحْهَا - وَلَنْ تَجْزِيَ جَذَعَةٌ عَنْ أَحَدٍ بَعْدَكَ)). [راجع: ٩٥١]

तश्रीह : इस ह़दीष़ की मुत़ाबक़त बाब के तर्जुमा से यूँ है कि आपने फ़र्माया कि उस दिन पहले जो काम हम करते हैं वो नमाज़ है। इससे ये निकला कि ईद की नमाज़ सुबह़ सवेरे पढ़ना चाहिये क्योंकि जो कोई देर करके पढ़ेगा और वो नमाज़ से पहले दूसरे काम करेगा तो पहला काम उसका उस दिन नमाज़ न होगा। ये इस्तिम्बात ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) की गहरी बस़ीरत की दलील है। (रहिमहुल्लाह)

इस सूरत में आपने ख़ास़ उन्हीं अबू बुर्दा बिन नियार नामी स़ह़ाबी के लिये जिज़्आ की कुर्बानी की इजाज़त बख़्शी। साथ ही ये भी फ़र्मा दिया कि तेरे बाद ये किसी और के लिये काफ़ी न होगी। यहाँ जिज़्आ से एक साल की बकरी मुराद है। लफ़्ज़े जिज़्आ एक साल की भेड़—बकरी पर बोला जाता है। ह़ज़रत अ़ल्लामा शौकानी (रह़.) फ़र्माते हैं, **'अल जिज़्अतु मिनज़्ज़ानि मा लहू सनतुन ताम्मतुन हाज़ा हुवल अश्हरू अ़न अहलिल लुग़ति व जुम्हूरि अहलिल इल्मि मिन ग़ैरिहिम'** या'नी जिज़्आ वो है जिसकी उ़म्र पर पूरा एक साल गुज़र चुका हो। अहले सुन्नत और जुम्हूर अहले इल्म से यही मन्क़ूल है। कुछ छः और आठ और दस माह की बकरी पर भी जिज़्आ बोलते हैं।

देवबन्दी तराजिमे बुख़ारी में इस मुक़ाम पर जगह—जगह जिज़्आ का तर्जुमा चार महीने की बकरी का किया गया है तफ़्हीमुल बुख़ारी में एक जगह नहीं बल्कि बहुत से मुक़ामात पर चार महीने की बकरी लिखा हुआ मौजूद है। अ़ल्लामा शौकानी (रह़.) की ऊपर लिखी तशरीह़ के मुताबिक़ ये ग़लत़ है। इसलिये अहले ह़दीष़ तराजिमे बुख़ारी में हर जगह एक साल की बकरी के साथ तर्जुमा किया गया है।

लफ़्ज़े ज़िज़्आ का इत़्लाक़ मसलके ह़न्फ़ी में भी छः माह की बकरी पर किया गया है। देखो तस़्हीलुल क़ारी, पारा नं. 4, पेज नं. 400) मगर चार माह की बकरी पर लफ़्ज़े जिज़्आ ये ख़ुद मसलके ह़न्फ़ी के भी ख़िलाफ़ है। क़स्तलानी (रह़.) ने शरह बुख़ारी, पेज नं. 117 मत़्बूआ नवल किश्वर में है, **'जिज़्अतुम्मिनल्मअ़ज़ि ज़ात सनतिन'** या'नी जिज़्आ एक साल की बकरी को कहा जाता है।

बाब 11 : अय्यामे-तशरीक़ में अ़मल करने की फ़ज़ीलत का बयान

١١- بَابُ فَضْلِ الْعَمَلِ فِي أَيَّامِ التَّشْرِيقِ

और इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा कि (इस आयत) और अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र मा'लूम दिनों में करो। में अय्यामे-मा'लूमात से मुराद ज़िल्हिज्जा के दस दिन हैं और अय्यामे-मअ़दूदात से मुराद अय्यामे-तशरीक़ हैं। इब्ने उ़मर और अबू हुरैरह (रज़ि.) इन दस दिनों में बाज़ार की त़रफ़ निकल जाते और लोग इन बुज़ुर्गों की तकबीरात सुनकर तकबीर कहते और मुहम्मद बिन बाक़िर (रज़ि.) नफ़्ल नमाज़ों के बाद भी तकबीर कहते थे।

وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ وَذْكُرُوا اللهَ فِي أَيَّامٍ مَعْلُومَاتٍ ﴿وَيَذْكُرُوا اسْمَ اللهِ فِي أَيَّامٍ مَعْلُومَاتٍ﴾. أَيَّامُ الْعَشْرِ. وَالأَيَّامُ الْمَعْدُودَاتِ : أَيَّامُ التَّشْرِيقِ. وَكَانَ ابْنُ عُمَرَ وَأَبُوهُرَيْرَةَ يَخْرُجَانِ إِلَى السُّوقِ فِي أَيَّامِ الْعَشْرِ يُكَبِّرَانِ وَيُكَبِّرُ النَّاسُ بِتَكْبِيرِهِمَا وَكَبَّرَ مُحَمَّدُ بْنُ عَلِيٍّ خَلْفَ النَّافِلَةِ.

969. हमसे मुहम्मद बिन अ़रअ़रा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे शुअ़बा ने सुलैमान के वास्ते से बयान किया, उनसे

٩٦٩- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَرْعَرَةَ قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ سُلَيْمَانَ عَنْ مُسْلِمٍ

972. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा कि हमसे अ़ब्दुल वह्हाब ष़क़फ़ी ने बयान किया, कहा कि हमसे ड़बैदुल्लाह ड़मरी ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ़ ने और उनसे इब्ने ड़मर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) के सामने ईदुल फ़ित्र और ईदुल अज़्हा की नमाज़ के लिये बरछी आगे-आगे उठाई जाती और वो ईदगाह में आपके सामने गाड़ दी जाती। आप उसी की आड़ में नमाज़ पढ़ते। (राजेअ़ : 494)

٩٧٢- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ قَالَ: حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ تُرْكَزُ لَهُ الْحَرْبَةُ قُدَّامَهُ يَوْمَ الْفِطْرِ وَالنَّحْرِ، ثُمَّ يُصَلِّي. [راجع: ٤٩٤]

तश्रीह : क्योंकि ईद मैदान में पढ़ी जाती थी और मैदान में नमाज़ पढ़ने के लिये सुत्रा ज़रूरी है इसलिये छोटा सा नेज़ा ले लेते थे जो सुत्रा के लिये काफ़ी हो सके और उसे आँहुज़ूर (ﷺ) के सामने गाड़ देते थे। नेज़ा इसलिये लेते थे कि उसे गाड़ने में आसानी होती थी। इमाम बुख़ारी (रह़.) इससे पहले लिख आएँ हैं कि ईदगाह में हथियार न ले जाना चाहिये। यहाँ ये बताना चाहते हैं कि ज़रूरत हो तो ले जाने में कोई मुज़ायक़ा नहीं कि ख़ुद आँहज़रत (ﷺ) के सुत्रे के लिये नेज़ा ले जाया जाता था। (तफ़्हीमुल बुख़ारी)

बाब 14 : इमाम के आगे-आगे ईद के दिन अ़न्ज़ा या ह़रबा लेकर चलना

١٤- بَابُ حَمْلِ الْعَنَزَةِ - أَوِ الْحَرْبَةِ بَيْنَ يَدَيِ الإِمَامِ يَوْمَ الْعِيْدِ

973. हमसे इब्राहीम बिन मुन्ज़िद ह़ज़ामी ने बयान किया, कहा कि हमसे वलीद बिन मुस्लिम ने बयान किया, कहा कि हमसे अबू ड़मर औज़ाई ने बयान किया, कहा कि हमसे नाफ़ेअ़ ने इब्ने ड़मर (रज़ि.) से बयान किया, उन्होंने फ़र्माया नबी करीम (ﷺ) ईदगाह जाते तो बरछा (डण्डा जिसके नीचे लोहे का फल लगा हुआ हो) आप (ﷺ) के आगे-आगे ले जाया जाता था, फिर ये ईदगाह में आप (ﷺ) के सामने गाड़ दिया जाता और आप (ﷺ) उसकी आड़ में नमाज़ पढ़ते। (राजेअ़ :494)

٩٧٣- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيْمُ بْنُ الْمُنْذِرِ قَالَ: حَدَّثَنَا الْوَلِيْدُ قَالَ : حَدَّثَنَا أَبُو عَمْرٍو قَالَ: أَخْبَرَنِي نَافِعٌ عَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَغْدُو إِلَى الْمُصَلَّى وَالْعَنَزَةُ بَيْنَ يَدَيْهِ تُحْمَلُ وَتُنْصَبُ بِالْمُصَلَّى بَيْنَ يَدَيْهِ، فَيُصَلِّي إِلَيْهَا. [راجع: ٤٩٤]

तश्रीह : ऊपर गुज़र चुकी है। इससे ये भी ष़ाबित हुआ कि आँहज़रत (ﷺ) ईदेन की नमाज़ जंगल (मैदान) में पढ़ा करते थे। पस मसनून यही है जो लोग बिला ड़ज़्र बारिश वग़ैरह के मस्जिद में ईदेन की नमाज़ पढ़ते हैं वो सुन्नत के ष़वाब से महरूम रहते हैं।

बाब 15 : औरतों और ह़ैज़ वालियों का ईदगाह में जाना

١٥- بَابُ خُرُوجِ النِّسَاءِ وَالْحُيَّضِ إِلَى الْمُصَلَّى

974. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुल वह्हाब ने बयान किया, कहा कि हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अय्यूब सुख़ितयानी ने, उनसे मुहम्मद ने, उनसे उम्मे अ़तिया (रज़ि.) ने, आपने फ़र्माया कि हमें हुक्म था कि पर्दा वाली दो शैज़ाओं को ईदगाह के लिये निकालें और अय्यूब सुख़ितयानी ने ह़फ़्सा (रज़ि.) से भी इसी त़रह रिवायत की है। ह़फ़्सा (रज़ि.) की

٩٧٤- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ الْوَهَّابِ قَالَ: حَدَّثَنَا حَمَّادٌ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ مُحَمَّدٍ عَنْ أُمِّ عَطِيَّةَ قَالَتْ: أُمِرْنَا أَنْ نُخْرِجَ الْعَوَاتِقَ وَذَوَاتِ الْخُدُورِ. وَعَنْ أَيُّوبَ عَنْ حَفْصَةَ بِنَحْوِهِ. وَزَادَ فِي حَدِيْثِ

حَفْصَةَ قَالَ: أَوْ قَالَتْ: الْعَوَاتِقَ وَذَوَاتِ الْخُدُورِ، وَيَعْتَزِلْنَ الْحُيَّضُ الْمُصَلَّى.

[راجع: ٣٢٤]

हदीष में ये ज़्यादती है कि दोशीज़ाएँ (लड़कियाँ) और पर्देवालियाँ ज़रूर (ईदगाह जाएँ) और हाइज़ा नमाज़ की जगह से अलग रहें।

(राजेअ : 324)

तश्रीह: हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने औरतों के ईदैन में शिर्कत करने के बारे में तफ़्सील से सहीह अहादीष को नक़ल किया है जिनमें कुछ क़ीलो–क़ाल की गुंजाइश नहीं। अनेक रिवायतों में मौजूद है कि आँहज़रत (ﷺ) अपनी तमाम बीवियों और साहिबज़ादियों को ईदैन के लिये निकालते थे यहाँ तक कि फ़र्मा दिया कि हैज़ वाली भी निकलें और वो नमाज़ से दूर रहकर मुसलमानों की दुआओं में शिर्कत करें और वो भी निकलें जिनके पास चादर न हों। चाहिये कि उनकी हमजोलियाँ उनको अपनी चादर या दुपट्टा दे दें। बहरहाल औरतों का ईदगाह में शिर्कत करना एक अहमतरीन सुन्नत और इस्लामी शिआर है जिससे शौकते इस्लाम का मुज़ाहिरा (प्रदर्शन) होता है और मर्द–औरत और बच्चे मैदाने ईदगाह में अल्लाह के सामने सज्दा-रेज़ होकर दुआएँ करते हैं जिनमें से किसी एक की भी दुआ अगर कुबूलियत का दर्ज़ा हासिल कर ले तो आम हाज़िरीन के लिये बाइषे सद बरकत हो सकती है।

इस बारे में कुछ लोगों ने फ़र्ज़ी शुकूक व शुब्हात और मफ़रूज़ा ख़तरात की बिना पर औरतों का ईदगाह में जाना मकरूह क़रार दिया है मगर ये सारी मफ़रूज़ा (फ़र्ज़ी) बातें हैं जिनकी शरअन कोई असल नहीं है। ईदगाह के मुंतज़िमीन का फ़र्ज़ है कि वो पर्दे का इंतिज़ाम करें और हर फ़साद व ख़तरात के इंसेदाद (रोकने) के लिये पहले ही से बन्दोबस्त कर ले।

हज़रत अल्लामा शौकानी (रह.)ने इस बारे में मुफ़स्सल व मुदल्लल बहष के बाद फ़र्माया है, **'अम्मा फ़ी मअनाहू मिनल्अहादीषि काज़ियतुन बिमश्रूइय्यति ख़ुरुजिन्निसाइ फ़िल्इदैनि इलल्मुसल्ला मिन ग़ैरि फ़र्क़िन बैनल्बिक्रि वष्षय्यिबि वश्शाब्बति वल्अज़ूज़ि वल्हाइज़ि व ग़ैरहा मालम तकुन मुअतद्दतुन औ कान फ़ी ख़ुरुजिहा फ़ितनतुन औ कान लहा उज़्रुन'** या'नी अहादीष इसमें फ़ैसला दे रही हैं कि औरतों को ईदैन में मर्दों के साथ ईदगाह में शिर्कत करना मश्रूअ है। और इस बारे में शादीशुदा और कुँवारी और बूढ़ी और जवान और हाइज़ा वग़ैरह का कोई इम्तियाज़ नहीं है जब तक उनमें से कोई इद्दत में न हो या उनके निकलने में कोई फ़ित्ने का डर न हो या कोई और उज़्र न हो तो बिला शक तमाम मुसलमान औरतों को ईदगाह में जाना मश्रूअ हैं। फिर फ़र्माते हैं, **'वल्क़ौलु बिकराहिय्यतिल्ख़ुरूजि अलल्इत्तलाक़ि रद्दुन लिल्अहादीषिस्सहीहति बिल्अराइल्फ़ासिदति'** या'नी मुत्लक़न औरतों के लिये ईदगाह में जाने को मकरूह क़रार देना या अपनी फ़ासिद रायों की बिना पर अहादीष सहीहा को रद्द करना है।

आजकल के जो उलमा ईदैन में औरतों की शिर्कत को नाजाइज़ क़रार देते हैं उनको इतना ग़ौर करने की तौफ़ीक़ नहीं होती कि यही मुसलमान औरतें बेतहाशा बाज़ारों में आती–जाती हैं; मेलों–उर्सों में शरीक होतीं हैं और बहुत सी ग़रीब औरतें जो मेहनत मज़दूरी करती हैं। जब उन सारे हालात में ये मफ़ासिदे मफ़रूज़ा से बालातर हैं तो ईदगाह की शिर्कत में जबकि वहाँ जाने के लिये बापर्दा और बाअदब होना ज़रूरी है कौनसे फ़र्ज़ी ख़तरात का तसव्वुर करके उनके लिये अदमे-जवाज़ का फ़त्वा लगाया जा सकता है।

शैख़ुल हदीष हज़रत मौलाना उबैदुल्लाह साहब मुबारकपुरी दामत फ़ैज़ुहू फ़र्माते हैं, औरतों का ईदगाह में ईद की नमाज़ के लिये जाना सुन्नत है। शादीशुदा हों या कुँवारी, जवान हो या अधेड़ हो या बूढ़ी। **'अन उम्मि अतिय्यत अन्न रसूलल्लाहि (ﷺ) कान युख़्रिजुल अब्कार वल्अवातिक़ व ज़वातिल्ख़ुदूरि वल्हुय्यज़ु फ़िल्इदैनि फ़अम्मल्हुय्यज़ु लयअतज़िल्नल मुसल्ला व यशहदन दअवतल मुस्लिमीन क़ालत इहदाहुन्न या रसूलल्लाहि इल्लम यकुल्लहा जल्बाबुन क़ाल फ़लितुसिह्हा उख़्तहा मिन जल्बाबिहा'** (सहीहैन वग़ैरह) आँहज़रत (ﷺ) ईदैन में दोशीज़ा, जवान कुँवारी, हैज़वाली औरतों को ईदगाह जाने का हुक्म देते थे। हैज़वाली औरतें नमाज़ से अलग रहतीं और मुसलमानों की दुआओं में शरीक रहती। एक औरत ने कहा कि अगर किसी औरत के पास चादर न हो तो आपने फ़र्माया कि उसकी मुसलमान बहन

अपनी चादर में ले जाए। जो लोग कराहत के क़ायल हैं या जवान या बूढ़ी के बीच फ़र्क़ करते हैं दरअस़ल वो स़ह़ीह़ ह़दीष़ को अपनी फ़ासिद और बात़िल रायों से रद्द करते हैं। ह़ाफ़िज इब्ने ह़जर (रह़.) फ़त्हुल बारी में और इब्ने ह़ज़म ने अपनी मुह़ल्ला में बित्तफ़्स़ील मुख़ालिफ़ीन के जवाबात ज़िक्र किये हैं। औरतों को ईदगाह में सख़्त पर्दा के साथ बग़ैर किसी क़िस्म की ख़ुश्बू लगाए और बग़ैर बजने वाले ज़ेवर और ज़ीनत के लिबास के जाना चाहिये ताकि फ़ित्ने का सबब न बनें। **'क़ाल शैख़ुना फ़ी शर्हित्तिर्मिज़ी अ़ला मनइल्ख़ुरूजि इलल्इदि लिश्शवाब्बि मअ़ल्अम्नि मिनल्मफ़ासिदि मिम्मा ह़द्दष़न फ़ी हाज़ज़्ज़मानि बल हुव मश्रूउन लहुन्न व हुवल्क़ौलुर्राजिह इन्तिहा'** या'नी अम्न की ह़ालत में जवान औरतों को शिर्क़ते ईदैन से रोकना उसके बारे में मानेईन (मना करने वालों) के पास कोई दलील नहीं है बल्कि वो मश्रूअ़ है और क़ौले राजेह यही है।

बाब 16 : बच्चों का ईदगाह जाना

١٦- بَابُ خُرُوجِ الصِّبْيَانِ إِلَى الْمُصَلَّى

975. हमसे अ़मर बिन अयास ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अ़ब्दुर्रह़्मान बिन महदी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे सुफ़्यान ष़ौरी ने अ़ब्दुर्रह़्मान बिन आ़बिस से बयान किया, उन्होंने इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से सुना, उन्होंने फ़र्माया कि मैंने ईदुल फ़ित़्र या ईदुल अज़्हा के दिन नबी करीम (ﷺ) के साथ नमाज़ पढ़ी। आप (ﷺ) ने नमाज़ पढ़ने के बाद ख़ुत्बा दिया फिर औरतों की त़रफ़ आए और उन्हें नस़ीह़त फ़र्माई और स़दक़े के लिये हुक्म फ़र्माया। (राजेअ़ : 98)

٩٧٥ - حَدَّثَنَا عُمْرُو بْنُ عَبَّاسٍ قَالَ : حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ قَالَ : حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَابِسٍ قَالَ: سَمِعْتُ ابْنَ عَبَّاسٍ قَالَ: خَرَجْتُ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ يَومَ فِطْرٍ أَوْ أَضْحَى، فَصَلَّى الْعِيْدَ، ثُمَّ خَطَبَ، ثُمَّ أَتَى النِّسَاءَ فَوَعَظَهُنَّ وَذَكَّرَهُنَّ، وَأَمَرَهُنَّ بِالصَّدَقَةِ. [راجع: ٩٨]

बाब 17 : इमाम ईद के ख़ुत्बे में लोगों की त़रफ़ मुँह करके खड़ा हो

١٧- بَابُ اسْتِقْبَالِ الإِمَامِ النَّاسَ فِي خُطْبَةِ الْعِيْدِ

976. हमसे अबू नुऐ़म फ़ुज़ैल बिन दुकैन ने बयान किया, कहा कि हमसे मुह़म्मद बिन त़ल्हा ने बयान किया, उनसे ज़ैद ने, उनसे शुअ़बी ने, उनसे बराअ बिन आ़ज़िब (रज़ि.) ने, उन्होंने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ईदुल अज़्हा के दिन बक़ीअ़ की त़रफ़ तशरीफ़ ले गये और दो रकअ़त ईद की नमाज़ पढ़ाई। फिर हमारी त़रफ़ चेहर-ए-मुबारक करके फ़र्माया कि सबसे मुक़द्दम इबादत हमारे इस दिन की ये है कि पहले हम नमाज़ पढ़ें, फिर (नमाज़ और ख़ुत्बे से लौट) कर क़ुर्बानी करें। इसलिये जिसने इस त़रह किया उसने हमारी सुन्नत के मुत़ाबिक़ किया और जिसने नमाज़ से पहले ज़िब्ह कर दिया तो वो ऐसी चीज़ है जिसे उसने अपने घरवालों के खिलाने के लिये जल्दी से मुहैया कर दिया है और उसका क़ुर्बानी से कोई ता'ल्लुक़ नहीं। इस पर एक शख़्स ने खड़े होकर अ़र्ज किया कि

٩٧٦ - حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ طَلْحَةَ عَنْ زُبَيْدٍ عَنِ الشَّعْبِيِّ عَنِ الْبَرَاءِ قَالَ: خَرَجَ النَّبِيُّ ﷺ يَومَ أَضْحَى إِلَى بَقِيعٍ فَصَلَّى الْعِيْدَ رَكْعَتَيْنِ، ثُمَّ أَقْبَلَ عَلَيْنَا بِوَجْهِهِ وَقَالَ: ((إِنَّ أَوَّلَ نُسُكِنَا فِي يَومِنَا هَذَا أَنْ نَبْدَأَ بِالصَّلاَةِ ثُمَّ نَرْجِعَ فَنَنْحَرَ. فَمَنْ فَعَلَ ذَلِكَ فَقَدْ وَافَقَ سُنَّتَنَا، وَمَنْ ذَبَحَ قَبْلَ ذَلِكَ فَإِنَّمَا هُوَ شَيْءٌ عَجَّلَهُ لأَهْلِهِ لَيْسَ مِنَ النُّسُكِ فِي شَيْءٍ)). فَقَامَ رَجُلٌ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ، إِنِّي ذَبَحْتُ

या रसूलुल्लाह (ﷺ)! मैंने तो पहले ही ज़िब्ह कर दिया लेकिन मेरे पास एक साल की पठिया है और वो दो-दंदी बकरी से ज़्यादा बेहतर है। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि खैर तुम उसी को ज़िब्ह करलो लेकिन तुम्हारे बाद किसी की तरफ़ से ऐसी पठिया जाइज़ न होगी। (राजेअ : 951)

وَعِنْدِي جَذَعَةٌ خَيْرٌ مِنْ مُسِنَّةٍ. قَالَ: ((اذْبَحْهَا، وَلاَ تَفِي عَنْ أَحَدٍ بَعْدَكَ)).
[راجع: ٩٥١]

सवाल करने वाले अबू बुर्दा बिन नियार अंसारी थे। ह़दीष़ और बाब में मुताबक़त ज़ाहिर है।

बाब 18 : ईदगाह में निशान लगाना

١٨- بَابُ الْعَلَمِ الَّذِي بِالْمُصَلَّى

या'नी कोई ऊँची चीज़ जैसे लकड़ी वग़ैरह उससे ये ग़र्ज़ थी कि ईदगाह का मक़ाम मा'लूम रहे।

977. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा कि हमसे यह्या बिन सईद क़त्तान ने सुफ़्यान ष़ौरी से बयान किया, कहा कि मुझसे अ़ब्दुर्रह्मान बिन आ़बिस ने बयान किया, कहा कि मैंने इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से सुना। उनसे दरयाफ़्त किया गया था कि आप नबी करीम (ﷺ) के साथ ईदगाह गये थे? उन्होंने फ़र्माया कि हाँ! और अगर बावजूद कमउम्री के मेरी क़द्रो-मन्ज़िलत आपके यहाँ न होती तो मैं जा नहीं सकता था। आप उस निशान पर आए जो कष़ीर बिन सुल्त के घर के क़रीब है। आपने वहाँ नमाज़ पढ़ाई फिर ख़ुत्बा सुनाया। उसके बाद औरतों की तरफ़ आए, आप के साथ बिलाल (रज़ि.) भी थे। आप (ﷺ) ने उन्हें वा'ज़ और नसीहत की और सदक़ा के लिये कहा। चुनाँचे मैंने देखा कि औरतें अपने हाथों से बिलाल (रज़ि.) के कपड़े में डाले जा रही थीं। फिर आँहज़रत (ﷺ) और बिलाल (रज़ि.) घर वापस हुए। (राजेअ : 98)

٩٧٧ - حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ : حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ سُفْيَانَ قَالَ: حَدَّثَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَابِسٍ قَالَ : سَمِعْتُ ابْنَ عَبَّاسٍ قِيْلَ لَهُ: أَشَهِدْتَ الْعِيْدَ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ؟ قَالَ: نَعَمْ، وَلَوْ لاَ مَكَانِي مِنَ الصِّغَرِ مَا شَهِدْتُهُ، حَتَّى أَتَى الْعَلَمَ الَّذِي عِنْدَ دَارِ كَثِيْرِ بْنِ الصَّلْتِ فَصَلَّى ثُمَّ خَطَبَ، ثُمَّ أَتَى النِّسَاءَ وَمَعَهُ بِلاَلٌ فَوَعَظَهُنَّ وَذَكَّرَهُنَّ وَأَمَرَهُنَّ بِالصَّدَقَةِ فَرَأَيْتُهُنَّ يَهْوِيْنَ بِأَيْدِيْهِنَّ يَقْذِفْنَهُ فِي ثَوبِ بِلاَلٍ، ثُمَّ انْطَلَقَ هُوَ وَبِلاَلٌ إِلَى بَيْتِهِ.
[راجع: ٩٨]

कष़ीर बिन सुल्त का मकान आँहज़रत (ﷺ) के ब'ाद बनाया गया। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने लोगों को ईदगाह का मकान बताने के लिये उसका पता दिया।

बाब 19 : इमाम का ईद के दिन औरतों को नसीहत करना

١٩- بَابُ مَوْعِظَةِ الإِمَامِ النِّسَاءَ يَومَ الْعِيْدِ

978. हमसे इस्हाक़ बिन इब्राहीम बिन नस्र ने बयान किया, कहा कि हमसे अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने बयान किया, कहा कि हमें इब्ने जुरैज ने ख़बर दी, कहा कि मुझे अ़ता ने ख़बर दी कि जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) को मैंने ये कहते सुना कि नबी करीम (ﷺ) ने ईदुल फ़ित्र की नमाज़ पढ़ी। पहले आपने नमाज़ पढ़ी उसके

٩٧٨ - حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيْمَ بْنِ نَصْرٍ قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ قَالَ : أَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَطَاءٌ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ قَالَ: سَمِعْتُهُ يَقُولُ: [قَامَ

था। (राजेअ : 57)

كَانَتْ فِي الْجَاهِلِيَّةِ. [راجع: ٥٧]

तश्रीह : अगरचे ज़मान-ए-नबवी में ईदगाह के लिये कोई इमारत नहीं थी और जहाँ ईदैन की नमाज़ पढ़ी जाती थीं वहाँ कोई मिम्बर भी नहीं था लेकिन इस लफ़्ज़ **फ़लम्मा फ़रज़ नज़लहू** से मा'लूम होता है कि कोई बुलन्द जगह थी जिस पर आप (ﷺ) ख़ुत्बा देते थे।

आँहुज़ूर (ﷺ) मर्दों के सामने ख़ुत्बा दे चुके तो लोगों ने समझा कि अब ख़ुत्बा ख़त्म हो गया है और उसे वापस जाना चाहिये। चुनाँचे लोग वापसी के लिये उठे लेकिन नबी करीम (ﷺ) ने उन्हें हाथ के इशारे से रोका कि अभी बैठे रहें क्योंकि आप (ﷺ) औरतों को ख़ुत्बा देने जा रहे थे। दूसरी रिवायतों से मा'लूम होता है कि जवाब देने वाली ख़ातून अस्मा बिन्ते यज़ीद थीं जो अपनी फ़साहत व बलाग़त की वजह से ख़तीबतुन्निसा के नाम से मशहूर थीं। उन्हीं की एक रिवायत में है कि जब नबी करीम (ﷺ) औरतों की तरफ़ आए तो मैं भी उनमें मौजूद थी। आपने फ़र्माया कि औरतों तुम जहन्नम का ईंधन ज़्यादा बनोगी। मैंने आप (ﷺ) को पुकारकर कहा, क्योंकि मैं आपके बहुत क़रीब थी, क्यों या रसूलल्लाह! ऐसा क्यूँ होगा? आपने फ़र्माया इसलिये कि तुम लोग लान–तान बहुत ज़्यादा करती हो और अपने शौहर की नाशुक्री करती हो।

बाब 20 : अगर किसी औरत के पास ईद के दिन दुपट्टा (चादर) न हो

٢٠- بَابُ إِذَا لَمْ يَكُنْ لَهَا جِلْبَابٌ فِي الْعِيْدِ

980. हमसे अबू मअमर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अ़ब्दुल वारिष़ ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अय्यूब सुख़ितयानी ने ह़फ़्सा बिन्त सीरीन के वास्ते से बयान किया, उन्होंने कहा कि हम अपनी लड़कियों को ईदगाह जाने से मना करते थे। फिर एक ख़ातून बाहर से आई और क़स्रे बनू ख़लफ़ में उन्होंने क़याम किया कि उनकी बहन के शौहर नबी करीम (ﷺ) के साथ बारह लड़ाइयों में शरीक रहे और ख़ुद उनकी बहन अपने शौहर के साथ छह लड़ाइयों में शरीक हुई थीं। उनका बयान था कि हम मरीज़ों की ख़िदमत किया करते थे और जख़्मियों की मरहम-पट्टी करते थे। उन्होंने पूछा कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! क्या हम में से अगर किसी के पास चादर न हो और उसकी वजह से ईद के दिन (ईदगाह) न जा सकें तो कोई हर्ज है? आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि उसकी सहेली अपनी चादर का एक हिस़्सा उसे ओढ़ा दे और फिर वो ख़ैर और मुसलमानों की दुआ़ में शरीक हों। ह़फ़्सा ने बयान किया कि फिर जब उम्मे अ़तिया यहाँ तशरीफ़ लाईं तो मैं उनकी ख़िदमत में भी हाज़िर हुई और दरयाफ़्त किया कि आपने फलाँ-

٩٨٠- حَدَّثَنَا أَبُو مَعْمَرٍ قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ قَالَ: حَدَّثَنَا أَيُّوبُ عَنْ حَفْصَةَ بِنْتِ سِيْرِيْنَ قَالَتْ: ((كُنَّا نَمْنَعُ جَوَارِيَنَا أَنْ يَخْرُجْنَ يَوْمَ الْعِيْدِ، فَجَاءَتِ امْرَأَةٌ فَنَزَلَتْ قَصْرَ بَنِي خَلَفٍ، فَأَتَيْتُهَا، فَحَدَّثَتْ أَنَّ زَوْجَ أُخْتِهَا غَزَا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ ثِنْتَيْ عَشْرَةَ غَزْوَةً، فَكَانَتْ أُخْتُهَا مَعَهُ فِي سِتِّ غَزَوَاتٍ، قَالَتْ: فَكُنَّا نَقُومُ عَلَى الْمَرْضَى، وَنُدَاوِي الْكَلْمَى. فَقَالَتْ: يَا رَسُولَ اللهِ، عَلَى إِحْدَانَا بَأْسٌ - إِذَا لَمْ يَكُنْ لَهَا جِلْبَابٌ - أَنْ لاَ تَخْرُجَ؟ فَقَالَ: ((لِتُلْبِسْهَا صَاحِبَتُهَا مِنْ جِلْبَابِهَا، فَلْيَشْهَدْنَ الْخَيْرَ وَدَعْوَةَ الْمُؤْمِنِيْنَ)). قَالَتْ حَفْصَةُ : فَلَمَّا قَدِمَتْ أُمُّ عَطِيَّةَ أَتَيْتُهَا فَسَأَلْتُهَا: أَسَمِعْتِ فِي كَذَا وَكَذَا؟

फलाँ बात सुनी है। उन्होंने फ़र्माया कि हाँ! मेरे माँ-बाप आप (ﷺ) पर फ़िदा हो। उम्मे अ़तिया (रज़ि.) जब भी नबी करीम (ﷺ) का ज़िक्र करती तो ये ज़रूर कहती कि मेरे माँ-बाप आप पर फिदा हो, हाँ! तो उन्होंने बतलाया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि जवान पर्देवाली या जवान और पर्दे वाली बाहर निकलें। शुब्हा अय्यूब को था। अलबत्ता ह़ाइज़ा औ़रतें ईदगाह से अलग होकर बैठें, उन्हें ख़ैर और मुसलमानों की दुआ़ में ज़रूर शरीक होना चाहिये। ह़फ़्स़ा (रज़ि.) ने कहा कि मैंने उम्मे अ़तिया (रज़ि.) से दरयाफ़्त किया कि ह़ाइज़ा औ़रतें भी? उन्होंने फ़र्माया क्या ह़ाइज़ा औ़रतें अ़रफ़ात नहीं जातीं और क्या वो फलाँ-फलाँ जगहों में शरीक नहीं होतीं। (फिर इज्तेमाअ़े-ईद ही की शिर्कत में कौनसी क़बाह़त है) (राजेअ़ : 324)

فَقَالَتْ: نَعَمْ، بِأَبِي - وَقَلَّمَا ذَكَرَتِ النَّبِيَّ ﷺ إِلاَّ قَالَتْ: بِأَبِي - قَالَ: ((لِيَخْرُجِ الْعَوَاتِقُ ذَوَاتُ الْخُدُورِ - أَوْ قَالَ: الْعَوَاتِقُ وَذَوَاتُ الْخُدُورِ، شَكَّ أَيُّوبُ - وَالْحُيَّضُ، تَعْتَزِلُ الْحُيَّضُ الْمُصَلَّى، وَلْيَشْهَدْنَ الْخَيْرَ وَدَعْوَةَ الْمُؤْمِنِينَ)). قَالَتْ: فَقُلْتُ لَهَا: آلْحُيَّضُ؟ قَالَتْ: نَعَمْ، أَلَيْسَ الْحَائِضُ تَشْهَدُ عَرَفَاتٍ وَتَشْهَدُ كَذَا وَتَشْهَدُ كَذَا؟.
[راجع: ٣٢٤]

तश्रीह : ह़फ़्स़ा (रज़ि.) के सवाल की वजह ये थी कि जब ह़ाइज़ा पर नमाज़ ही फ़र्ज़ नहीं और न वो नमाज़ पढ़ सकती है तो ईदगाह में उसकी शिर्कत से क्या फ़ायदा होगा? इस पर ह़ज़रत उम्मे अ़तिया (रज़ि.) ने कहा कि जब ह़ैज़ वाली अ़रफ़ात और दीगर मुक़ामाते मुक़द्दसा में जा सकती है और जाती हैं तो ईदगाह में क्यूँ न जाएँ? इस जवाब पर आजकल के उन ह़ज़रात को ग़ौर करना चाहिये जो औ़रतों का ईदगाह में जाना नाजाइज़ क़रार देते हैं और उसके लिये सौ हीले और बहाने तलाशते हैं, ह़ालाँकि मुसलमानों की औ़रतें मेलों में और फ़िस्को—फ़ुजूर में धड़ल्ले से शरीक होती हैं।

ख़ुलास़ा ये है कि ह़ैज़वाली औ़रतों को भी ईदगाह जाना चाहिये और वो नमाज़ से अलग रहें मगर दुआ़ओं में शरीक हों। इससे मुसलमानों की इज्तिमाई दुआ़ओं की अहमियत भी ष़ाबित होती हैं। बिला शक दुआ़ मोमिन का हथियार है और जब मुसलमान मर्द—औ़रत मिलकर दुआ़ करें तो न मा'लूम किस की दुआ़ क़ुबूल होकर तमाम अहले इस्लाम के लिये बाइ़ष़े बरकत हो सकती है। बह़ालाते मौजूदा जबकि मुसलमान हर त़रफ़ से मस़ाइब (परेशानियों) का शिकार हैं, बिज़्ज़रूर दुआ़ओं का सहारा ज़रूरी है। इमामे ईद का फ़र्ज़ है कि ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ के साथ इस्लाम की सरबुलन्दी के लिये दुआ़एँ करे। ख़ास़ त़ौर पर क़ुर्आनी दुआ़एँ ज़्यादा मुअष़्ष़िर (प्रभावशाली) है; फिर अह़ादीष़ में भी बड़ी पाकीज़ा दुआ़एँ वारिद हुई हैं। उनके बाद सामेईन की मादरी ज़ुबान (मातृभाषा) में भी दुआ़एँ की जा सकती है। (वबिल्लाहित्तौफ़ीक़)

बाब 21 : ह़ाइज़ा औ़रतें ईदगाह से अलग रहें

٢١- بَابُ اعْتِزَالِ الْحُيَّضِ بِالْمُصَلَّى

981. हमसे मुह़म्मद बिन मुष़न्ना ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे मुह़म्मद बिन इब्राहीम इब्ने अबी अ़दी ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन औ़न ने बयान किया, उनसे मुह़म्मद बिन सीरीन ने कि उम्मे अ़तिया (रज़ि.) ने फ़र्माया कि हमें हुक्म था कि ह़ाइज़ा औ़रतों, दोशीज़ाओं और पर्देवालियों को ईदगाह ले जाएँ... इब्ने औ़न ने कहा कि या (ह़दीष़) में पर्देवाली दोशीज़ाएँ है। अलबत्ता

٩٨١ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عَدِيٍّ عَنِ ابْنِ عَوْنٍ عَنْ مُحَمَّدٍ قَالَ : قَالَتْ أُمُّ عَطِيَّةَ: أُمِرْنَا أَنْ نَخْرُجَ فَنُخْرِجَ الْحُيَّضَ وَالْعَوَاتِقَ وَذَوَاتِ الْخُدُورِ - قَالَ ابْنُ عَوْنٍ: أَوِ الْعَوَاتِقَ

ذَوَاتِ الْخُدُورِ - فَأَمَّا الْحُيَّضُ فَيَشْهَدْنَ جَمَاعَةَ الْمُسْلِمِينَ وَدَعْوَتَهُمْ وَيَعْتَزِلْنَ مُصَلاَّهُمْ. [راجع: ٣٢٤].

हाइज़ा औरतें मुसलमानों की जमाअत और दुआओं में शरीक हो और (नमाज़ से) अलग रहें।

(राजेअ : 324)

٢٢- بَابُ النَّحْرِ وَالذَّبْحِ بِالْمُصَلَّى يَوْمَ النَّحْرِ

बाब 22 : ईदुल अज़्हा के दिन ईदगाह में नह्र और ज़िब्ह करना

٩٨٢- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ: حَدَّثَنَا اللَّيْثُ قَالَ: حَدَّثَنِي كَثِيرُ بْنُ فَرْقَدٍ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ يَنْحَرُ - أَوْ يَذْبَحُ - بِالْمُصَلَّى)).

[أطرافه في : ١٧١٠، ١٧١١، ٥٥٥١، ٥٥٥٢].

982. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, कहा कि हमसे लैष़ ने बयान किया, कहा कि मुझ से कष़ीर बिन फ़रक़द ने नाफ़ेअ से बयान किया, उनसे इब्ने उमर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ईदगाह ही में नह्र और ज़िब्ह किया करते।

(दीगर मक़ामात : 1710, 1711, 5551, 5552)

नह्र ऊँट का होता है बाक़ी जानवरों को लिटाकर ज़िबह करते हैं। ऊँट को खड़े–खड़े उसके सीने में ख़ंज़र मार देते हैं। उसका नाम नह्र है। क़ुर्बानी शआइरे इस्लाम (इस्लाम की निशानियों) में से है। हस्बे मौक़ा व महल बिला शुबहा ईदगाह में भी नह्र और क़ुर्बानी मसनून है। मगर बह्हालाते मौजूदा अपने घरों या मुक़र्ररा मुक़ामात पर ये सुन्नत अदा करनी चाहिये। हालात की मुनासबत के लिये इस्लाम में गुंजाइश रखी गई है।

٢٣- بَابُ كَلاَمِ الإِمَامِ وَالنَّاسِ فِي خُطْبَةِ الْعِيدِ

बाब 23 : ईद के ख़ुत्बे में इमाम का और लोगों का बातें करना

وَإِذَا سُئِلَ الإِمَامُ عَنْ شَيْءٍ وَهُوَ يَخْطُبُ

और इमाम का जवाब देना जब ख़ुत्बे में उससे कुछ पूछा जाए

٩٨٣- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو الأَحْوَصِ قَالَ: حَدَّثَنَا مَنْصُورُ بْنُ الْمُعْتَمِرِ عَنِ الشَّعْبِيِّ عَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ قَالَ: خَطَبَنَا رَسُولُ اللهِ ﷺ يَوْمَ النَّحْرِ بَعْدَ الصَّلاَةِ وَ قَالَ: ((مَنْ صَلَّى صَلاَتَنَا، وَنَسَكَ نُسُكَنَا، فَقَدْ أَصَابَ النُّسُكَ. وَمَنْ نَسَكَ قَبْلَ الصَّلاَةِ فَتِلْكَ شَاةُ لَحْمٍ)). فَقَامَ أَبُو بُرْدَةَ بْنُ نِيَارٍ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ، وَاللهِ لَقَدْ نَسَكْتُ قَبْلَ أَنْ أَخْرُجَ

983. हमसे मुसद्दद बिन मुस्रहद ने बयान किया, कहा कि हमसे अबुल अह्वस़ सलाम बिन सलीम ने बयान किया, कहा कि हमसे मन्सूर बिन मुअतमिर ने बयान किया कि उनसे आमिर शुअबी ने, उनसे बराअ बिन आज़िब (रज़ि.) ने, उन्होंने फ़र्माया कि नबी करीम (ﷺ) ने बक़र ईद के दिन नमाज़ के बाद ख़ुत्बा सुनाया और फ़र्माया कि जिसने हमारी तरह की नमाज़ पढ़ी और हमारी तरह की क़ुर्बानी की, उसकी क़ुर्बानी दुरुस्त हुई। लेकिन जिसने नमाज़ से पहले क़ुर्बानी की तो वो ज़बीहा सिर्फ़ गोश्त खाने के लिये होगा। इस पर अबू बुर्दा बिन नियार ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह (ﷺ) क़सम अल्लाह की! मैंने तो नमाज़ के लिये आने से पहले क़ुर्बानी कर ली, मैंने ये समझा कि आज का दिन खाने-पीने का दिन है,

إِلَى الصَّلاَةِ، وَعَرَفْتُ أَنَّ الْيَوْمَ يَوْمُ أَكْلٍ وَشُرْبٍ. فَتَعَجَّلْتُ، وَأَكَلْتُ وَأَطْعَمْتُ أَهْلِي وَجِيْرَانِي. فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((تِلْكَ شَاةُ لَحْمٍ)). قَالَ: فَإِنَّ عِنْدِي عَنَاقَ جَذَعَةٍ لَهِيَ خَيْرٌ مِنْ شَاتَيْ لَحْمٍ، فَهَلْ تَجْزِي عَنِّي؟ قَالَ: ((نَعَمْ، وَلَنْ تَجْزِيَ عَنْ أَحَدٍ بَعْدَكَ)) [راجع: ٩٥١].

इसलिये मैंने जल्दी की और ख़ुद भी खाया और घरवालों को और पड़ौसियों को भी खिलाया। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि बहरहाल ये गोश्त (खाने का) हुआ (क़ुर्बानी नहीं) उन्होंने अ़र्ज़ किया कि मेरे पास एक बकरी का सालभर का बच्चा है वो दो बकरियों के गोश्त से ज़्यादा बेहतर है। क्या मेरी (त़रफ़ से उसकी) क़ुर्बानी दुरुस्त होगी? आपने फ़र्माया कि हाँ! मगर तुम्हारे बाद किसी की त़रफ़ से ऐसे बच्चे की क़ुर्बानी काफ़ी न होगी।

(राजेअ : 951)

इससे ये षाबित फ़र्माया कि इमाम और लोग ईद के ख़ुत्बे में मसाइल की बात कर सकते हैं और आगे के फ़िक़रों से ये षाबित होता है कि ख़ुत्बे की ह़ालत में अगर इमाम से कोई शख़्स मसला पूछे तो वो जवाब दे।

٩٨٤ - حَدَّثَنَا حَامِدُ بْنُ عُمَرَ عَنْ حَمَّادِ بْنِ زَيْدٍ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ مُحَمَّدٍ أَنَّ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ قَالَ: ((إِنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ صَلَّى يَوْمَ النَّحْرِ، ثُمَّ خَطَبَ فَأَمَرَ مَنْ ذَبَحَ قَبْلَ الصَّلاَةِ أَنْ يُعِيْدَ ذَبْحَهُ. فَقَامَ رَجُلٌ مِنَ الأَنْصَارِ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ، جِيْرَانٌ لِي - إِمَّا قَالَ: بِهِمْ خَصَاصَةٌ، وَإِمَّا قَالَ: بِهِمْ فَقْرٌ - وَإِنِّي ذَبَحْتُ قَبْلَ الصَّلاَةِ، وَعِنْدِي عَنَاقٌ لِي أَحَبُّ إِلَيَّ مِنْ شَاتَيْ لَحْمٍ. فَرَخَّصَ لَهُ فِيْهَا)). [راجع: ٩٥٤]

984. हमसे हामिद बिन उ़मर ने बयान किया, उनसे हम्माद बिन ज़ैद ने, उनसे अय्यूब सुख़्तियानी ने, उनसे मुहम्मद ने, उनसे ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने बक़र ईद के दिन नमाज़ पढ़कर ख़ुत्बा दिया। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि जिस शख़्स ने नमाज़ से पहले जानवर ज़िब्ह कर लिया उसे दोबारा क़ुर्बानी करनी होगी। इस पर अन्सार में से एक स़हाबी उठे कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! मेरे कुछ ग़रीब-भूखे पड़ौसी हैं या यूँ कहा कि वो मुह्ताज हैं। इसलिये मैंने नमाज़ से पहले ज़िब्ह कर दिया अलबत्ता मेरे पास एक साल की एक पठिया है जो दो बकरियों के गोश्त से भी ज़्यादा मुझे पसन्द है। आप (ﷺ) ने उन्हें इजाज़त दे दी। (राजेअ : 954)

٩٨٥ - حَدَّثَنَا مُسْلِمٌ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنِ الأَسْوَدِ عَنْ جُنْدَبٍ قَالَ: ((صَلَّى النَّبِيُّ ﷺ يَوْمَ النَّحْرِ، ثُمَّ خَطَبَ، ثُمَّ ذَبَحَ وَقَالَ: مَنْ ذَبَحَ قَبْلَ أَنْ يُصَلِّيَ فَلْيَذْبَحْ أُخْرَى مَكَانَهَا، وَمَنْ لَمْ يَذْبَحْ فَلْيَذْبَحْ بِاسْمِ اللهِ)). [أطرافه في: ٥٥٠٠، ٥٥٦٢، ٦٦٧٤، ٧٤٠٠].

985. हमसे मुस्लिम बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे अस्वद बिन क़ैस ने, उनसे जुन्दब ने, उन्होंने फ़र्माया कि नबी करीम (ﷺ) ने बक़र ईद के दिन नमाज़ पढ़ाने के बाद ख़ुत्बा दिया फिर क़ुर्बानी की। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि जिसने नमाज़ से पहले ज़िब्ह कर लिया हो तो उसे दूसरा जानवर बदले में क़ुर्बानी करना चाहिये और जिसने नमाज़ से पहले ज़िब्ह न किया हो वो अल्लाह के नाम पर ज़िब्ह करे।

(दीगर मक़ामात : 5500, 5562, 6674, 7400)

था और यही मसनून है।

बाब 16 : नबी करीम (ﷺ) का रमज़ान और ग़ैर रमज़ान में रात को नमाज़ पढ़ना

١٦- بَابُ قِيَامِ النَّبِيِّ ﷺ بِاللَّيْلِ فِي رَمَضَانَ وَغَيْرِهِ

1147. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, उनहोंने कहा कि हमें इमाम मालिक (रह.) ने ख़बर दी, उन्हें सईद बिन अबू सईद मक़्बरी ने ख़बर दी, उन्हें अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रह़्मान ने ख़बर दी कि उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रत आ़इशा सिद्दीक़ा (रज़ि.) से उन्होंने पूछा कि नबी करीम (ﷺ) रमज़ान में (रात को) कितनी रकअ़तें पढ़ते थे। आपने जवाब दिया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) (रात में) ग्यारह रकअ़तों से ज़्यादा नहीं पढ़ते थे, ख़्वाह रमज़ान का महीना होता या कि कोई और, पहले आप (ﷺ) चार रकअ़त पढ़ते, उनकी ख़ूबी और लम्बाई का क्या पूछना फिर आप (ﷺ) चार रकअ़त और पढ़ते उनकी ख़ूबी और लम्बाई का क्या पूछना। फिर तीन रकअ़तें पढ़ते। आ़इशा (रज़ि.) ने फ़र्माया कि मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! आप वित्र पढ़ने से पहले ही सो जाते हैं? इस पर आप (ﷺ) फ़र्माया कि आ़इशा, मेरी आँखें सोती हैं लेकिन मेरा दिल नहीं सोता।

(दीगर मक़ाम : 2013, 3549)

١١٤٧- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ: أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ سَعِيْدِ بْنِ أَبِي سَعِيْدِ الْمَقْبُرِيِّ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّهُ أَخْبَرَهُ أَنَّهُ سَأَلَ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا: ((كَيْفَ كَانَتْ صَلاَةُ رَسُولِ اللهِ فِي رَمَضَانَ؟ فَقَالَتْ: مَا كَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ يَزِيْدُ فِي رَمَضَانَ وَلاَ فِي غَيْرِهِ عَلَى إِحْدَى عَشْرَةَ رَكْعَةً: يُصَلِّي أَرْبَعًا، فَلاَ تَسْأَلْ عَنْ حُسْنِهِنَّ وَطُولِهِنَّ. ثُمَّ يُصَلِّي أَرْبَعًا، فَلاَ تَسْأَلْ عَنْ حُسْنِهِنَّ وَطُولِهِنَّ، ثُمَّ يُصَلِّي ثَلاَثًا. قَالَتْ عَائِشَةُ : فَقُلْتُ يَا رَسُولَ اللهِ ﷺ أَتَنَامُ قَبْلَ أَنْ تُوتِرَ؟ فَقَالَ: ((يَا عَائِشَةُ إِنَّ عَيْنَيَّ تَنَامَانِ وَلاَ يَنَامُ قَلْبِي)).

[طرفاه في: ٢٠١٣، ٣٥٦٩].

तश्रीह़ : इन्हीं ग्यारह रकअ़तों को तरावीह़ क़रार दिया है और आँह़ज़रत (ﷺ) से रमज़ान और ग़ैर रमज़ान में बरिवायत स़ह़ीह़ा यही ग्यारह रकअ़तें ष़ाबित हैं। रमज़ान शरीफ़ में ये नमाज़े तरावीह़ के नाम से मौसूम हुई और ग़ैर रमज़ान में तहज्जुद के नाम से पुकारी गई। पस सुन्नते नबवी (ﷺ) सिर्फ़ आठ रकअ़तें तरावीह़ इस त़रह़ कुल ग्यारह रकअ़तें अदा करनी ष़ाबित है। जैसा कि नीचे लिखी अह़ादीष़ से मज़ीद वज़ाह़त होती है,

अ़न जाबिरिन (रज़ि.) क़ाल सल्ला बिना रसूलुल्लाहि (ﷺ) फ़ी रमज़ान ष़मान रकआतिन वल्वित्र अ़ल्लामा मुह़म्मद बिन नस्र मरवज़ी ह़ज़रत जाबिर (रज़ि.) से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हमको रमज़ान में आठ रकअ़त तरावीह़ और वित्र पढ़ा दिया (या'नी कुल ग्यारह रकआ़त)

नेज़ ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) की ह़दीष़ कि रसूलुल्लाह (ﷺ) **मा कान यज़ीदु फ़ी रमज़ान व ला फ़ी ग़ैरिही अला इह़दा अ़श्रत रकअ़तिन** रमज़ान और ग़ैर रमज़ान में ग्यारह रकअ़त से ज़्यादा नहीं पढ़ते थे।

कुछ लोगों को इससे ग़लतफ़हमी हो गई कि ये तहज्जुद के बारे में है तरावीह़ के बारे में नहीं। लिहाज़ा मा'लूम हुआ कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने रमज़ान में तरावीह़ और तहज्जुद अलग दो नमाज़ें क़ायम नहीं कीं। वही क़यामे रमज़ान (तरावीह़) या दीगर लफ़्ज़ों में तहज्जुद; ग्यारह रकअ़त पढ़ते और क़यामे रमज़ान (तरावीह़) को ह़दीष़ शरीफ़ में क़यामुललैल (तहज्जुद) भी फ़र्माया।

रमज़ान में रसूलुल्लाह (ﷺ) ने स़हाबा किराम (रज़ि.) को तरावीह़ पढ़ा कर फ़र्माया, 'मुझको डर हुआ कि तुम पर स़लातुललैल (तहज्जुद) फ़र्ज़ न हो जाए।' देखिए आप (ﷺ) ने तरावीह़ को तहज्जुद फ़र्माया। इससे मा'लूम हुआ कि रमज़ान में क़यामे रमज़ान (तरावीह़) और स़लातुल्लैल (तहज्जुद) एक ही नमाज़ है।

तरावीह़ व तहज्जुद के एक होने की दूसरी दलील :

अन अबी ज़र्रिन क़ाल स़ुम्ना मअ रसूलिल्लाहि (ﷺ) रमज़ान फलम यक़ुम बिना शैअम्मिन्हु हत्ता बक़िय सब्अ लयालिन फ़क़ाम बिना लैलतस्साबिअति हत्ता मज़ा नहवु मिन षुलुषिल्लैलि षुम्म कानतिल्लैलतुस् सादिसतुल्लती तलीहा फलम यक़ुम बिना हत्ता कानत खामिसतल्लती तलीहा क़ाम बिना ह़त्ता मज़ा नहवुम्मिन शतरिल्लैलि फक़ुल्तु या रसूलल्लाहि लौ नफ़ल्तुना बक़िय्यत लैलतिना हाज़िहि फ़क़ाल अन्नहू मन क़ाम मअल्इमामि हत्ता यन्सरिफ़ फ़इन्नहू यअदिलु क़ियामुल्लैलति षुम्म कानतिर्राबिअतुल्लती तलीहा फ़लम यक़ुम्हा हत्ता कानतिष्षालिषतुल्लती तलीहा क़ाल फजमअ निसाअहू व अहलह वज्तमअन्नासु क़ाल फ़क़ाम बिना हत्ता खशीना अंय्यफ़ूतनल्फ़लाहु क़ीला व मल्फलाह क़ाल अस्सुहूरू षुम्म लम यक़ुम बिना शैअन मिम्बक़िय्यतिश् शहरि (रवाहु इब्ने माजा) ह़ज़रत अबू ज़र (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ हमने रमज़ान के रोज़े रखे, आप (ﷺ) ने हमको आख़िर के हफ़्ते में तीन त़ाक़ रातों में तरावीह़ इस तर्तीब से पढ़ाई कि पहली रात को अव्वल वक़्त में, दूसरी रात को निस्फ़ शब में, और फिर निस्फ़े बक़िया से। सवाल हुआ कि और नमाज़ पढ़ाइये। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि जो इमाम के साथ नमाज़ अदा करे उसका पूरी रात का क़याम होगा। फिर तीसरी रात को आख़िर शब में अपने अहले बैत को जमा करके सब लोगों की जमईयत में तरावीह़ पढ़ाईं, यहाँ तक कि हम डरे कि जमाअत ही में सेह़री का वक़्त न चला जाए। इस ह़दीष़ को इब्ने माजा ने रिवायत किया है और बुख़ारी शरीफ़ में ये ह़दीष़ मुख़्तस़र लफ़्ज़ों में कई जगह नक़ल हुई है।

इससे मा'लूम हुआ कि आप (ﷺ) ने उसी एक नमाज़े तरावीह़ को रात के तीन ह़िस़्सों में पढ़ाया है और इस तरावीह़ का वक़्त इशा के बाद अख़ीर रात तक अपने फ़ेअल (उस्वा-ए-ह़सना) से बता दिया जिसमें तहज्जुद का वक़्त आ गया। पस फ़ेअ़ले रसूलुल्लाह (ﷺ) से ष़ाबित हो गया है कि इशा के बाद आख़िर रात तक एक ही नमाज़ है।

नीज़ इसकी ताईद ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) के उस क़ौल से होती है जो आपने फ़र्माया **वल्लती तनामून अ़न्हा अफ़्ज़लु मिनल्लती तक़ूमून** ये तरावीह़ पिछली रात में कि जिसमें तुम सोते हो पढ़ना बेहतर है अव्वल वक़्त पढ़ने से।' मा'लूम हुआ कि नमाज़े तरावीह़ व तहज्जुद एक ही है और यही मत़लब ह़ज़रते आ़इशा (रज़ि.) वाली ह़दीष़ का है।

नीज़ ह़दीष़ पर इमाम बुख़ारी (रह.) ने ये बाब बाँधा है कि **बाबुन: फ़ज़्लुम्मन क़ाम रमज़ान** और इमाम बैहक़ी (रह.) ने ह़दीष़ मज़्कूर पर यूँ बाब मुनअ़क़िद किया है। **बाबुन मा रूविय फ़ी अ़ददि रक्आतिल्क़ियामि फ़ी शहरि रमज़ान** और इसी त़रह़ इमाम मुह़म्मद (रह.) शागिर्द इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह.) ने **बाबु क़यामि शहरि रमज़ान** के तह़त ह़दीष़े मज़्कूर को नक़ल किया है। इन सब बुज़ुर्गों की मुराद भी ह़दीष़े आ़इशा (रज़ि.) से तरावीह़ ही है और ऊपर मुफ़स़्स़ल गुज़र चुका है कि अव्वल रात से आख़िर रात तक एक ही नमाज़ है। अब रहा कि इन तीनों रातों में कितनी रकअ़तें पढ़ाई थीं? सो अ़र्ज़ है कि अलावा वित्र आठ ही रकअ़तें पढ़ाई थीं। इसके ष़ुबूत में कई रिवायाते स़ह़ीह़ा आई हैं जो दर्ज ज़ैल हैं,

उ़लमा व फ़ुक़हा-ए-ह़नफ़िया ने फ़र्मा दिया कि आठ रकअ़त तरावीह़ सुन्नते नबवी है:

(1) अ़ल्लामा ऐनी हनफ़ी (रह.) उम्दतुलक़ारी (जिल्द : 3, पेज नं. 597) में फ़र्माते हैं, **फ़इन क़ुल्तु लम युबय्यिन फ़िर्रिवायातिल्मज़्कूरति अ़ददुस़्स़लालिल्लती स़ल्लहा रसूलुल्लाहि (ﷺ) फी तिल्कल्लयालि क़ुल्तु रवाहु इब्नु ख़ुज़ैमः व इब्नु हिब्बान मिन ह़दीषि जाबिरिन क़ाल स़ल्ला बिना रसूलुल्लाहि (ﷺ) फ़ी रमज़ान ष़मान रक्आतिन षुम्म औतर** 'अगर तू सवाल करे कि जो नमाज़ आप (ﷺ) ने तीन रातों में पढ़ाई थी उसमें ता'दाद का ज़िक्र नहीं तो मैं उसके जवाब में कहूँगा कि इब्ने ख़ुज़ैमा और इब्ने ह़िब्बान ने जाबिर (रज़ि.) से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अ़लावा वित्र के आठ रकअ़तें पढ़ाईं थीं।'

(2) ह़ाफ़िज़ इब्ने ह़जर (रह.) फ़त्हुल बारी (जिल्द: 1, पेज नं. 597) में फ़र्माते हैं, **लम अरा फ़ी शैइन मिन तुरुक़िही बयानु अ़ददि सलातिही फ़ी तिल्कल्लयाली लाकिन रवाहुब्नु ख़ुज़ैमा वब्नु हिब्बान मिन हदीष़ि जाबिरिन क़ाल सल्ला बिना रसूलुल्लाहि (ﷺ) फ़ी रमज़ान ष़मान रक्आतिन ष़ुम्म औतर** 'मैंने ह़दीष़े मज़्कूरा बाला की किसी सनद में नहीं देखा कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने उन तीन रातों में कितनी रकअ़त पढ़ाई थीं। लेकिन इब्ने ख़ुज़ैमा और इब्ने ह़िब्बान ने जाबिर (रज़ि.) से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अ़लावा वित्र के आठ रकअ़त पढ़ाई थीं।

(3) अ़ल्लामा ज़ेलई ह़नफ़ी (रह.) ने नस्बुर्राया फ़ी तख़्रीजे अह़ादीष़ अल हिदाया (जिल्द: 1, पेज नं. 293) में इस ह़दीष़ को नक़ल किया है कि **इन्दब्नि हिब्बान फ़ी स़ह़ीह़िही अन जाबिरिनब्नि अ़ब्दिल्लाहि अन्नहू अलैहिस्सलाम सल्ला बिहिम ष़मान रक्आतिन वल्वित्र** इब्ने ह़िब्बान ने अपनी स़ह़ीह़ में जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने स़ह़ाबा (रज़ि.) को आठ रकअ़त और वित्र पढ़ाए या'नी कुल ग्यारह रकअ़त।

(4) इमाम मुह़म्मद, शागिर्द इमामे आज़म (रह.) अपनी किताब मौता इमाम मुह़म्मद (पेज नं. 93) में बाबे तरावीह़ के तह़त फ़र्माते हैं **अन अबी सल्मतब्नि अ़ब्दिर्रहमानि अन्नहू सअल आइशत कैफ़ कानत स़लातु रसूलिल्लाहि (ﷺ) क़ालत मा कान रसूलुल्लाहि यज़ीदु फ़ी रमज़ान व ला फ़ी गैरिही अ़ला इहदा अ़शरत रकअ़तन** अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रह़मान से मरवी है कि उन्होंने उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) से पूछा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की रात की नमाज़ कैसी थी तो बतलाया कि रमज़ान व ग़ैर रमज़ान में आप ग्यारह रकअ़त से ज़्यादा नहीं पढ़ते थे। रमज़ान व ग़ैर रमजान की तह़क़ीक़ पहले गुज़र चुकी है। फिर इमाम मुह़म्मद (रह.) इस ह़दीष़ शरीफ़ को नक़ल करने के बाद फ़र्माते हैं **मुहम्मद व बिहाज़ा नाख़ुज़ूहू कुल्लहू** हमारा भी इन सब ह़दीष़ों पर अ़मल है, हम इन सब को लेते हैं।

(5) हिदाया जिल्द अव्वल के ह़ाशिये पर है, **अस्सुन्नतु मा वाज़ब अलैहिर्रसूलु (ﷺ) फहसबु फ़अला हाज़िहित्तअ़रीफ़ि यकूनुस्सुन्नतु हुव ज़ालिकल्कदरूल्मज़्कूरू व मा जाद अलैहि यकूनु मुस्तहब्बन** सुन्नत स़िर्फ़ वही है जिसको रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हमेशा किया हो। पस इस ता'रीफ़ के मुत़ाबिक़ स़िर्फ़ मिक़्दार मज़्कूर (आठ रकअ़त ही) सुन्नत होगी और जो उससे ज़्यादा हो वो नमाज़ मुस्तह़ब होगी।

(6) इमाम इब्नुल हुमाम हनफ़ी (रह.) फ़त्हुल क़दीर शरह़ हिदाया में फ़र्माते हैं **फतहस्सल मिन हाज़ा कुल्लिही अन्न क़ियाम रमज़ान सुन्नतुन इहदा अशरत रक्अतन बिल्वित्र फ़ी जमाअ़तिन फ़अलहुन्नबिय्यु (ﷺ)** इन तमाम का ख़ुलास़ा ये है कि रमज़ान का क़याम (तरावीह़) सुन्नत मअ़ वित्र ग्यारह रकअ़त बाजमाअ़त रसूलुल्लाह (ﷺ) के फ़ेअ़ल (उस्व-ए-ह़सना) से ष़ाबित है।

(7) अ़ल्लामा मुल्ला अ़ली क़ारी ह़नफ़ी (रह.) अपनी किताब मिरक़ात शरह़े मिश्कात में फ़र्माते हैं, **अन्नत्तराहीव फ़िल्अस़्लि इहदा अशरत रक्अतन फ़अलहु रसूलुल्लाहि (ﷺ) ष़ुम्म तरकहू लिउज़्रिन** दरअस़्ल तरावीह़ रसूलुल्लाह (ﷺ) के फ़ेअ़ल से ग्यारह ही रकअ़त ष़ाबित है। जिनको आप (ﷺ) ने पढ़ा बाद में उ़ज़्र की वजह से छोड़ दिया।

(8) मौलाना अ़ब्दुल ह़य्यि ह़नफ़ी लख़नवी (रह.) तअ़लीक़ुल मुम्जिद शरह़ मौता इमाम मुह़म्मद (रह.) में फ़र्माते हैं **व अख़रजब्नु हिब्बान फ़ी स़ह़ीह़िही मिन हदीष़ि जाबिरिन अन्नहू स़ल्ला बिहिम ष़मान रक्आतिन ष़ुम्म औतर व हाज़ा अस़हहु** और इब्ने ह़िब्बान ने अपनी स़ह़ीह़ में जाबिर (रज़ि.) की ह़दीष़ से रिवायत किया है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने सह़ाबा किराम (रज़ि.) को अ़लावा वित्र आठ रकअ़तें पढ़ाईं। ये ह़दीष़ बहुत स़ह़ीह़ है।

इन ह़दीष़ों से स़ाफ़ ष़ाबित हुआ कि रसूले अकरम (ﷺ) आठ रकअ़त तरावीह़ पढ़ते और पढ़ाते थे। जिन रिवायात में आप (ﷺ) का बीस रकआत पढ़ना मज़्कूर है वो सब ज़ईफ़ और नाक़ाबिले इस्तिदलाल हैं।

स़ह़ाबा (रज़ि.) और स़ह़ाबियात (रज़ि.) का हुज़ूर (ﷺ) के ज़माने में आठ रकअ़त तरावीह़ पढ़ना :

(9) इमाम मुह़म्मद बिन नस्र मरवज़ी (रह.) ने क़यामुल्लैल में ह़ज़रत जाबिर (रज़ि.) से रिवायत की है **जाअ उबय इब्नि कअ़बिन फ़ी रमज़ान फ़क़ाल या रसूलल्लाहि (ﷺ) कानल्लैलत शैउन क़ाल व मा ज़ाक या उबय क़ाल**

निस्वतुदारी क़ुल्न इन्ना ला नक़्रउलक़ुर्आन **फनुसल्ली ख़ल्फ़क बिस़लातिक फ़सल्लैतु बिहिन्न षमान रक्आतिन वल्वित्र फसकत अन्हू शिब्हुर्रिज़ा** उबय बिन कअ़ब (रज़ि.) रमज़ान में रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास ह़ाज़िर हुए और कहा कि आज रात को एक ख़ास़ बात हो गई है। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ऐ उबय! वो क्या बात है? उन्होंने कहा कि मेरे घराने की औरतों ने कहा कि हम क़ुर्आन नहीं पढ़ती हैं इसलिये तुम्हारे पीछे नमाज़े (तरावीह़) तुम्हारी इक़्तिदा में पढ़ेंगी तो मैंने उनको आठ रकअ़त और वित्र पढ़ा दिया। आँह़ज़रत (ﷺ) ने ये सुनकर सुकूत फ़र्माया। गोया इस बात को पसंद फ़र्माया, इस ह़दीष़ से ष़ाबित हुआ कि स़ह़ाबा (रज़ि.) आप (ﷺ) के ज़माने में आठ रकअ़त (तरावीह़) पढ़ते थे।

ह़ज़रत उ़मर ख़लीफ़-ए-ष़ानी (रज़ि.) की नमाज़े तरावीह़ मय वित्र ग्यारह रकअ़त :

(10) **अन साइबिब्नि यज़ीदिन क़ाल अमर उ़मरु उबय इब्न कअ़बिन व तमीमद्दारी अंय्यक़ूमा लिन्नासि फ़ी रमज़ान इह़दा अशरत रक्अ़तन** साइब बिन यज़ीद ने कहा कि उ़मर फ़ारूक़ (रज़ि.) ने उबय बिन कअ़ब और तमीम दारी (रज़ि.) को हुक्म दिया कि रमज़ान शरीफ़ में लोगों को ग्यारह रकअ़त पढ़ाएँ। (मौत़ा इमाम मालिक)

वाज़ेह़ हुआ कि आठ और ग्यारह में वित्र का फ़र्क़ है और अ़लावा आठ रकअ़त तरावीह़ के वित्र एक तीन पाँच पढ़ना ह़दीष़ शरीफ़ में आए हैं और बीस तरावीह़ की रिवायत ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) से ष़ाबित नहीं और जो रिवायत उनसे नक़्ल की जाती है वो मुन्क़त़अ़ुस्सनद (सनद कटी हुई) है। इसलिये कि बीस का रावी यज़ीद बिन रुम्मान है। उसने ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) का ज़माना नहीं पाया। चुनाँचे अ़ल्लामा ऐ़नी ह़नफ़ी व अ़ल्लामा ज़ेलई ह़नफ़ी (रह.) उ़म्दतुल क़ारी और नस़्बुर्राया में फ़र्माते हैं कि **यज़ीदुब्नु रूमान लम युदरिक उ़मर** 'यज़ीद बिन रूम्मान ने ह़ज़रत उ़मर फ़ारूक़ (रज़ि.) का ज़माना नहीं पाया।' और जिन लोगों ने सय्यिदना उ़मर (रज़ि.) को पाया है उनकी रिवायात बिल इत्तिफ़ाक़ ग्यारह रकअ़त की हैं, उनमें ह़ज़रत साइब (रज़ि.) की रिवायत ऊपर गुज़र चुकी है।

और ह़ज़रत अअ़रज हैं जो कहते हैं **कानल्क़ारी यक़्रउ सूरतल्बक़्रति फ़ी षमानी रक्आतिन** क़ारी सूरह बक़रा आठ रकअ़त में ख़त्म करता था (मौत़ा इमाम मालिक)। फ़ारूक़े आ'ज़म (रज़ि.) ने उबय बिन कअ़ब व तमीम दारी और सुलैमान बिन अबी ह़ष़्मा (रज़ि.) को साथ वित्र ग्यारह रकअ़त पढ़ाने का हुक्म दिया था (मुस़न्निफ़ इब्ने अबी शैबा)। ग़र्ज़ ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) का ये हुक्म ह़दीष़े रसूलुल्लाह (ﷺ) के मुवाफ़िक़ है। लिहाज़ा **अलैकुम बिसुन्नती व सुन्नतिल्ख़ुल्फ़ाइर्राशिदीन** से भी ग्यारह पर अ़मल करना षाबित हुआ।

फ़ुक़हा से आठ का षुबूत और बीस का ज़ुअ़फ़ :—

(11) अ़ल्लामा इब्नुल हमाम ह़नफ़ी (रह.) फ़तहुल क़दीर शरह़ हिदाया (जिल्द : 1, पेज नं. 205) में फ़र्माते हैं बीस रकअ़त तरावीह़ की ह़दीष़ ज़ईफ़ है। **अन्नहू मुख़ालिफ़ुल्लिल हदीषिस्स़ह़ीह़ि अन अबी सलमतब्नि अ़ब्दिर्रहमानि अन्नहू सअल आइशत अल्हदीष़** अ़लावा बरीं ये (बीस की रिवायत) स़ह़ीह़ ह़दीष़ के भी ख़िलाफ़ है जो अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रह़मान ने ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) रमज़ान व ग़ैर रमज़ान में ग्यारह रकअ़त से ज़ाइद न पढ़ते थे।

(12) शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ स़ाह़ब ह़नफ़ी मुह़द्दिष़ देह्लवी (रह.) फ़त्हु सिर्रुल मन्नान में फ़र्माते हैं **वलम यष्बुत रिवायतु इश्रीन मिन्हु (ﷺ) कमा हुवल्मुताअ़रफ़ु अल्आन इल्ला फ़ी रिवायतिब्नि अबी शैबत व हुव ज़ईफ़ुन व क़द आरज़हु हदीषु आइशत व हुव हदीषुन स़ह़ीह़ुन** जो बीस तरावीह़ मशहूर व मअ़रूफ़ हैं और आँह़ज़रत (ﷺ) से ष़ाबित नहीं और जो इब्ने अबी शैबा में बीस की रिवायत है वो ज़ईफ़ है और ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) की स़ह़ीह़ ह़दीष़ के भी मुख़ालिफ़ है (जिसमें मय वित्र ग्यारह रकअ़त षाबित हैं)।

(13) शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ ह़नफ़ी मुह़द्दिष़ देह्लवी (रह.) अपनी किताब **मा षबत बिस्सुन्नह** (पेज नं. 217) में फ़र्माते हैं **वस़्स़ह़ीह़ु मा रवत्हु आइशतु अन्नहू (ﷺ) स़ल्ला इह़दा अशरत रक्अ़तन कमा हुव आदतुहू फ़ी क़ियामिल्लैलि व रूविय अन्नहू कान बअ़ज़ुस़्स़लफ़ि फ़ी अहदि उमरब्नि अ़ब्दिलअ़ज़ीज़ि युस़ल्लून इह़दा अशरत रक्अ़तन क़स़्दन तश्बीहन बिरसूलिल्लाहि (ﷺ)** स़ह़ीह़ ह़दीष़ वो है जिसको ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने रिवायत किया है कि आप

(ﷺ) ग्यारह रकअत पढ़ते थे। जैसा कि आप (ﷺ) की क़यामुल्लैल की आदत थी और रिवायत है कि कुछ सलफ़ अमीरुल मोमिनीन उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ के ज़मान-ए-ख़िलाफ़त में ग्यारह रकअत तरावीह पढ़ा करते थे ताकि आँहज़रत (ﷺ) की सुन्नत से मुशाबिहत पैदा करें।

इससे मा'लूम हुआ कि शैख़ साहब (रह.) ख़ुद आठ रकअत तरावीह के क़ाइल थे और सलफ़ सालेहीन में भी ये मशहूर था कि आठ रकअत तरावीह सुन्नते नबवी है और क्यूँ न हो जबकि ख़ुद रसूलुल्लाह (ﷺ) ने आठ रकअत तरावीह पढ़ीं और सहाबा किराम (रज़ि.) को पढ़ाईं। नीज़ उबय बिन कअब (रज़ि.) ने औरतों को आठ रकअत तरावीह पढ़ाई तो हुज़ूर (ﷺ) ने पसंद फ़र्माया। इसी तरह हज़रत उमर (रज़ि.) के ज़माने में वित्र के साथ ग्यारह रकअत तरावीह पढ़ने का हुक्म था और लोग उस पर अमल करते थे। नीज़ हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (रह.) के वक़्त में लोग आठ रकअत तरावीह पर सुन्नते रसूल (ﷺ) समझकर अमल करते थे और इमाम मालिक (रह.) ने भी मय वित्र ग्यारह रकअत ही को सुन्नत के मुताबिक़ इख़्तियार किया है।

(14) अल्लामा ऐनी हनफ़ी (रह.) फ़र्माते हैं कि **इहदा अशरत रकअतन व हुव इख़्वार मालिक लिनफ़्सिही** 'ग्यारह रकअत को इमाम मालिक (रह.) ने अपने लिये इख़्तियार किया है।'

इसी तरह फ़ुक़हा व उलमा जैसे अल्लामा ऐनी हनफ़ी, अल्लामा ज़ेलई हनफ़ी, हाफ़िज़ इब्ने हजर, अल्लामा मुहम्मद बिन नस्र मरवज़ी, शैख़ अब्दुल हई साहब हनफ़ी मुहद्दिष देहलवी, मौलाना अब्दुल हक़ हनफ़ी लखनवी (रह.) वग़ैरह ने अलावा वित्र के आठ रकअत तरावीह को सहीह और सुन्नते नबवी (ﷺ) फ़र्माया है जिनके हवाले पहले गुज़र चुके हैं। और इमाम मुहम्मद शागिर्दे रशीद इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) ने तो फ़र्माया कि **व बिहाज़ा नाख़ुज़ु कुल्लहू** 'हम इन सब हदीषों को लेते हैं।' या'नी इन ग्यारह रकअत की हदीषों पर हमारा अमल है। फ़ल्हम्दुलिल्लाह कि वित्र के साथ ग्यारह रकअत तरावीह का मस्नून होना षाबित हो गया।

इसके बाद सलफ़े उम्मत में कुछ ऐसे हज़रात भी मिलते हैं जो बीस रकअत और तीस रकआत और चालीस रकआत बतौरे नफ़्ल नमाज़े तरावीह पढ़ा करते थे। लिहाज़ा ये दा'वा कि बीस रकअत पर इज्माअ हो गया, बातिल है। अस्ल सुन्नते नबवी आठ रकअत तरावीह तीन रकअत वित्र कुल ग्यारह रकअत हैं। नफ़्ल के लिये हर वक़्त इख़्तियार है कोई जिस क़दर चाहे पढ़ सकता है। जिन हज़रात ने रमज़ान में आठ रकअत तरावीह को ख़िलाफ़े सुन्नत कहने का मशग़ला बना लिया है और ऐसा लिखना या कहना उनके ख़्याल में ज़रूरी है वो सख़्त ग़लती में मुब्तला हैं बल्कि उसे भी एक तरह से तल्बीसे इब्लीस कहा जा सकता है। अल्लाह तआला सबको नेक समझ अता करे, आमीन।

हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) ने जो रात के नवाफ़िल चार-चार रकआत मिलाकर पढ़ना अफ़ज़ल कहा है, वो उसी हदीष से दलील लेते हैं। हालाँकि उससे इस्तिदलाल सहीह नहीं क्योंकि उसमें ये तस्रीह नहीं है कि आप (ﷺ) चार-चार रकअत के बाद सलाम फेरते। मुम्किन है कि पहले आप (ﷺ) चार रकअत (दो सलाम के साथ) बहुत लम्बी पढ़ते हों फिर दूसरी चार रकअतें (दो सलाम के साथ) उनसे हल्की पढ़ते हों। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने इस तरह इन चार-चार रकअतों को अलग-अलग जिक्र किया है और ये भी मुम्किन है कि चार रकअतों का एक सलाम के साथ पढ़ना मुराद हो। इसलिये अल्लामा क़स्तलानी (रह.) फ़र्माते है कि **व अम्मा मा सबक मिन अन्नहू कान युसल्ली मष्ना मष्ना षुम्म वाहिदतन फ़महमूलुन अला वक़्तिन आख़र फल्अम्रानि जाइज़ानि** या'नी पिछली रिवायात में जो आप (ﷺ) की दो रकअत पढ़ना मज़्कूर हुआ है। फिर एक रकअत वित्र पढ़ना तो वो दूसरे वक़्त पर महमूल है और ये चार चार करके पढ़ना फिर तीन वित्र पढ़ना दूसरे वक़्त पर महमूल है इसलिये दोनों अम्र जाइज़ हैं।

1148. हमसे मुहम्मद बिन मुषन्ना ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे यह्या बिन सईद क़त्तान ने बयान किया, और उन्होंने कहा कि हमसे हिशाम बिन उर्वा ने बयान किया कि मुझे मेरे बाप उर्वा ने ख़बर दी कि हज़रत आइशा सिद्दीक़ा ने

١١٤٨ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ عَنْ هِشَامٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبِي عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا

हमसे यह्या बिन सईद क़त्तान ने, कहा कि हमसे शुअबा ने, उनसे इब्राहीम बिन मुहम्मद बिन मुन्तशिर ने, उनसे उनके बाप मुहम्मद बिन मुन्तशिर ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ज़ुहर से पहले चार रकअत सुन्नत और सुबह की नमाज़ से पहले दो रकअत सुन्नत नमाज़ पढ़ना नहीं छोड़ते थे यह्या के साथ इस हदीष़ को इब्ने अबी अदी और अम्र बिन मरज़ूक़ ने शुअबा से रिवायत किया है।

قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ إِبْرَاهِيْمَ بْنِ مُحَمَّدِ بْنِ الْمُنْتَشِرِ عَنْ أَبِيْهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ لاَ يَدَعُ أَرْبَعًا قَبْلَ الظُّهْرِ، وَرَكْعَتَيْنِ قَبْلَ الْغَدَاةِ)). تَابَعَهُ ابْنُ أَبِي عَدِيٍّ وَعَمْرٌو عَنْ شُعْبَةَ.

ये हदीष़ बाब के मुताबिक़ नहीं क्योंकि बाब में दो रकअतें ज़ुहर से पहले पढ़ने का ज़िक्र है और शायद बाब के तर्जुमा का ये मतलब हो कि ज़ुहर से पहले दो ही रकअतें पढ़ना ज़रूरी नहीं, चार भी पढ़ सकता है।

बाब 35 : मग़्रिब से पहले सुन्नत पढ़ना

٣٥- بَابُ الصَّلاَةِ قَبْلَ الْمَغْرِبِ

1173. हमसे अबू मअमर ने बयान किया, कहा कि हमसे अब्दुल वारिष़ ने बयान किया, उनसे हुसैन मुअमल ने, उनसे अब्दुल्लाह बिन बुरैदा ने, उन्होंने कहा कि मुझसे अब्दुल्लाह बिन मुग़फ़्फ़ल मुज़नी (रज़ि.) ने बयान किया, उनसे नबी करीम (ﷺ) ने इर्शाद फ़र्माया कि मग़्रिब के फ़र्ज़ से पहले (सुन्नत की दो रकअत) पढ़ा करो। तीसरी मर्तबा आपने यूँ फ़र्माया कि जिसका जी चाहे क्योंकि आपको ये बात पसन्द न थी कि लोग इसे लाज़मी समझ बैठें। (दीगर मक़ाम : 7368)

١١٨٣- حَدَّثَنَا أَبُومَعْمَرٍ قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ عَنِ الْحُسَيْنِ وَهُوَ الْمُعَلِّمُ عَنْ عَبْدِ اللهِ ابْنِ بُرَيْدَةَ قَالَ: حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ الْمُزَنِيُّ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((صَلُّوا قَبْلَ صَلاَةِ الْمَغْرِبِ)) - قَالَ فِي الثَّالِثَةِ:- ((لِمَنْ شَاءَ)). كَرَاهِيَةَ أَنْ يَتَّخِذَهَا النَّاسُ سُنَّةً. [طرفه في: ٧٣٦٨].

हदीष़ और बाब में मुताबक़त ज़ाहिर है कि मग़रिब की जमाअत से पहले इन दो रकअतों को पढ़ना चाहें तो पढ़ सकता है।

1184. हमसे अब्दुल्लाह बिन यज़ीद ने बयान किया, कहा कि हमसे सईद बिन अबी अय्यूब ने बयान किया, कहा कि मुझसे यज़ीद बिन अबी हबीब से बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने मरष़द बिन अब्दुल्लाह यज़नी से सुना कि मैं उक़्बा बिन आमिर जुहनी सहाबी (रज़ि.) के पास आया और अर्ज़ किया आप को अबू तमीम अब्दुल्लाह बिन मालिक पर ता'ज्जुब नहीं आया कि वो मग़्रिब की नमाज़े-फ़र्ज़ से पहले दो रकअत नफ़्ल पढते हैं। इस पर उक़्बा ने फ़र्माया कि हम भी रसूलुल्लाह (ﷺ) के ज़माने में इसे पढ़ते थे। मैंने कहा फिर अब इसके छोड़ने की क्या वजह है? उन्होंने फ़र्माया कि दुनिया का कारोबार मानेअ है।

١١٨٤- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يَزِيْدَ قَالَ: حَدَّثَنَا سَعِيْدُ بْنُ أَبِي أَيُّوبَ قَالَ: حَدَّثَنِي يَزِيْدُ بْنُ أَبِي حَبِيْبٍ قَالَ: سَمِعْتُ مَرْثَدَ بْنَ عَبْدِ اللهِ الْيَزَنِيَّ قَالَ: ((أَتَيْتُ عُقْبَةَ بْنَ عَامِرِ الْجُهَنِيَّ فَقُلْتُ: أَلاَ أُعَجِّبُكَ مِنْ أَبِي تَمِيْمٍ، يَرْكَعُ رَكْعَتَينِ قَبْلَ صَلاَةِ الْمَغْرِبِ. فَقَالَ عُقْبَةُ : إِنَّا كُنَّا نَفْعَلُهُ عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللهِ ﷺ، قُلْتُ : فَمَا يَمْنَعُكَ الآنَ؟ قَالَ: الشُّغْلُ)).

तश्रीह : दोनों अहादीष़ से ष़ाबित हुआ कि अब भी मौक़ा मिलने पर मग़्रिब से पहले उन दो रकअतों को पढ़ा जा सकता है, अगरचे पढ़ना ज़रूरी नहीं मगर कोई पढ़ ले तो यक़ीनन मोजिबे अज्रो-ष़वाब होगा। कुछ लोगों ने कहा कि

20. किताब फ़ज़्लुस्सलात फ़ी मक्का वल मदीना

मक्का और मदीना में नमाज़ की फ़ज़ीलत

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

बाब 1 : मक्का और मदीना (ज़ादहुमल्लाह शरफ़न व ता'ज़ीमन) की मसाजिद में नमाज़ की फ़ज़ीलत का बयान

١ - بَابُ فَضْلِ الصَّلاَةِ فِي مَسْجِدِ مَكَّةَ والْمَدِيْنَةِ

1188. हमसे हफ़्स बिन उमर ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअबा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझे अब्दुल मलिक ने क़ज़्आ से ख़बर दी, उन्होंने कहा कि मैंने अबू सईद (रज़ि.) से चार बातें सुनीं और उन्होंने बतलाया कि मैंने उन्हें नबी करीम (ﷺ) से सुना था, आपने नबी करीम (ﷺ) के साथ बारह जिहाद किये थे। (राजेअ : 582)

١١٨٨- حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ عُمَرَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَبْدُ الْمَلِكِ عَنْ قَزَعَةَ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا سَعِيْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: أَرْبَعًا قَالَ سَمِعْتُ مِنَ النَّبِيِّ ﷺ، وَكَانَ غَزَا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ ثِنْتَي عَشْرَةَ غَزْوَةً. [راجع: ٥٨٦]

1189. (दूसरी सनद) हमसे अली बिन मदीनी ने बयान किया, कहा कि हमसे सुफ़यान बिन उययना ने बयान किया, उनसे ज़ुहरी ने, उनसे सईद बिन मुसय्यिब ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि तीन मस्जिदों के सिवा किसी के लिये कजावे न बाँधें (या'नी सफ़र न किया जाए) एक मस्जिदे हराम, दूसरी रसूलुल्लाह (ﷺ) की मस्जिद (मस्जिदे नबवी) और तीसरी मस्जिदे अक़्सा या'नी बैतुल मक़्दिस। (उन चार बातों का बयान आगे आ रहा है)

١١٨٩- ح وَحَدَّثَنَا عَلِيٌّ قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ سَعِيْدٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لاَ تُشَدُّ الرِّحَالُ إِلاَّ إِلَى ثَلاَثَةِ مَسَاجِدَ: الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ، وَمَسْجِدِ الرَّسُوْلِ ﷺ وَمَسْجِدِ الأَقْصَى)).

तशरीह : मस्जिदे अक़्सा की वजहे तस्मिया क़स्तलानी के लफ़्ज़ों में ये है। **व सुम्मिय बिही लिबुअ दिही अन मस्जिदि मक्कत फ़िल मसाफ़ति** या'नी इसलिये उसका नाम मस्जिदे अक़्सा रखा गया कि मस्जिद मक्का से मुसाफ़त में ये दूर वाक़ेअ है। लफ़्ज़े रिहाल ये रहल की जमा है ये लफ़्ज़ ऊँट के कज़ावा पर बोला जाता है। उस ज़माने में सफ़र के लिये ऊँट का इस्ते'माल ही आम था। इसलिये यही लफ़्ज़ इस्ते'माल किया गया।

मत़लब ये हुआ कि ये तीन मसाजिद ही ऐसा मन्सब रखती हैं कि उनमें नमाज़ पढ़ने के लिये, उनकी ज़ियारत करने

बाब 10 : नमाज़ में कौन–कौन से काम दुरुस्त है?

١٠- بَابُ مَا يَجُوزُ مِنَ الْعَمَلِ فِي الصَّلاَةِ

1209. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मस्लमा क़अनबी ने बयान किया, कहा कि हमसे इमाम मालिक (रह.) ने बयान किया, उनसे अबुन्नज़र सालिम बिन अबू उमय्या ने, उनसे अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रह्मान ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने फ़र्माया कि मैं अपना पाँव नबी करीम (ﷺ) के सामने फैला लेती थी और आप नमाज़ पढ़ते होते। जब आप (ﷺ) सज्दा करने लगते तो आप मुझे हाथ लगाते मैं पाँव समेट लेती। फिर जब आप (ﷺ) खड़े हो जाते तो मैं फिर फैला लेती। (राजेअ : 382)

١٢٠٩- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ قَالَ حَدَّثَنَا مَالِكٌ عَنْ أَبِي النَّضْرِ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((كُنْتُ أَمُدُّ رِجْلَيَّ فِي قِبْلَةِ النَّبِيِّ ﷺ وَهُوَ يُصَلِّي، فَإِذَا سَجَدَ غَمَزَنِي، فَرَفَعْتُهَا، فَإِذَا قَامَ مَدَدْتُهَا)).
[راجع: ٣٨٢]

1210. हमसे महमूद बिन ग़ीलान ने बयान किया, कहा कि हमसे शबाबा ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन ज़ियाद ने बयान किया, उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से कि आप (ﷺ) ने एक मर्तबा एक नमाज़ पढ़ी फिर फ़र्माया कि मेरे सामने एक शैतान आ गया और कोशिश करने लगा कि मेरी नमाज़ तोड़ दे। लेकिन अल्लाह तआ़ला ने उसको मेरे क़ाबू में कर दिया, मैंने उसका गला घोंटा और उसको धकेल दिया। आख़िर में मेरा इरादा हुआ कि उसे मस्जिद के एक सुतून से बाँध दूँ और जब सुबह हो तो तुम भी देखो। लेकिन मुझे सुलैमान अ़लैहिस्सलाम की दुआ़ याद आ गई, ऐ अल्लाह! मुझे ऐसी सल्तनत अ़ता कीजियो, जो मेरे बाद किसी और को न मिले। (इसलिये मैंने उसे छोड़ दिया) और अल्लाह तआ़ला ने उसे ज़िल्लत के साथ भगा दिया। इसके बाद नज़र बिन शुमैल ने कहा कि जअ़तुहू ज़ाल से है जिसके मा'नी है कि मैंने उसका गला घोंट दिया और दअ़त अल्लाह तआ़ला के इस क़ौल से लिया गया है यौम युदऔन जिस के मा'नी हैं क़यामत के दिन वो दोज़ख़ की तरफ़ धकेले जाएंगे। दुरुस्त पहला ही लफ़्ज़ है। अलबत्ता शुअ़बा ने इसी तरह ऐ़न और ताअ की तश्दीद के साथ बयान किया है।
(राजेअ़ : 461)

١٢١٠- حَدَّثَنَا مَحْمُودٌ قَالَ حَدَّثَنَا شَبَابَةُ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ زِيَادٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ ((عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ صَلَّى صَلاَةً قَالَ: ((إِنَّ الشَّيْطَانَ عَرَضَ لِي فَشَدَّ عَلَيَّ يَقْطَعُ الصَّلاَةَ عَلَيَّ، فَأَمْكَنَنِي اللهُ مِنْهُ فَذَعَتُّهُ، وَلَقَدْ هَمَمْتُ أَنْ أُوثِقَهُ إِلَى سَارِيَةٍ حَتَّى تُصْبِحُوا فَتَنْظُرُوا إِلَيْهِ، فَذَكَرْتُ قَوْلَ سُلَيْمَانَ عَلَيْهِ السَّلاَمُ : ﴿رَبِّ هَبْ لِي مُلْكًا لاَ يَنْبَغِي لأَحَدٍ مِنْ بَعْدِي﴾ فَرَدَّهُ اللهُ خَاسِئًا)) ثُمَّ قَالَ النَّضْرُ بْنُ شُمَيْلٍ : فَذَعَتُّهُ بِالذَّالِ، أَيْ خَنَقْتُهُ. وَفَدَعَّتُّهُ مِنْ قَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿يَوْمَ يُدَعُّونَ﴾ أَيْ يُدْفَعُونَ. وَالصَّوَابُ الأَوَّلُ، إِلاَّ أَنَّهُ كَذَا قَالَ بِتَشْدِيدِ الْعَيْنِ وَالتَّاءِ.
[راجع: ٤٦١]

तश्रीह : यहाँ ये ए'तिराज़ न होगा कि दूसरी ह़दीष़ में है कि शैत़ान ड़मर के साये से भी भागता है। जब ह़ज़रत ड़मर (रज़ि.) से शैत़ान डरता है तो आँह़ज़रत (ﷺ) के पास क्योंकर आया? आँह़ज़रत (ﷺ) ड़मर (रज़ि.) से कहीं ज़्यादा

जो ऊपर गुज़र चुकी है और आगे भी आएगी।

बाब 14 : इस बारे में कि अगर नमाज़ी से कोई कहे कि आगे बढ़ जा या ठहर जा और वो आगे बढ़ जाए या ठहर जाए तो कोई क़बाहत नहीं है

١٤- بَابُ إِذَا قِيلَ لِلْمُصَلِّي: تَقَدَّمْ أَوِ انْتَظِرْ فَانْتَظَرَ - فَلاَ بَأْسَ

1215. हमसे मुहम्मद बिन कष़ीर ने बयान किया, कहा कि हमको सुफ़यान ष़ौरी ने ख़बर दी, उन्हें अबू हाज़िम ने, उनको सहल बिन सअ़द (रज़ि.) ने बतलाया कि लोग नबी करीम (ﷺ) के साथ नमाज़ त़रह पढ़ते कि तहबन्द छोटे होने की वजह से उन्हें अपनी गर्दनों से बाँधे रखते और औ़रतों को (जो मर्दों के पीछे जमाअ़त में शरीक रहती थीं) कह दिया जाता कि जब तक मर्द पूरी त़रह सिमट पर न बैठ जाए, तुम अपने सर (सज्दे से) न उठाना। (राजेअ़ : 362)

١٢١٥- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ قَالَ أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ عَنْ أَبِي حَازِمٍ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((كَانَ النَّاسُ يُصَلُّونَ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ وَهُمْ عَاقِدُو أُزْرِهِمْ مِنَ الصِّغَرِ عَلَى رِقَابِهِمْ، فَقِيْلَ لِلنِّسَاءِ: لاَ تَرْفَعْنَ رُؤُوسَكُنَّ حَتَّى يَسْتَوِيَ الرِّجَالُ جُلُوسًا)). [راجع: ٣٦٢]

तश्रीह : इमाम नमाज़ में भूल जाए या किसी दीगर ज़रूरी अम्र पर उसे आगाह करना हो जो मर्द सुब्हानल्लाह कहें और औरते ताली बजाएँ अगर किसी मर्द ने नादानी की वजह से तालियाँ बजाईं तो उसकी नमाज़ नहीं टूटेगी। चुनाँचे सहल (रज़ि.) की ह़दीष़ में जो दो बाबों के बाद आ रही है कि स़हाबा किराम (रज़ि.) ने नादानी की वजह से ऐसा किया और आप (ﷺ) ने उनको नमाज़ लौटाने का हुक्म नहीं दिया। ह़दीष़ और बाब में यूँ मुताबक़त हुई कि ये बात औ़रतों को ह़ालते नमाज़ में कही गई या नमाज़ से पहले। शक़ अव्वल में मा'लूम हुआ कि नमाज़ी को मुख़ातिब करना और नमाज़ के लिये किसी का इंतिज़ार करना जाइज़ है और शक़्क़े ष़ानी में मा'लूम हुआ कि नमाज़ में इंतिज़ार करना जाइज़ है। ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) के कलाम का ह़ासिल ये है कि किसी का इंतिज़ार अगर शरई है तो जाइज़ है वरना नहीं। (फ़त्हुलबारी)

बाब 15 : नमाज़ में सलाम का जवाब (ज़बान से) न दे

١٥- بَابُ لاَ يَرُدُّ السَّلاَمَ فِي الصَّلاَةِ

1216. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन अबी शैबा ने बयान किया, कहा कि हमसे इब्ने फ़ुज़ैल ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे इब्राहीम ने, उनसे अलक़मा ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द (रज़ि.) ने कहा कि (इब्तिदाए-इस्लाम में) नबी करीम (ﷺ) जब नमाज़ में होते तो मैं आपको सलाम करता तो आप (ﷺ) जवाब देते थे। मगर जब हम (ह़ब्शा से, जहाँ हिजरत की थी) वापस आये तो मैंने (पहले की त़रह नमाज़ में) सलाम किया। मगर आप (ﷺ) ने कोई जवाब नहीं दिया (क्योंकि अब नमाज़ में बातचीत वग़ैरह की मुमानअ़त नाज़िल हो गई थी) और फ़र्माया कि नमाज़ में इससे मशग़ूलियत होती है। (राजेअ़ : 1199)

١٢١٦- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ فُضَيْلٍ عَنِ الأَعْمَشِ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنْ عَلْقَمَةَ عَنْ عَبْدِ اللهِ قَالَ: ((كُنْتُ أُسَلِّمُ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ وَهُوَ فِي الصَّلاَةِ فَيَرُدُّ عَلَيَّ، فَلَمَّا رَجَعْنَا سَلَّمْتُ عَلَيْهِ فَلَمْ يَرُدَّ عَلَيَّ وَقَالَ: ((إِنَّ فِي الصَّلاَةِ لَشُغْلاً)). [راجع: ١١٩٩]

बाब 64 : नमाज़े जनाज़ा में चार तक्बीरें कहना

٦٤- بَابُ التَّكْبِيرِ عَلَى الْجَنَازَةِ

और हुमैद त़वील ने बयान किया कि हमें ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने नमाज़ पढ़ाई तो तीन तक्बीरें कहीं फिर सलाम फेर दिया। इस पर उन्हें लोगों ने याददिहानी करवाई तो दोबारा क़िब्ला रुख़ होकर चौथी तक्बीर भी कही फिर सलाम फेरा।

أَرْبَعًا وَ قَالَ حُمَيْدٌ: صَلَّى بِنَا أَنَسٌ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ فَكَبَّرَ ثَلاَثًا ثُمَّ سَلَّمَ، فَقِيْلَ لَهُ: فَاسْتَقْبَلَ الْقِبْلَةَ، ثُمَّ كَبَّرَ الرَّابِعَةَ، ثُمَّ سَلَّمَ.

तश्रीह: अकषर उ़लमा जैसे इमाम शाफ़िई (रह.) और इमाम अह़मद (रह.) और इस्ह़ाक़ (रह.) और सुफ़यान ष़ौरी (रह.) और अबू ह़नीफ़ा (रह.) और इमाम मालिक (रह) का यही क़ौल है और सलफ़ का इसमें इख़्तिलाफ़ है। किसी ने पाँच तक्बीरें कहीं, किसी ने तीन, किसी ने सात। इमाम अह़मद (रह.) ने कहा कि चार से कम न हो और सात से ज़्यादा न हो। बैहक़ी ने रिवायत किया कि आँह़ज़रत (ﷺ) के ज़माने में जनाज़ा पर लोग सात और छः और पाँच और चार तक्बीरें कहा करते थे। ह़ज़रत उ़मर ने चार पर लोगों का इत्तिफ़ाक़ करा दिया।

1333. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, कहा कि हमें इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने शिहाब ने, उन्हें सईद बिन मुसय्यिब ने, उन्हें अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नज्जाशी का जिस दिन इन्तिक़ाल हुआ उसी दिन रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उनकी वफ़ात की ख़बर दी और आप (ﷺ) स़हाबा के साथ ईदगाह गये। फिर आप (ﷺ) ने स़फ़बन्दी करवाई और चार तक्बीरें कहीं। (राजेअ़ : 1240)

١٣٣٣- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ سَعِيْدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ ((أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ نَعَى النَّجَاشِيَّ فِي الْيَوْمِ الَّذِي مَاتَ فِيْهِ، وَخَرَجَ بِهِمْ إِلَى الْمُصَلَّى فَصَفَّ بِهِمْ وَكَبَّرَ عَلَيْهِ أَرْبَعَ تَكْبِيْرَاتٍ)). [راجع: ١٢٤٥]

1334. हमसे मुहम्मद बिन सिनान ने बयान किया, कहा कि हमसे सुलैम बिन ह़य्यान ने बयान किया, कहा कि हमसे सईद बिन मैनाअ ने बयान किया और उनसे जाबिर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने अस़्हमा नज्जाशी की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई तो चार तक्बीरें कहीं। यज़ीद बिन हारून वास्त़ी और अ़ब्दुस्समद ने सुलैम से अस़्हमा नाम नक़ल किया है और अ़ब्दुल वारिष ने इसकी मुताबअ़त की है।

(राजेअ़ : 1317)

١٣٣٤- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سِنَانٍ قَالَ حَدَّثَنَا سَلِيْمُ بْنُ حَيَّانَ قَالَ حَدَّثَنَا سَعِيْدُ بْنُ مِيْنَاءَ عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ صَلَّى عَلَى أَصْحَمَةَ النَّجَاشِيِّ فَكَبَّرَ أَرْبَعًا)). وَقَالَ يَزِيْدُ بْنُ هَارُونَ وَعَبْدُ الصَّمَدِ عَنْ سَلِيْمٍ ((أَصْحَمَةَ)).

[راجع: ١٣١٧]

नज्जाशी ह़ब्श के हर बादशाह का लक़ब हुआ करता था। जैसा कि मुल्क में बादशाहों के ख़ास़ लक़ब हुआ करते हैं शाहे ह़ब्श का अस़ल नाम अस़्हमा था।

बाब 65 : नमाज़े जनाज़ा में सूरह फ़ातिहा पढ़ना (ज़रूरी है)

٦٥- بَابُ قِرَاءَةِ فَاتِحَةِ الْكِتَابِ عَلَى الْجَنَازَةِ

और इमाम ह़सन बस़री (रह.) ने फ़र्माया कि बच्चे की नमाज़े जनाज़ा में पहले सूरह फ़ातिहा पढ़ी जाए, फिर ये दुआ पढ़ी जाए

وَقَالَ الْحَسَنُ: يَقْرَأُ عَلَى

الطِّفْلِ بِفَاتِحَةِ الْكِتَابِ وَيَقُولُ: اللَّهُمَّ اجْعَلْهُ لَنَا سَلَفًا وَفَرَطًا وَأَجْرًا.

अल्लाहुम्मज्अल्हू लना फ़रतन व सलफ़न व अज्रन; ऐ अल्लाह! इस बच्चे को हमारा अमीरे सामान कर दे और आगे चलने वाला, ष़वाब देने वाला।

١٣٣٥- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ سَعْدٍ، عَنْ طَلْحَةَ قَالَ: ((صَلَّيْتُ خَلْفَ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا)) وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ قَالَ: أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ عَنْ سَعْدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ عَنْ طَلْحَةَ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَوفٍ: قَالَ ((صَلَّيْتُ خَلْفَ ابْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَلَى جَنَازَةٍ فَقَرَأَ بِفَاتِحَةِ الْكِتَابِ. قَالَ : لِيَعْلَمُوا أَنَّهَا سُنَّةٌ)).

1335. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा कि हमसे गुन्दर (मुहम्मद बिन जा'फ़र) ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे सअ़द बिन इब्राहीम ने और उनसे त़ल्हा ने कहा कि मैंने इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) की इक़्तिदा में नमाज़े (जनाज़ा) पढ़ी (दूसरी सनद) हमसे मुहम्मद बिन कष़ीर ने बयान किया, कहा कि हमें सुफ़यान ष़ौरी ने ख़बर दी, उन्हें सअ़द बिन इब्राहीम ने, उन्हें त़ल्हा बिन अब्दुल्लाह बिन औ़फ़ ने, उन्होंने बतलाया कि मैंने इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) के पीछे नमाज़े जनाज़ा पढ़ी तो आपने सूरह फ़ातिहा (ज़रा पुकार कर) पढ़ी। फिर फ़र्माया कि तुम्हें मा'लूम होना चाहिये कि यही तरीक़-ए-नबवी है।

तश्रीह : जनाज़े की नमाज़ में सूरह फ़ातिहा ऐसे ही वाजिब है जैसा कि दूसरी नमाज़ों में क्योंकि ह़दीष़ **ला स़लात लमल्लम यक़्रा बिफ़ातिहतिल किताब** हर नमाज़ को शामिल है। इसकी तफ़्सील ह़ज़रत मौलाना उ़बैदुल्लाह स़ाहब (रह.) के लफ़्ज़ों में ये है,

वल्हक़्क़ु वस़्स़वाबु अन्नकिरातल्फ़ातिहति फ़ी स़लातिल्जनाज़ति वाजिबतुन कमा जहब इलैहिश्शाफ़िई व अहमद व इस्हाक़ व गैरूहुम लिअन्नहुम अज्मऊ अ़ला अन्नहा स़लातुन व क़द ष़बत हदीषु ला स़लात इल्ला बिफ़ातिहतिल्किताबि फहिय दाखिलतुन तहतल्उमूमि व इख़राजुहा मिन्हु यहताजु इला दलीलिन व लिअन्नहा सलातुन यजिबु फीहल्क़ियामु फवजबत फीहल्किरातु कसाइरिस़्स़लवाति व लिअन्नहू वरदल्अम्रू बिकिरातिहा फक़द रवा इब्नु माजा बिइस्नादिन फीहि ज़ुअफ़ुन यसीरून अ़न उम्मि शरीकिन कालत अमरना रसूलुल्लाहि (ﷺ) अन नक़्रअ अ़ला मय्यितिना बिफ़ातिहतिल्किताबि व रवत्तबरानी फिल्कबीर मिन हदीषि उम्मि अ़फ़ीफ़िन क़ालत अमरना रसूलुल्लाहि (ﷺ) अन नक़्रअ अ़ला मय्यितिना बिफ़ातिहतिल्किताब कालल्हैष़मी व फीहि अ़ब्दुलमुन्इम अबू सईद व हुव जईफ़ुन इन्तिहा

वल्अम्रू मिन अदिल्लतिल्वुजूबि व रवत्तब्रानी फिल्कबीर ईज़ाउन मिन हदीषि अस्मा बिन्ति यज़ीद क़ालत क़ाल रसूलुल्लाहि (ﷺ) इज़ा सल्लैतुम अ़लल्जनाज़ति फक़्रऊ बिफ़ातिहतिल्किताब क़ालल्हैष़मी व फीहि मुअ़ला बिन हम्रान व लम अजिद मन जकरहू व बक़िय्यत रिजालिही मूष़क़ून व फ़ी बअ़ज़िहिम कलामु हाज़ा क़द सन्नफ़ हसन अश्शर्नब्लानी मिम्मुतअख्खिरील्हनफिय्यति फी हाज़िहिल्यस्अलति रिसालतन इस्मुहा अन्नज्मुल्मुस्तताब लिहुक्मिल्किराति फ़ी स़लातिल्जनाज़ति उम्मुल्किताब व हक़्क़क़ फ़ीहा अन्नल्किरात औला मिन तर्किल्क़िरात व ला दलील अ़लल्कराहति व हुवल्लज़ी इख्तारहुश्शैखु अ़ब्दुल्हय अल्लक्नवी फ़ी तस़ानीफ़िही लि उम्दतिर्रिआयति वत्तअ़लीक़िल्मुम्जिदि व इमामुल्कलामि षुम्म अन्नहू इस्तदल्ल बिहदीषि इब्नि अ़ब्बास अलल्जहरि बिल्क़िराति फ़िस़्स़लाति अलल्जनाज़ति लिअन्नहू यदुल्लु अ़ला अन्नहू जहर बिहा हत्ता समिअ ज़ालिक मन सल्ला मअ़हू व अस़्रहु मिन ज़ालिक मा जकर्नाहु मिन रिवायतिन्नसई बिलफ़्ज़ि सल्लैतु खल्फ इब्नि अ़ब्बास अ़ला जनाज़तिन फक़रअ बिफ़ातिहतिल्किताब व सूरतन व जहर हत्ता अस्मअन फलम्मा फरग अख़ज़्तु बियदिही फसअल्तुहू फ़क़ाल सुन्नतुन व हक़्क़ुन व फ़ी रिवायतिन उख़्रा लहू अयज़न सल्लैतु ख़ल्फ़ इब्नि अ़ब्बास अ़ला जनाज़ति फ़समिअ़्तु यक़्रउ बिफ़ातिहतिल्किताब व यदुल्लु अलल्जहरि बिहूआइ हदीषु औफ़िब्नि मालिक अल्आती फइनज़्ज़ाहिर अन्नहू हफ़िज़हुआअल्मज़्कूर लम्मा जहर बिहिन्नबिय्य (ﷺ) फिस्सलाति अलल्जनाज़ति अस़्रहु मिन्हु हदीषु वाष़िला फिल्फस्लिष़्ष़ानी

फ़र्माया, इंसान का अपने बाल—बच्चों पर ख़र्च करना भी बाअ़िष़े ष़वाब है।

रिवायत में ह़ज़रत अबू मसऊ़द बद्री (रज़ि.) का ज़िक्र है । ह़दीष़ और बाब में यही मुत़ाबक़त है।

4007. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐ़ब ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुहरी ने, उन्होंने ड़र्वा बिन ज़ुबेर से सुना कि अमीरुल मोमिनीन ड़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ (रज़ि.) से उन्होंने उनके अ़हदे ख़िलाफ़त में ये ह़दीष़ बयान की कि मुग़ीरह बिन शुअ़बा (रज़ि.) जब कूफ़ा के अमीर थे, तो उन्होंने एक दिन अ़स्र की नमाज़ में देर की। इस पर ज़ैद बिन ह़सन के नाना अबू मसऊ़द ड़क़्बा बिन अ़म्र अंस़ारी (रज़ि.) उनके यहाँ गये। वो बद्र की लड़ाई में शरीक होने वाले स़हाबा में से थे और कहा, आपको मा'लूम है कि ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लैहिस्सलाम) (नमाज़ का त़रीक़ा बताने के लिये) आए और आपने नमाज़ पढ़ी और ह़ुज़ूर (ﷺ) ने उनके पीछे नमाज़ पढ़ी, पाँचों वक़्त की नमाज़ें। फिर फ़र्माया कि इसी त़रह़ मुझे हुक्म मिला है। बशीर बिन अबी मसऊ़द भी ये ह़दीष़ अपने वालिद से बयान करते थे। (राजेअ़ : 521)

٤٠٠٧– حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ : أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ سَمِعْتُ عُرْوَةَ بْنَ الزُّبَيْرِ يُحَدِّثُ عُمَرَ بْنَ عَبْدِ الْعَزِيزِ فِي إِمَارَتِهِ أَخَّرَ الْمُغِيرَةُ بْنُ شُعْبَةَ الْعَصْرَ وَهُوَ أَمِيرُ الْكُوفَةِ فَدَخَلَ أَبُو مَسْعُودٍ عُقْبَةُ بْنُ عَمْرٍو الأَنْصَارِيُّ جَدُّ زَيْدِ بْنِ حَسَنٍ شَهِدَ بَدْرًا فَقَالَ: لَقَدْ عَلِمْتَ نَزَلَ جِبْرِيلُ عَلَيْهِ السَّلاَمُ فَصَلَّى، فَصَلَّى رَسُولُ اللهِ ﷺ خَمْسَ صَلَوَاتٍ ثُمَّ قَالَ : هَكَذَا أُمِرْتَ. كَذَلِكَ كَانَ بَشِيرُ بْنُ أَبِي مَسْعُودٍ يُحَدِّثُ عَنْ أَبِيهِ. [راجع: ٥٢١]

तश्रीह़ : अबू मसऊ़द (रज़ि.) की बेटी उम्मे बशर पहले सईद बिन ज़ैद बिन अ़म्र बिन नुफ़ेल को मन्सूब थीं। बाद में ह़ज़रत ह़सन (रज़ि.) ने उनसे निकाह़ कर लिया और उनके बत़न से ह़ज़रत ज़ैद बिन ह़सन (रज़ि.) पैदा हुए। अबू मसऊ़द (रज़ि.)बद्री थे। यही बाब से वजहे मुत़ाबक़त है।

4008. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, हमसे अबू अ़वाना ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे इब्राहीम नख़ई ने, उनसे अ़ब्दुर्रह़मान बिन यज़ीद नख़ई ने, उनसे अ़ल्क़मा बिन यस्अ़ा ने और उनसे अबू मसऊ़द बद्री (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, सूरह बक़रः की दो आयतें (आमनर्रसूल से आख़िर तक) ऐसी हैं कि जो शख़्स रात में इन्हें पढ़ ले वो उसके लिये काफ़ी हो जाती हैं। अ़ब्दुर्रह़मान ने बयान किया कि फिर मैंने अबू मसऊ़द (रज़ि.) से मुलाक़ात की, वो उस वक़्त बैतुल्लाह का त़वाफ कर रहे थे, मैंने उनसे इस ह़दीष़ के बारे में पूछा तो उन्होंने ये ह़दीष़ मुझसे बयान की।

٤٠٠٨– حَدَّثَنَا مُوسَى حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ عَنِ الأَعْمَشِ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ يَزِيدَ عَنْ عَلْقَمَةَ عَنْ أَبِي مَسْعُودٍ الْبَدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ((الآيَتَانِ مِنْ آخِرِ سُورَةِ الْبَقَرَةِ مَنْ قَرَأَهُمَا فِي لَيْلَةٍ كَفَتَاهُ)) قَالَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ: فَلَقِيتُ أَبَا مَسْعُودٍ وَهُوَ يَطُوفُ بِالْبَيْتِ فَسَأَلْتُهُ فَحَدَّثَنِيهِ.

4009. हमसे यह़्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे अ़क़ील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उन्हें मह़मूद बिन रबीअ़ ने ख़बर दी कि ह़ज़रत इत्बान बिन

٤٠٠٩– حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ أَخْبَرَنِي مَحْمُودُ بْنُ الرَّبِيعِ أَنَّ عِتْبَانَ بْنَ مَالِكٍ

सालेह ने, उनसे इब्ने शिहाब ने और उनसे उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने कि नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा ह़ज़रत आ़इशा सिद्दीक़ा (रज़ि.) ने बयान किया कि कुछ यहूदी रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास आए और कहा अस्सामु अ़लैकुम (तुम्हें मौत आए) मैं उसका माना समझ गई और मैंने उनका जवाब दिया कि व अलैकुमुस्सामु वल्लअनतु (या'नी तुम्हें मौत आए और ला'नत हो) बयान किया कि उस पर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया ठहरो, ऐ आ़इशा! अल्लाह तआ़ला तमाम मामलात में नर्मी और मुलाइमत को पसंद करता है। मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! क्या आपने सुना नहीं उन्होंने क्या कहा था। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैंने उसका जवाब दे दिया था कि व अ़लैकुम (और तुम्हें भी) (राजेअ़ : 2935)

ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ أَنَّ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا زَوْجَ النَّبِيِّ ﷺ قَالَتْ: دَخَلَ رَهْطٌ مِنَ الْيَهُودِ عَلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ فَقَالُوا: السَّامُ عَلَيْكُمْ قَالَتْ عَائِشَةُ: فَفَهِمْتُهَا فَقُلْتُ: وَعَلَيْكُمُ السَّامُ وَاللَّعْنَةُ، قَالَتْ: فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((مَهْلاً يَا عَائِشَةُ إِنَّ اللهَ يُحِبُّ الرِّفْقَ فِي الأَمْرِ كُلِّهِ)). فَقُلْتُ : يَا رَسُولَ اللهِ أَوَلَمْ تَسْمَعْ مَا قَالُوا؟ قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((قَدْ قُلْتُ وَعَلَيْكُمْ)).

[راجع: ٢٩٣٥]

6025. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुल वह्हाब ने बयान किया, कहा हमसे ह़म्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे ष़ाबित ने और उनसे ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कहा कि एक देहाती ने मस्जिद में पेशाब कर दिया था। स़ह़ाबा किराम उनकी त़रफ़ दौड़े लेकिन रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया उसके पेशाब को मत रोको। फिर आपने पानी का डोल मंगवाया और वो पेशाब की जगह पर बहा दिया गया।

٦٠٢٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ الْوَهَّابِ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ ثَابِتٍ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ أَنَّ أَعْرَابِيًّا بَالَ فِي الْمَسْجِدِ فَقَامُوا إِلَيْهِ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((لاَ تُزْرِمُوهُ)) ثُمَّ دَعَا بِدَلْوٍ مِنْ مَاءٍ فَصُبَّ عَلَيْهِ.

तश्रीह : अख़्लाक़े मुह़म्मदी का एक नमूना इस ह़दीष़ से ही ज़ाहिर है कि देहाती ने मस्जिद के कोने में पेशाब कर दिया मगर आपने उसे रोकने के बजाय उस पर पानी डलवा दिया बाद में बड़ी नर्मी से उसे समझा दिया। (ﷺ)

बाब 36 : एक मुसलमान को दूसरे मुसलमान की मदद करना

٣٦- باب تَعَاوُنِ الْمُؤْمِنِينَ بَعْضِهِمْ بَعْضًا

6026. हमसे मुह़म्मद बिन यूनुस ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे अबू बुर्दा बुरैद बिन अबी बुर्दा ने कहा कि मुझे मेरे दादा अबू बुर्दा ने ख़बर दी, उनसे उनके वालिद अबू मूसा अशअ़री (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया एक मोमिन दूसरे मोमिन के लिये इस त़रह़ है जैसे इमारत कि उसका एक ह़िस्सा दूसरे ह़िस्से को थामे रहता है (गिरने नहीं देता) फिर आपने अपनी उँगलियों को क़ैंची की त़रह कर लिया। (राजेअ़ : 481)

٦٠٢٦- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ أَبِي بُرْدَةَ، بُرَيْدِ بْنِ أَبِي بُرْدَةَ قَالَ: أَخْبَرَنِي جَدِّي أَبُو بُرْدَةَ، عَنْ أَبِيهِ أَبِي مُوسَى عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((الْمُؤْمِنُ لِلْمُؤْمِنِ كَالْبُنْيَانِ، يَشُدُّ بَعْضُهُ بَعْضًا)) ثُمَّ شَبَّكَ بَيْنَ أَصَابِعِهِ. [راجع: ٤٨١]